आपका पाठ्यक्रम

अनुवाद विज्ञान

इकाई-1 अनुवाद की अवधारणा एवं क्षेत्र

1. अनुवाद : परिभाषा, स्वरूप एवं महत्व
2. अनुवाद के प्रकार- शब्दानुवाद, भावानुवाद, आशु अनुवाद एवं द्विभाषी प्रविधि
3. अनुवादक के गुण
4. अच्छे अनुवाद की विशेषताएँ
5. अनुवाद के क्षेत्र
6. रोजगार की सम्भावनाएँ।

इकाई-2 अनुवाद की प्रक्रिया

1. स्त्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा के अर्थान्तरण की प्रक्रिया, अनुदित पाठ का पुनर्गठन और अर्थ सम्प्रेषण की प्रक्रिया
2. अनुवाद एवं समतुल्यता का सिद्धान्त।

इकाई-3 अनुवाद के उपकरण एवं अनुवाद का सामाजिक-सांस्कृतिक सन्दर्भ

1. शब्दकोश
2. थिसॉरस
3. पारिभाषिक कोश
4. विश्वकोश, कम्प्यूटर, इन्टरनेट
5. समाज, संस्कृति एवं अनुवाद के अन्त:सम्बन्ध।

इकाई-4 विभिन्न क्षेत्रों में अनुवाद की समस्याएँ एवं समाधान

1. कार्यालयीन अनुवाद
2. वाणिज्य अनुवाद
3. वैज्ञानिक एवं तकनीकी अनुवाद
4. साहित्यिक अनुवाद एवं तकनीकी अनुवाद में अन्तर
5. जनसंचार माध्यम एवं विज्ञापन का अनुवाद।

इकाई-5 A : अनुवाद का सम्पादन, मूल्यांकन और समीक्षा

1. सम्पादन
2. मूल्यांकन और समीक्षा

B : ट्यूटोरियल

हिन्दी से अंग्रेजी, अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद।
गद्यानुवाद- किसी अनुच्छेद का अनुवाद।
कार्यालयीन वाक्यों एवं पारिभाषिक शब्दावली का अनुवाद।

❑

1 अनुवाद की अवधारणा एवं क्षेत्र

अनुवाद : परिभाषा, स्वरूप एवं महत्व

प्रश्न 1. अनुवाद की परिभाषा एवं स्वरूप पर प्रकाश डालिए।

अथवा

अनुवाद क्या है ? उसका स्वरूप समझाइए।

अथवा

अनुवाद का अर्थ समझाते हुए उसकी परिभाषा एवं स्वरूप लिखिए।

उत्तर–

अनुवाद से आशय

अनुवाद का शाब्दिक अर्थ है किसी के कहने के बाद कहना अथवा किसी कथन का अनुवर्ती कथन– पुनः कथन या पुनरुक्ति। अर्थात् एक भाषा में कही हुई बात को दूसरी भाषा में कहना या बतलाना अनुवाद कहलाता है।

अनुवाद शब्द को अंग्रेजी में ट्रान्सलेशन (Translation) कहा जाता है। अंग्रेजी कोश के अनुसार ट्रान्सलेशन का सीधा अर्थ है– एक भाषा के पाठ को दूसरी भाषा में व्यक्त करना। इस सन्दर्भ में अंग्रेजी के प्रसिद्ध भाषाविद् जे.सी. कैटफर्ड के अनुसार अनुवाद एक भाषा (स्त्रोत भाषा) की मूल पाठ-सामग्री का दूसरी भाषा (लक्ष्य भाषा) में समानार्थक (ईक्विवेलेंट) मूल पाठ सामग्री का स्थानापन्न है।

इस प्रकार अनुवाद में तीन बातों का ध्यान रखना आवश्यक है—

(1) पाठ–सामग्री (2) समतुल्य / समानार्थक (3) पुनर्स्थापना।

अनुवाद की परिभाषाएँ

अनुवाद की प्रक्रिया तो जटिल है ही, उसको परिभाषित करना भी उतना ही कठिन है। कई मनीषियों, भाषाविदों तथा अनुवादकों ने इसे परिभाषित करने की चेष्टा की है। यहाँ कुछ परिभाषाएँ दी जा रही हैं–

डास्टर्स (Dostert) के अनुसार अनुवाद अनुप्रयुक्त भाषा–विज्ञान की वह शाखा है, जिसका घनिष्ठ सम्बन्ध किसी एक सुनिश्चित प्रतीक समूह को दूसरे विन्यासगत प्रतीक समूह में अन्तरित करने की प्रक्रिया अथवा समस्या से होता है। उन्होंने अनुवाद में अर्थ की प्रधानता देते हुए कहा था कि, "अर्थ हमारे विचार में भाषा का गुणधर्म है। किसी भी स्त्रोत भाषा के पाठ का अर्थ अपना होता है और लक्ष्य भाषा के पाठ का अर्थ भी अपना होता है" (Meaning, in our view, is a property of a language. An SL test has an SL meaning, and a TL test has a TL meaning)।

डॉ. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव, "एक भाषा (स्त्रोत भाषा) की पाठ सामग्री में अन्तर्निहित तथ्य का समतुल्यता के सिद्धान्त के आधार पर दूसरी भाषा (लक्ष्य भाषा) में संगठनात्मक रूपान्तरण अथवा सर्जनात्मक पुनर्गठन ही अनुवाद कहा जाता है।"

उक्त परिभाषा में प्रयुक्त 'समतुल्यता' और 'संगठनात्मक रूपान्तरण' को स्पष्ट करते हुए डॉ. श्रीवास्तव ने कहा है कि, "अनुवाद की पूरी प्रक्रिया में कथ्य की समतुल्यता के सिद्धान्त को भाषिक (लक्ष्य भाषा) इकाइयों की समतुल्यता मान लिया गया है और

'संगठनात्मक रूपान्तरण' को हमने 'यान्त्रिक रूपान्तरण' समझ लिया है। हम भूल गए हैं कि अनुवाद की परिशुद्धता को अनुदित पाठ की बोधगम्यता और सम्प्रेषणीयता से काटकर नहीं देखा जा सकता।''

सेपिर (Sapir), ''सेपिर ने माना है कि किसी सभ्यता के प्रतिनिधित्व की दृष्टि से दो भाषाएँ समान नहीं हो सकती हैं। कारण दो सभ्यताएँ जिन समाजों में जीती हैं उनके अपने-अपने संसार हैं। इस प्रकार स्पष्ट है कि अनुवाद में मात्र भाषिक परिवर्तन नहीं होता, प्रत्युत उसमें सभ्यता का रूपान्तरण अपेक्षित है। रूपान्तरण निकटतम ही सम्भव है।

थ्योडोर एच. सेवरी, ''अनुवाद प्राय: उतना ही प्राचीन है, जितना मूल लेखन और उसका इतिहास भी उतना ही भव्य और जटिल है, जितना साहित्य की किसी दूसरी शाखा का है।'' **-आर्ट ऑफ ट्रांसलेशन**

डॉ. एन. ई. विश्वनाथ अय्यर, ''अनुवाद की प्रविधि एक भाषा से दूसरी भाषा में रूपान्तरित करने तक सीमित नहीं है। एक भाषा के रूप के कथ्य को दूसरे रूप में प्रस्तुत करना भी अनुवाद है। छन्द में बताई बात को गद्य में उतारना भी अनुवाद है। ..... अनुवाद की प्रविधि के दौरान भाषिक समन्वय हो जाता है। 'भाषिक समन्वय' शब्द से मेरा मतलब अनुवाद प्रक्रिया में लक्ष्य भाषा में स्त्रोत भाषा के तत्वों के घुल-मिल जाने से है। कुछ तत्वों का घुल-मिल जाना आसानी से पहचाना नहीं जाता। लम्बी अवधि के बाद ही विद्वान अनुशीलन से इसे पहचानते हैं। यह समन्वय भाषा के विकास का सहायक है।''

-अनुवाद-भाषाएँ, समस्याएँ

डॉ. भोलानाथ तिवारी, ''भाषा ध्वन्यात्मक प्रतीकों की व्यवस्था है और अनुवाद है, इन्हीं प्रतीकों का प्रतिस्थापन, अर्थात् एक भाषा के प्रतीकों के स्थान पर दूसरी भाषा के निकटतम (कथनत: और कथ्यत:), समतुल्य और सहज प्रतीकों का प्रयोग। इस प्रकार अनुवाद ''निकटतम, समतुल्य और सहज-प्रतिप्रतीकन' है।'' **-अनुवाद की व्यावहारिक समस्याएँ**

अनुवाद के स्वरूप—उपर्युक्त विवेचन के आधार पर अनुवाद को निम्नलिखित तीन रूपों के अन्तर्गत रखा जा सकता है— (1) शाब्दिक अनुवाद (2) भावानुवाद (3) रूपान्तर।

1. शाब्दिक अनुवाद—इसमें मूल भाषा या स्त्रोत भाषा की शब्द-योजना, वाक्य विन्यास आदि का दूसरी भाषा या लक्ष्य भाषा में लगभग ज्यों-का-त्यों अनुवाद किया जाता है। इसे शाब्दिक अनुवाद कहते हैं।

2. भाषानुवाद—इसमें मूल भाषा या स्रोत भाषा की शब्द योजना, वाक्य विन्यास आदि को दृष्टि में न रखकर शब्दों एवं वाक्यों में निहित मूल भाव पर विशेष ध्यान दिया जाता है और अनुवाद किया जाता है।

3. रुपान्तर—इसमें अनुवादक मूलभाषा या स्त्रोत भाषा के समस्त कथन को दूसरी भाषा या लक्ष्य भाषा में अनुदित करने के लिए उसमें यथेष्ट परिवर्तन कर देता है। इस प्रकार रूपान्तर करते समय अनुवादक की रुचि हावी हो जाती है। ❑

प्रश्न 2. अनुवाद के महत्व और उसकी विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

अथवा

अनुवाद की आवश्यकता पर प्रकाश डालिए।

उत्तर-

अनुवाद का महत्व एवं विशेषता

आज विश्व में अनेक हजार भाषाओं और बोलियों का प्रयोग किया जा रहा है। इन समस्त भाषाओं के मध्य रचनात्मक, विचारात्मक और कार्यात्मक सामंजस्य स्थापित करने के

लिए अनुवाद ही एकमात्र माध्यम है, क्योंकि विश्व की सभी भाषाओं को उनके मूल रूप में जानना संभव नहीं है। ज्ञान के विस्तार के लिए सभी भाषाओं में उपलब्ध ज्ञान को अनुवाद के माध्यम से हम सभी भाषाओं से जुड़ते भी हैं। भाषाओं से जुड़ना विश्व के समस्त भाषा-भाषी मनुष्यों से जुड़ना भी है। अनुवाद का सम्बन्ध भाषा से होता है। भाषा के बिना हम जीवन के विविध कार्यों को सुचारु रूप से सम्पादित नहीं कर सकते। जीवन के हर क्षेत्र में भाषा हमारे साथ चलती है। हम अपनी प्रतिभा के प्रकाशन के लिए भाषा का आश्रय लेते हैं। नई-से-नई सूचना और नए-से-नए ज्ञान को भाषा में व्यक्त किया जाता है।

वैश्वीकरण के कारण, ज्ञान-विज्ञान और तकनीकी के विकास के कारण आज अनुवाद की आवश्यकता पहले से अधिक है। सूचना और संचार का माध्यम भाषा है। इसलिए भी अनुवाद का महत्व निरंतर बढ़ रहा है। अनुवाद अनेकता में एकता स्थापित करने का महत्वपूर्ण साधन हैं। इसके द्वारा भाषायी विविधता को भी एक सूत्र में बाँधा जा सकता है। प्रत्येक भाषा अपने सामाजिक, सांस्कृतिक संदर्भों से जुड़ी होती है। अनुवाद के द्वारा इन संदर्भों को जाना जा सकता है। अनुवाद के द्वारा विभिन्न भाषा-भाषी समुदायों में संवाद और संपर्क किया जा सकता है। भारतीय संस्कृति के सामाजिक स्वरूप के संरक्षण में अनुवाद की भूमिका महत्वपूर्ण हो सकती है। विभिन्न भाषाओं के मध्य होने वाले विवादों को अनुवाद के माध्यम से समाप्त किया जा सकता हैं। विभिन्न भाषाओं में रचे गए साहित्य को अनुवाद के माध्यम से जाना जा सकता है।

केवल सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में ही नहीं, व्यापार—व्यवसाय के क्षेत्र में भी अनुवाद का महत्व है; क्योंकि व्यापार विभिन्न भाषा-भाषी समूहों के बीच होता है। आज अनेक उत्पादों के लेवल और विज्ञापन अनेक भाषाओं में देखने को मिलते हैं और इसका लाभ सभी भाषा-भाषी समाज को मिलता है। इससे व्यापार को स्वत: ही लाभ मिलता है। तकनीकी और औद्योगिक विकास में अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका है। संचार और सूचना तकनीकी के इस युग में अनुवाद का महत्व सर्वोपरि है। सूचना के अधिकार का महत्व दिनों-दिन बढ़ रहा है। ये सूचनाएँ विभिन्न क्षेत्रों से और विभिन्न भाषाओं से सम्बन्धित होती हैं। अत: इन्हें सभी के लिए सुलभ और संप्रेषणीय बनाने के लिए अनुवाद ही एकमात्र सुलभ साधन है। अनुवाद के द्वारा संसार के किसी भी कोने में बैठकर पूरी दुनिया की घटनाओं, कार्यों और योजनाओं की जानकारी रखी जा सकती है।

प्रशासन और शिक्षा के क्षेत्र में अनुवाद निरंतर बढ़ रहा है। आज शासन का अनुवादक कार्य महत्वपूर्ण हो गया है। ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में नई जानकारियों और उपलब्धियों को अनुवाद के माध्यम से जाना जा सकता है। राष्ट्रीय स्तर पर द्विभाषा या त्रिभाषा या फार्मूला इसी तथ्य को प्रमाणित करता है। ❑

अनुवाद के प्रकार

प्रश्न 3. अनुवाद के विभिन्न प्रकारों को संक्षेप में समझाइये।

अथवा

अनुवाद के रूपों को किस प्रकार विभक्त किया जा सकता है?

अथवा

अनुवाद के भेदों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर- अर्थपक्ष के अन्तर्गत अनुवाद के चार मुख्य भेद अथवा प्रकार बताये गए हैं—

(1) शाब्दिक अनुवाद, (2) शब्द-प्रतिशब्द अनुवाद,

(3) भावानुवाद; और (4) छायानुवाद।

1. शाब्दिक अनुवाद—इसमें वाक्य-स्तर पर अनुवाद किया जाता है। यहाँ यथासाध्य मूलपाठ का अनुगमन किया जाता है। इसमें एक भाषा के भाव का दूसरी भाषा में रूपान्तरण करते हुए प्रत्येक शब्द, उपवाक्य, वाक्य आदि के महत्व पर ध्यान दिया जाता है। इसमें किसी शब्द या वाक्य की उपेक्षा नहीं की जाती। यह अनुवाद वस्तुत: तथ्यात्मक और तकनीकी साहित्य में प्रयुक्त होता है। जैसे विज्ञान, विधि, इंजीनियरी आदि। इस प्रकार के साहित्य में हर शब्द और वाक्य का अपना महत्व होता है और उसका एक निश्चित अर्थ होता है। मूल कृति में कुछ हेर-फेर आदि न करने से अनुवाद में प्रामाणिकता आती है।

2. शब्दप्रति-शब्द अनुवाद—अनुवाद के शब्द पर आधारित विभिन्न भेदों में शब्द-प्रतिशब्द अनुवाद केवल सिद्धान्त या संकल्पना के रूप में ही व्यवहृत हैं।

Rama killed Ravana.	I yesterday film saw.
राम ने मारा रावण को।	मैंने कल फिल्म देखी।

ये दोनों वाक्य शब्द-प्रतिशब्द के उदाहरण के रूप में दिए जा सकते हैं। स्पष्ट है कि जब तक अनुवाद में लक्ष्यभाषा का अनुवाद नहीं होगा यह अनुवाद अधूरा रहेगा। विज्ञान आदि विषयों के शोध-प्रबन्धों के विषय में विषय का अच्छा जानकर लक्ष्यभाषा में शब्द-प्रतिशब्द अनुवाद किए जाने पर रोज बातें समझ सकता है। तकनीकी, जर्मन, बिसिनस अंग्रेजी आदि के रूप में थोड़ी-सी विदेशी भाषा सीखने वाले इसी उपाय से अनुवाद कर लेते हैं।

शाब्दिक अनुवाद सबसे अच्छा एवं आदर्श अनुवाद माना गया है। इसमें मूल का कोई शब्द छोड़ने की अनुमति नहीं है। प्राय: विज्ञान के ग्रंथ, विधि के ग्रंथ, संवैधानिक आदेश, प्रशासनिक पत्राचार आदि में शाब्दिक अनुवाद किया जाता है—बाइबिल, वेद आदि धार्मिक ग्रन्थों के अनुवाद में भी शाब्दिक अनुवाद मिलता है।

उदाहरण

प्रशासनिक सामग्री

House Building Advance Rules—1984

The house must be maintained in good repair by the employee at his/her own cost. He/she shall also keep it free from all encumbrances and shall continue to pay all the Municipal and other local rates and taxes regularly until the advance has been repaid to the Company in full.

गृह निर्माण अग्रिम नियमावली—कर्मचारी अपने खर्च पर गृह को अच्छी मरम्मत की दशा में अवश्य बनाए रखेगा। वह उसे सभी प्रकार के ऋणभार से मुक्त भी रखेगा और जब तक अग्रिम कम्पनी को पूरा लौटा नहीं दिया जाता तब तक सभी नगरपालिका और अन्य स्थानीय उपकरों (रेट) और करों का नियमित रूप से भुगतान करता रहेगा।

3. भावानुवाद—भावानुवाद का उदाहरण प्राय: साहित्य के अनुवाद में प्राप्त होता है। भावानुवाद में दिखाई जाने वाली स्वतन्त्रता अनुवादक के अनुसार बदलती है। व्याख्यानुवाद का उदाहरण भी साहित्य में मिलता है। इसमें मूल कृति के भावार्थ को प्रस्तुत करने का प्रयास रहता है। इसे सेन्स फोर सेन्स ट्रान्सलेशन कहा जा सकता है। भावानुवाद कभी अनुच्छेद का, कभी पूरे वाक्य का, कभी शब्द का और कभी पूरे पाठ का होता है। इसमें लक्ष्य भाषा को अपनी शब्द-रचना, वाक्य-विन्यास, मुहावरा आदि की योजना अधिक रहती है। सर्जनात्मक कृतियों के विषय में भावानुवाद ही उचित है। इसमें भाव-संवेदना की अभिव्यक्ति होती है। अनुवादक की अपनी शैली की भी छाप मिलती है।

इस अनुवाद की कमी यह है कि अनुवादक मूल कृति से कुछ आजादी लेकर अपनी इच्छा से लिखता है। अनुवाद में हम अनुवादक का व्यक्तित्व ही अधिक पाते हैं। गद्य में यह अधिक नहीं खटकता। मगर पद्य में भावानुवाद कभी-कभी अनुदित कविता को अनुवादक की अपनी रचना बना देता है। अनुवादक अपनी व्याख्या कर डालता है। यह मूल रचना से कुछ सामग्री लेकर उसके आधार पर अनुवादक की स्वतन्त्र रचना हो जाती है। सामान्य पाठकगण ऐसे अनुवाद से मजा ले सकते हैं।

उदाहरण—उमरखैयाम के रुबाइयात का फिट्जेराल्ड द्वारा अनुवाद अथवा फिट्जेराल्ड के अनुवाद का 'बच्चन' कृत अनुवाद।

4. छायानुवाद—मूल कृति पढ़ने के बाद अनुवादक ने जो समझा या जो अनुभव किया था उसके मन पर जो प्रभाव पड़ा उसके संदर्भ में वह मूल पाठ का लक्ष्य भाषा में जो रूपान्तरण करता है उसे छायानुवाद कहा जाता है। इसमें अनुवादक को पूरी छूट रहती है कि वह मुख्य भाव को लेकर पाठ-रचना करे। छायानुवाद में मूल की छायामात्र होती है। उसके कथ्य का अनुकूलन लक्ष्य भाषा की सामाजिक एवं सांस्कृतिक स्थितियों के अनुसार किया जाता है।

डॉ. भोलानाथ तिवारी कहते हैं—"छायानुवाद ऐसे अनुवाद को कहा जाना चाहिए जो शब्दानुवाद की तरह मूल के शब्दों का अनुसरण न करे, अपितु दोनों दृष्टियों से मुक्त होकर उसकी छाया लेकर चले।"

रूपान्तरण—छायानुवाद की एक विधा को रूपान्तरण (adaptation) कहा जाता है। इस शब्द का अर्थ है रूप को बदलना। इसमें रूपान्तरण कर मूल के पात्रों के नाम, देशकाल या वातावरण आदि में परिवर्तन किये भी जाते हैं और नहीं भी। जैसे— भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने मर्चेन्ट ऑफ वेनिस का अनुवाद 'दुर्लभ बन्धु' अर्थात् 'बंगपुर का महाजन' नाम से किया था। उन्होंने एन्टोनियो को अनंत, बैसानियों को 'बसंत' तथा पोर्शिया तथा 'पुरश्री' नाम दे दिए।

उपर्युक्त विवेचन से अनुवाद के भेद स्पष्ट हो गये हैं। ❑

प्रश्न 4. सारानुवाद किसे कहते हैं?

अथवा

सारानुवाद की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- जैसा कि हम पहले ही कह चुके हैं एक भाषा से दूसरी भाषा में किसी विधा या साहित्य के अंश का रूपान्तरण अनुवाद कहलाता है। उसके अनेक भेद हैं। कभी-कभी ऐसा अवसर आता है जब शब्दशः अनुवाद नहीं हो पाता या ऐसी अवस्था आती है जब किसी वक्ता का जीवित तुरन्त अनुवाद करना होता है। आशुकवि अपनी कल्पना द्वारा तुरन्त रचना करता है। उसी प्रकार आशु अनुवाद होता है वक्ता अपना भाषण देता रहता है एवं दुभाषिया उसका अनुवाद तुरन्त श्रोताओं के सम्मुख करता रहता है। यदि कोई अन्य भाषा भाषी-मान लीजिए-बंगला भाषा भाषी जिसे हिन्दी नहीं आती या अंग्रेज, जर्मन, रूसी व्यक्ति भारत में अपना भाषण देता है तो अनुवादक जनता के सम्मुख उसका अनुवाद करता है। ऐसी अवस्था में शब्दशः अनुवाद नहीं हो पाता। कई बार वह उसका सार अनुवादित कर देता है। इसे सारानुवाद कहते हैं एक अन्य अवस्था में व्यक्ति भावानुवाद या सारानुवाद करता है। अतः भावानुवाद भी सारानुवाद का एक दूसरा रूप है। इस सारानुवाद में मूल भावों की रक्षा होती है। यह एक कठिन कार्य है। कई बार अनेक ऐसे मुहावरे, लोकोक्ति एवं कहावतें सूत्र वाक्य इत्यादि होते हैं जिनका अनुवाद अत्यन्त कठिन हो जाता है। उसका मूल भाव बदल जाता है। उन मुहावरों

इत्यादि की प्रवृत्ति दूसरी भाषा में नहीं होती है। जैसे अंग्रेजी के मुहावरे गोटहेल या थ्रो टु डायस एण्ड केट्स के अनुवाद करने में मूल भाव की रक्षा नहीं होती। हिन्दी में मुहावरा है दिलबाग बाग हो गया अब यदि यह अनुवाद अंग्रेजी में करें कि माई हार्ट बिकेन गार्डन एण्ड गार्डन तो यह एक विसंगपूर्ण स्थिति हो जावेगी। वैसे ही झगड़े की जड़ का अंग्रेजी में अनुवाद है Apple of discord या फूलों की सेज- Bed of roses इत्यादि होते है। इस समय अनुवादक का ज्ञान एवं प्रत्युत्पन्न गति ही काम देती है। अत: सारानुवाद में इन तथ्यों का ज्ञान रखना पड़ता है। अनुवादक को अत्यन्त सजक एवं सावधान रहना पड़ता है। उसके पास इतना अधिक समय नहीं रहता कि सोच समझकर या शब्दकोश देखकर अनुवाद कर सके अत: सारानुवाद में अनेक कठिनाइयाँ उपस्थित हो जाती है।

(भावानुवाद के बारे में हम पहले लिख आये हैं अत: कृपया उसे भी देख ले)

भावानुवाद सारानुवाद का दूसरा रूप है। ऐसी अवस्था में अनुवादक के पास पर्याप्त समय होता है। वह सोच विचारकर शब्दकोष देखकर इस प्रकार का भावानुवाद या सारानुवाद करने में सक्षम होता है अत: उसमें इतनी अधिक कठिनाइयाँ नहीं उत्पन्न होती जितनी तुरन्त अनुवाद में करने में होती है। ❑

प्रश्न 5. दुभाषिया किसे कहते हैं। अच्छे दुभाषिये के गुण बताइये।

उत्तर- सामान्यत: दुभाषिया एवं अनुवादक एक ही होते हैं। दुभाषिये अनुवाद भी करते हैं किन्तु कभी-कभी ऐसी स्थिति हो जाती है। जब व्यक्ति को आशु अनुवाद या तुरन्त अनुवाद करना होता है। ऐसा प्राय: तब होता है जब एक भाषा भाषी दूसरी भाषा भाषियों के सामने व्याख्यान देता है किन्तु उसे दूसरे भाषा भाषियों या श्रोताओं की भाषा का ज्ञान नहीं होता। ऐसी स्थिति में वह अपना व्याख्यान देता है और एक दोनों भाषाओं का ज्ञाता उस भाषण या व्याख्यान का अनुवाद करता चलता है। ऐसे व्यक्ति को दुभाषिया कहते हैं।

एक अन्य दशा और होती है जब कोई विदेशी नेता या व्यक्ति दूसरे देश में जाकर वहाँ किसी कल कारखाने को देखता है वहाँ के लोगों से मिलता है तो दुभाषिया उन लोगों का माध्यम बन कर उसकी भाषा का अनुवाद करता रहता है एवं बातचीत का माध्यम बन जाता है या कोई व्यक्ति शोधार्थी होकर अन्य कार्य से अन्य भाषा भाषियों से वार्तालाप करना चाहता है। किन्तु दूसरी भाषा का ज्ञान न होने से वह असमर्थ होता है। उस समय दुभाषिया उनकी सहायता करता है एवं दोनों व्यक्तियों के वाक्य या कथनों को अनुवाद बोलता हुआ उनकी बातचीत को सम्पन्न करता है।

एक अच्छे अनुवादक एवं दुभाषिये में निम्नलिखित गुण होने चाहिए—

1. एक अच्छे अनुवादक को स्त्रोत-भाषा और लक्ष्य-भाषा दोनों का अच्छा ज्ञान होना चाहिए। उसे स्त्रोत भाषा की प्रकृति और परिवेश तथा उनकी सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से पूर्णत: परिचित होना चाहिए।

2. एक अच्छे अनुवादक की अभिव्यक्ति, सुबोध, प्रांजल, भावपूर्ण और प्रवाहमयी होनी चाहिए।

3. उसमें स्त्रोत भाषा में कथित अभिव्यक्ति को त्यों की त्यों लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत करने की योग्यता, दक्षता एवं प्रतिभा होनी चाहिए। उसे मूल भावों की रक्षा करने में सक्षम होना चाहिए।

4. अच्छे अनुवादक को यह प्रयत्न करना चाहिए कि मूल रचना की शैली सुरक्षित रहे। अनुवाद की भाषा या लक्ष्य भाषा यथासम्भव स्त्रोत भाषा की प्रकृति के अनुरूप होनी चाहिए।

5. उसे स्त्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा दोनों की संरचना का पूर्ण व्यावहारिक ज्ञान होना चाहिए।

6. चूँकि दुभाषिये के पास अधिक सोचने का समय नहीं होता इसलिए उसे प्रत्युपन्नमति का होना चाहिए जो अवसर के अनुकूल अनुवाद कर सके।

7. एक दुभाषिये को बहुत अधिक चौकन्ना एवं सजग होना चाहिए अन्यथा अर्थ का अनर्थ हो सकता है।

8. एक दुभाषिये को ज्ञान बहुत अधिक होना चाहिए ताकि वह कठिन मुहावरों इत्यादि को समझकर उनका अनुवाद कर सके।

9. एक दुभाषिये को स्थिर मति एवं दृढ़ विश्वासी होना चाहिए ताकि वह विकट अवस्था में धैर्य संयमित होकर अपना कार्य कर सके। ❑

अनुवादक के गुण

प्रश्न 6. अनुवादक किसे कहते हैं? एक अच्छे अनुवादक के आवश्यक गुण बतलाइए।

अथवा

अनुवादक के गुणों का वर्णन कीजिए।

अथवा

आदर्श अनुवादक किसे कहते हैं? आदर्श अनुवादक की विशेषताएँ बताइए।

उत्तर-

अनुवादक से आशय

अनुवाद करने वाले को '**अनुवादक**' कहा जाता है। अनुवादक के लिए स्त्रोत भाषा एवं लक्ष्य भाषा का अच्छा ज्ञान होना अनिवार्य है। प्रत्येक भाषा की अपनी संरचना होती है। इन संरचनाओं के प्रयोग के विशेष परिवेश और अपने मुहावरे होते हैं अत: अनुवाद को स्त्रोत भाषा तथा लक्ष्य भाषा से इनकी संरचना, परिवेश एवं मुहावरे के साथ परिचित होना आवश्यक है।

कोई भी अनुवादक किसी पाठ (Text) को पूरी तरह समझे बिना उसका अनुवाद नहीं कर सकता। कोश देखकर एक भाषा के शब्दों के स्थान पर दूसरी भाषा के शब्द रख देना अनुवाद नहीं है। अनुवाद करने में कोश एवं महत्वपूर्ण सहायक उपादान है किन्तु विषय की समझ और चिन्तन की तर्कशक्ति के अभाव में कोश भी सहायक नहीं हो सकता।

वस्तुत: अनुवाद में स्त्रोत भाषा के ऐसे अनेक संदर्भों को भी पहचानने और लक्ष्य भाषा में रूपान्तरित करने की आवश्यकता होती है जो लक्ष्य भाषा में नहीं होते। यह देखा गया है कि कभी-कभी अनुवादक स्त्रोत भाषा के कथन को लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत करते हुए, मूल कथ्य और अनुवाद में समानता लाने के अति उत्साह में ऐसे प्रयोग भी कर देता है जो लक्ष्य भाषा की प्रकृति और सांस्कृतिक परंपरा से मेल नहीं खाते। ऐसे अनुवाद अस्वाभाविक लगते हैं, हास्यास्पद भी प्रतीत होते हैं।

अत: अनुवादक को—(1) स्त्रोत और लक्ष्य भाषा की प्रकृति और परिवेश तथा

(2) उनकी सांस्कृतिक-ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से पूर्णत: परिचित होना चाहिए।

अनुवादक के आवश्यक गुण

एक अच्छे अनुवादक में निम्नलिखित गुण होने चाहिए—

1. एक अच्छे अनुवादक को स्त्रोत-भाषा और लक्ष्य-भाषा दोनों का अच्छा ज्ञान होना चाहिए। उसे स्त्रोत भाषा की प्रकृति और परिवेश तथा उनकी सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से पूर्णत: परिचित होना चाहिए।

2. एक अच्छे अनुवादक की अभिव्यक्ति, सुबोध, प्रांजल, भावपूर्ण और प्रवाहमयी होनी चाहिए।

3. उसमें स्त्रोत भाषा में कथित अभिव्यक्ति को ज्यों की त्यों लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत करने की योग्यता, दक्षता एवं प्रतिभा होनी चाहिए। उसे मूल भावों की रक्षा करने में सक्षम होना चाहिए।

4. अच्छे अनुवादक को यह प्रयत्न करना चाहिए कि मूल रचना की शैली सुरक्षित रहे। अनुवाद की भाषा या लक्ष्य भाषा यथासम्भव स्त्रोत भाषा की प्रकृति के अनुरूप होनी चाहिए।

5. उसे स्त्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा दोनों की संरचना का पूर्ण व्यावहारिक ज्ञान होना चाहिए। ❑

अच्छे अनुवाद की विशेषताएँ

प्रश्न 7. अनुवाद की प्रक्रिया का वर्णन कीजिए।

अथवा

अनुवाद करने की विधि पर प्रकाश डालिए।

अथवा

अच्छे अनुवाद की विशेषताएँ बताइए।

उत्तर- एक अच्छे अनुवादक को निम्नांकित बातें ध्यान में रखनी चाहिए—

1. सर्वप्रथम मूल अवतरण को बार-बार पढ़कर उसमें व्यक्त मूल भाव को अच्छी तरह समझने का प्रयत्न करना चाहिए।

2. इसके विभिन्न शब्दों के अर्थ पर स्पष्ट विचार करना चाहिए।

3. तत्पश्चात् सरल, सुबोध, शुद्ध एवं प्रवाहमयी भाषा में मूल अवतरण का भावनुवाद किया जाना चाहिए।

4. अनुवाद में मूल अवतरण की आत्मा की पूर्ण रक्षा की जानी चाहिए।

5. अनुवाद में अंग्रेजी गद्यांश की हिन्दी में न व्याख्या करनी चाहिए और न ही अपने विचारों में अनुदित अंश के वाक्यों में जोड़ना चाहिए।

6. मुहावरेदार भाषा के प्रयोग से अनुवाद में चमत्कार उत्पन्न हो जाता है।

7. अनुवाद करते समय इस बात का पूरा-पूरा ध्यान रखना चाहिए कि अनुवाद के लिए प्राप्त गद्यांश का कोई अंश छूट न जाए।

8. यह आवश्यक नहीं कि अंग्रेजी के एक वाक्य का अनुवाद हिन्दी के एक ही वाक्य में किया जाए। अनुवाद करते समय उसे दो वाक्यों में भी सरलता, सुन्दरता एवं योग्यतापूर्वक रखा जा सकता है।

9. कभी-कभी गद्यांश के कुछ शब्द समझने में असुविधा एवं कठिनाई महसूस होती है। ऐसी स्थिति में उस वाक्य में उन शब्दों के आसपास जो शब्द प्रयुक्त हों, उनके आधार पर वाक्य या गद्यांश का भावार्थ समझकर अनुवाद किया जा सकता है।

10. अनुवाद करते समय शब्दौचित्य का विशेष ध्यान रखना चाहिए। जहाँ तक सम्भव हो, पारिभाषिक शब्दों या फिर विशेष प्रचलित शब्दों का ही प्रयोग किया जाना चाहिए।

11. अनुवाद करते समय भाषा के व्याकरणसम्मत रूप पर भी विचार कर लेना चाहिए।

12. अनुवाद सदैव लक्ष्य भाषा के वाक्य-विन्यास को ध्यान में रखकर ही किया जाना चाहिए।

13. अनुवाद करने में सांस्कृतिक परम्पराओं का भी ध्यान रखना आवश्यक है। अंग्रेजी भाषा में 'Tulsi was a great poet' वाक्य ठीक है। पर हिन्दी में इसका अनुवाद "तुलसी एक महान कवि था" किया जाना भद्दा लगता है।

14. वाक्य में पदों का अनुक्रम लक्ष्य भाषा के वाक्य की अनुक्रम-व्यवस्था के अनुरूप होना चाहिए। अंग्रेजी भाषा के वाक्य में सर्वप्रथम कर्त्ता, बाद में क्रिया और अन्त में कर्म का प्रयोग होता है, जबकि हिन्दी में सर्वप्रथम कर्त्ता, मध्य में कर्म और अन्त में क्रिया-पद का प्रयोग होता है।

15. अंग्रेजी भाषा में कर्मवाच्य के प्रयोग विशेष रूप से प्रचलित हैं। हिन्दी में कर्त्तवाच्य के प्रयोग अधिक स्वाभाविक लगते हैं। जैसे—"Gandhiji was respected by all his country-men"- उक्त वाक्य अंग्रेजी में बिल्कुल ठीक है पर हिन्दी में इसका अनुवाद "गांधीजी का उनके सभी देशवासी सम्मान करते थे।" ही स्वाभाविक लगता है। ❑

अनुवाद के क्षेत्र

प्रश्न 8. अनुवाद का क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत है ? स्पष्ट कीजिए।

अथवा

अनुवाद के क्षेत्र कौन-कौन से हैं ? समझाइये।

अथवा

"अनुवाद का क्षेत्र राष्ट्रीय ही नहीं, वरन् अन्तर्राष्ट्रीय है।" कथन को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- वर्तमान युग में अनुवाद का क्षेत्र बातचीत अथवा वार्तालाप का है। कहते हैं कि दो अपरिचित व्यक्ति एक साथ घण्टों तक खड़े रहने पर भी एक-दूसरे से बात नहीं करते। यह परिस्थिति तब भी आ सकती है, जब दो भिन्न भाषा-भाषी आपस में मिलते हैं। उनको मिलाने का काम कोई द्विभाषी ही कर सकता है, उदाहरण के लिए कोई आंध्रप्रदेश का डॉक्टर केरल के अस्पताल में काम करता है, तब उसे केरल के मरीजों की भाषा समझनी पड़ती है। अर्थात् उसे उनकी भाषा मलयालम समझनी होती है, अगर वह मलयालम भाषा नहीं जानता, तो किसी दूसरे व्यक्ति को मलयालम का अनुवाद तेलुगु में करना पड़ता है। इस प्रकार अनुवाद का हर क्षेत्र में व्यापक उपयोग है। इसलिए कहते हैं कि 'अनुवाद का क्षेत्र राष्ट्रीय ही नहीं वरन् अन्तर्राष्ट्रीय है।' अनुवाद के प्रमुख क्षेत्रों का वर्णन इस प्रकार है—

1. बातचीत का क्षेत्र—बातचीत में जब हम अपनी मातृभाषा से भिन्न भाषा में बोलते हैं, तब हम स्वयं अनजाने अनुवाद करते रहते हैं। हम पहले मातृभाषा में सोचते हैं, फिर उसे मन में ही अन्य भाषा में अनुदित करते हैं। यही अनुदित रूप हमारे मुँह से निकलता है। यही कारण है कि हम कोई भी अन्य भाषा बोलें, उस पर हमारी मातृभाषा का कुछ-न-कुछ प्रभाव नजर आता है। औसत भारतीय की अंग्रेजी भी इसका अपवाद नहीं है।

2. पत्राचार—पत्राचार का क्षेत्र अनुवाद मांगता है। पत्राचार व्यापार में, कार्यालय में, न्यायालय में सर्वत्र होता है। जहाँ पत्राचार अपने प्रदेश की भाषा में करने से काम चलता है वहाँ अनुवाद की जरूरत नहीं पड़ती, किन्तु एक ही प्रदेश में कई भाषाएँ बोलने वाले पीढ़ियों से रहते हैं। उनके लिए प्रादेशिक भाषा भी परायी रहती है। जैसे—केरल में तमिल-भाषी और कन्नड़-भाषी काफी संख्या में है। उनके लिए केरल की प्रादेशिक भाषा मलयालम का पत्राचार

अनुवाद को आवश्यक बना देता है। जो व्यापारी बड़ी कम्पनियों से माल मंगाते या उन्हें माल बेचते हैं उन्हें उन कम्पनियों से पत्राचार कम्पनी की भाषा में करना पड़ता है।

3. धार्मिक क्षेत्र—धर्म के क्षेत्र में प्रायः सभी देश किसी विशिष्ट भाषा का व्यवहार करते हैं। जैसे—भारत में संस्कृत हिन्दू धर्म की भाषा रही है। बौद्धों के धर्म-ग्रन्थ पालि भाषा में है। ईसाई लैटिन या सिरियक का उपयोग करते हैं, मुसलमान अरबी का। आम लोग इन धर्म-भाषाओं में कुशल नहीं हो सकते। बहुत कम लोग इनके जानकार होते हैं। अतएव, ऐसी धर्म-भाषाओं के पण्डित सामान्य लोगों में प्रचार के लिए ग्रन्थों का अनुवाद करते हैं। इसी प्रकार पुजारी आम लोगों की प्रार्थना आदि का अनुवाद धर्म की भाषा में करते हैं। दोनों तरफ की यह अनुवाद-प्रक्रिया प्रत्येक धर्म के पूजा-स्थलों पर देखी जा सकती है।

4. न्यायालय—न्यायालयों में अनुवाद अनिवार्य हो जाता है। इसके कई कारण हैं। न्यायालय के कर्मचारी, वकील और प्रार्थी लोग अदालत के अंग होते हैं। अदालतों की भाषा प्रायः अंग्रेजी होती है। इनमें मुकदमों के लिए आवश्यक कागजात अक्सर प्रादेशिक भाषा में होते हैं, मगर पैरवी अंग्रेजी में होती है।

5. कार्यालयों में—हमारे देश के अधिकांश कार्यालयों की भाषा अंग्रेजी है। मुश्किल से पंचायत व गाँवों के स्तर पर प्रादेशिक भाषा का व्यवहार किया जाता है। आम लोगों को अपनी अर्जियाँ तक अंग्रेजी में लिखनी पड़ती हैं। यहाँ से अनुवाद की प्रक्रिया शुरू होती है। पुलिस, मजिस्ट्रेट जैसे अधिकारियों के कार्यालयों में अनुवाद का जोर रहता है। देवस्वम, रजिस्ट्रेशन जैसे विभागों में निचले स्तर पर प्रादेशिक भाषा काम देती है और ऊपरी स्तर पर अंग्रेजी। चर्चित विषय प्रान्त का रहता है। इसलिए अनुवाद का प्रसंग बराबर उठता है।

6. शिक्षा का क्षेत्र—शिक्षा का क्षेत्र अनुवाद के बिना आगे नहीं बढ़ पाता। आधुनिक युग में विज्ञान, समाज-विज्ञान, अर्थशास्त्र, गणित आदि बीसियों विषय सीखे और सिखाये जाते हैं। इनके उत्तम ग्रंथ अंग्रेजी ही नहीं, अन्य विदेशी भाषाओं में भी लिखे हुए हैं। उनका अनुवाद किए बिना ज्ञान की वृद्धि नहीं हो पाती। भारतीय भाषाओं को अध्ययन का माध्यम बनाने के बाद इसकी अनिवार्यता बढ़ी है। यह अनुवाद भारत में ही हो, सो बात नहीं। जिन अंग्रेजों या रूसियों को भारतीय साहित्य का ज्ञान पाना है उन्हें भारतीय साहित्य का अनुवाद अंग्रेजी या रूसी में प्राप्त करना पड़ता है।

7. साहित्य—साहित्य अनुवाद के लिए सबसे उर्वर क्षेत्र प्रमाणित हो चुका है। प्रतिभा देश व भाषा की दीवार नहीं मानती, किन्तु अनुवाद के जरिये ही हम अन्य भाषा की प्रतिभाओं को पहचान सकते हैं। प्राचीन भाषाओं को वाङ्मय को आधुनिक युग के पाठक अनुवाद के सहारे ही समझ पाते हैं। हमारे ही देश में कुछ शताब्दियों पहले तक संस्कृत साहित्य खूब पढ़ा जाता था और बहुत लोग संस्कृत जानते थे। अब आधुनिक युग की भाषाओं का जोर है और संस्कृत जानने वाले कम। इसलिए अनुवाद से ही हम संस्कृत की सरसता ग्रहण करते हैं। एक सीमित क्षेत्र की भाषा में लिखे हुए उत्तम साहित्य-ग्रंथ संसार के व्यापक क्षेत्रों की भाषाओं में जब अनुदित होते हैं तब उनका प्रचार व उनके लेखकों का सम्मान बढ़ता है। रवीन्द्रनाथ टैगोर के बंगला छन्द अगर अंग्रेजी में अनुदित करके प्रकाशित न किए जाते तो उन्हें नोबेल पुरस्कार शायद ही मिलता। नोबेल पुरस्कार अब ऐसी भाषाओं की रचनाओं को भी प्राप्त होते हैं जो अत्यन्त सीमित प्रदेश में व्यवहृत होती हैं।

8. अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध—अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध अनुवाद का सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्र है। विभिन्न देशों के प्रतिनिधियों का संवाद मौखिक अनुवादक की सहायता से ही होता है। सारे

प्रमुख देशों में प्रमुख राष्ट्रों के राजदूत रहते हैं और उनके कार्यालय भी होते हैं। राजदूतों को कई भाषाएँ बोलने का अभ्यास कराया जाता है। फिर भी देशों के प्रमुख प्रतिनिधि अपने विचार अपनी ही भाषा में प्रस्तुत करते हैं। उनके अनुवाद की व्यवस्था होती है। जब कई भाषाओं के वक्ता एक सम्मेलन में अपनी-अपनी भाषा में विचार व्यक्त करते हैं तब उनके अनुवाद की व्यवस्था कठिन होती है, तथापि अनुवाद की व्यवस्था यथासंभव की जाती है। इसमें काफी प्रगति भी हुई है। इसके द्वारा देशों में मित्रता बढ़ रही है।

9. संचार माध्यम—संचार के माध्यमों में अनुवाद का प्रयोग अनिवार्य होता है। इनमें मुख्य हैं समाचार-पत्र, रेडियो एवं दूरदर्शन। ये अत्यन्त लोकप्रिय हैं और हर भाषा-प्रदेश में इनका प्रचार बढ़ रहा है। प्रादेशिक भाषाओं के समाचार-पत्र समाचारों के लिए सरकारी सूचना, न्यूज एजेंसियों की दी हुई सामग्री, प्रादेशिक संवाददाताओं की डाक आदि पर निर्भर करते हैं। इनमें प्रादेशिक भाषाओं में सीमित सामग्री ही प्राप्त होती है।

उदाहरण के लिये—अनुवाद के द्वारा रेडियो सामग्री तैयार की जाती है एवं उसका प्रसारण होता है। ❑

रोजगार की सम्भावनाएँ

प्रश्न 9. अनुवाद के क्षेत्र में रोजगार की क्या सम्भावनाएँ हैं? वर्णन कीजिए।

अथवा

अनुवाद के क्षेत्र में रोजगार के अवसरों का वर्णन कीजिए।

उत्तर- अनुवाद के क्षेत्र में रोजगार की सम्भावनाएँ

वर्तमान काल का जनजीवन भूमण्डलीकरण, बाजारवाद; विज्ञान तकनीकी तथा जनसंचार माध्यमों से प्रभावित है। इस युग में व्यक्ति अपने को दूसरे व्यक्ति, संस्था, परिवार, समाज एवं देश से जोड़ने का प्रयास करता रहा है। एक अर्थ में अपने चारों ओर की दुनिया से संपर्कित रहने की प्रवृत्ति मनुष्य का एक नया स्थायी भाव बना है। आज आदान-प्रदान की संस्कृति दिन-ब-दिन बढ़ रही है। आदान-प्रदान संस्कृति के विकास में अनुवाद महज भूमिका निभाता है। इस सन्दर्भ में डॉ. बालेंदुशेखर तिवारी के विचार महत्वपूर्ण है, "संसारभर में प्रयुक्त पाँच हजार से अधिक भाषाओं और बोलियों के बीच वैचारिक, सर्जनात्मक और कार्यात्मक तालमेल स्थापित रखने के लिए अनुवाद ही सर्वाधिक लोकप्रिय एवं उपयोगी माध्यम है।" अनुवाद का सम्बन्ध केवल साहित्य क्षेत्र से ही नहीं रहा है। अनुवाद की कृषि, चिकित्सा, प्रशासन, कला, संस्कृति, रक्षा, फिल्म, पर्यटन, विधि, विज्ञान, प्रौद्योगिकी तकनीकी तथा जनसंचार माध्यम आदि जैसे क्षेत्र में उपयोगिता सिद्ध हुई है। इन क्षेत्रों में अनुवाद के माध्यम से रोजगार की सम्भावनाएँ भी बढ़ी हैं। अनुवाद कार्य सहज कार्य नहीं है। अपितु जो व्यक्ति अनुवाद-प्रक्रिया, अनुवाद के भेद, तत्व साधन और सफल अनुवाद के लिए आवश्यक गुणों की साधना करता है, वह अनुवाद कला के बुते निम्नलिखित क्षेत्रों में अच्छा-खासा रोजगार प्राप्त कर सकता है-

1. साहित्य क्षेत्र—लेखक का साहित्य- संसार पाठकों तक पहुँचाने की भूमिका प्रकाशन संस्था निभाती है, किन्तु एक भाषा की साहित्यिक कृति अपना क्षेत्र लाँघकर विश्वपटल पर तब पहुँचती है, जब वह अन्यान्य भाषा में अनुवादित होती है। इस दृष्टि से इस क्षेत्र में रोजगार की उपलब्धि दृष्टिगोचर होती है। राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय तथा स्थानीय प्रकाशन संस्था तथा लेखक जब किसी एक भाषी लेखक की भावात्मक, रागात्मक, विचारात्मक, कल्पनात्मक

अनुभूति दूसरे भाषियों तक पहुँचाने की आवश्यकता महसूस करते हैं, तब सम्बन्धित किताब का अनुवाद कार्य सम्पन्न करने के लिए प्रकाशन संस्था तथा मूल लेखक स्त्रोत एवं लक्ष्य भाषा के अभ्येता अनुवादक से सम्पर्क कर उसे अच्छा श्रम-मूल्य देकर कार्यपूर्ति करते हैं। हिन्दी भाषा में किए जाने वाले अनुवाद के सन्दर्भ में डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी के विचार दृष्टव्य हैं- "अब हिन्दी भाषा के सहारे भारतवर्ष के सभी प्रदेशों के साहित्य के उत्तम पक्ष का परिचय पा लेना सम्भव होता जा रहा है। बँगला, उड़िया, असमिया, तमिल, तेलुगु, मलयालम, कन्नड़, मराठी, गुजराती, पंजाबी और उर्दू का उत्तम साहित्य प्रचुर मात्रा में अनुवादित हुआ है और हो रहा है।" अतः साहित्य जगत में अनुवाद के माध्यम से रोजी-रोटी की अधिक गुंजाइश है। केवल मातृभाषा और राष्ट्रभाषा का ज्ञान होने वाले पाठक को अपरिचित भाषा की साहित्य-कृति का आनन्द देने का कार्य जब कोई अनुवादक करता है तो उसे सम्मान भी मिलता है और रुपये भी।

2. जनसंचार माध्यम—आज इस सन्दर्भ में दो राय नहीं है कि मुद्रित, इलेक्ट्रॉनिक तथा नव इलेक्ट्रॉनिक जनसंचार माध्यमों की नींव अनुवाद की आवश्यकता लगती है। जनसंचार माध्यमों में से समाचार पत्र, आकाशवाणी, दूरदर्शन, इन्टरनेट तथा ई-मेल तथा टेलीफोन सर्वाधिक लोकप्रिय एवं महत्वपूर्ण संचार माध्यम है। इस क्षेत्र में देश, विदेश की एजेन्सियों से मिलते समाचारों का सटीक और फौरन अनुवाद करने की क्षमता रखने वाले तथा अनुवादित सामग्री का पुनर्निरीक्षण तथा मूल्यांकन करने में प्रवीण अनुवादकों को अच्छा-खासा वेतन देकर नौकरी मिलती है। इस सन्दर्भ में डॉ. अम्बादास देशमुख की टिप्पणी महत्वपूर्ण है- "जनसंचार माध्यमों के विविध कार्यकलापों को सम्पन्न करने के लिए मौलिक लेखन ही नहीं करना पड़ता है। कभी-कभी कुछ कार्यों के लिए अनुवाद कार्य भी करना पड़ता है।" इस क्षेत्र में कम समय में समाचार पत्र एवं पत्रिकाओं के लिए अनुवाद करने वाले क्षमतावान अनुवादक-पत्रकार को मुद्रित माध्यम में रोजगार एवं सम्मान भी मिलता है। यथाशीघ्र अनुवाद करने की कला अवगत होने वाले अनुवादकों को आकाशवाणी तथा दूरदर्शन संचार माध्यम क्षेत्र में रोजगार मिलता है। विशेष करके समाचार सामग्री, लाइव्ड समारोह का स्थानीय एवं राष्ट्रभाषा में मौलिक तथा लिखित अनुवाद करने वाले अनुवादक को प्रधानता से नियुक्ति मिलती है।

3. वाणिज्य क्षेत्र—भूमण्डलीकरण के युग में हर देश तथा निजी उद्योगपति एवं व्यावसायिक अपना वाणिज्य क्षेत्र विस्तारित करना चाहता है। अपने को अन्य बाजार में स्थापित करने के लिए सम्बन्धित वाणिज्यिक संस्था स्थानीय भाषा में संवाद स्थापित करने को मान्यता देती है। अर्थात् यह कार्य अनुवाद के बिना सम्भव नहीं होता। वाणिज्यिक क्षेत्र में मुख्यतः व्यवसाय, उद्योग-धन्धे, बैंक, विज्ञापन, आयकर, बीमा, केंद्रीय उत्पाद तथा सीमा शुल्क आदि क्षेत्र आते हैं। इन क्षेत्रों को व्यवसाय वृद्धि के लिए जनभाषा का प्रयोग उपयोगी सिद्ध लगता है। राष्ट्रीयकृत बैंक, आयकर विभाग में अनुवाद की जिम्मेदारी विशेष अधिकारी को दी जाती है। निजी व्यावसायिक तथा उद्योगपति अपने देश की राष्ट्रभाषा तथा राजभाषा में अनुवाद करने वालों को रोजगार देते हैं। निजी वाणिज्यिक संस्था स्वतंत्र रूप से घर बैठकर स्वतंत्र व्यवसाय के रूप में अनुवाद कार्य करने वाले अनुवादक को पृष्ठों के आधार पर रुपये देकर अनुवाद करवाते हैं।

4. शिक्षा क्षेत्र—शिक्षा क्षेत्र का विकास अनुवाद के बिना असम्भव है। छात्रों को राष्ट्रीय एवं वैश्विक ज्ञान से जोड़ने का प्रभावी माध्यम अनुवाद है। इस सन्दर्भ में डॉ. अर्जुन चव्हाण जी के विचार महत्वपूर्ण है- "अनुवाद प्रधानतः ज्ञानार्जन तथा विज्ञानार्जन का मुख्य साधन है।

अनुभूति दूसरे भाषियों तक पहुँचाने की आवश्यकता महसूस करते हैं, तब सम्बन्धित किताब का अनुवाद कार्य सम्पन्न करने के लिए प्रकाशन संस्था तथा मूल लेखक स्त्रोत एवं लक्ष्य भाषा के अध्येता अनुवादक से सम्पर्क कर उसे अच्छा श्रम-मूल्य देकर कार्यपूर्ति करते हैं। हिन्दी भाषा में किए जाने वाले अनुवाद के सन्दर्भ में डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी के विचार दृष्टव्य हैं- "अब हिन्दी भाषा के सहारे भारतवर्ष के सभी प्रदेशों के साहित्य के उत्तम पक्ष का परिचय पा लेना सम्भव होता जा रहा है। बँगला, उड़िया, असमिया, तमिल, तेलुगु, मलयालम, कन्नड़, मराठी, गुजराती, पंजाबी और उर्दू का उत्तम साहित्य प्रचुर मात्रा में अनुवादित हुआ है और हो रहा है।" अत: साहित्य जगत में अनुवाद के माध्यम से रोजी-रोटी की अधिक गुंजाइश है। केवल मातृभाषा और राष्ट्रभाषा का ज्ञान होने वाले पाठक को अपरिचित भाषा की साहित्य-कृति का आनन्द देने का कार्य जब कोई अनुवादक करता है तो उसे सम्मान भी मिलता है और रुपये भी।

2. जनसंचार माध्यम—आज इस सन्दर्भ में दो राय नहीं है कि मुद्रित, इलेक्ट्रॉनिक तथा नव इलेक्ट्रॉनिक जनसंचार माध्यमों की नींव अनुवाद की आवश्यकता लगती है। जनसंचार माध्यमों में से समाचार पत्र, आकाशवाणी, दूरदर्शन, इन्टरनेट तथा ई-मेल तथा टेलीफोन सर्वाधिक लोकप्रिय एवं महत्वपूर्ण संचार माध्यम है। इस क्षेत्र में देश, विदेश की एजेन्सियों से मिलते समाचारों का सटीक और फौरन अनुवाद करने की क्षमता रखने वाले तथा अनुवादित सामग्री का पुनर्निरीक्षण तथा मूल्यांकन करने में प्रवीण अनुवादकों को अच्छा-खासा वेतन देकर नौकरी मिलती है। इस सन्दर्भ में डॉ. अम्बादास देशमुख की टिप्पणी महत्वपूर्ण है- "जनसंचार माध्यमों के विविध कार्यकलापों को सम्पन्न करने के लिए मौलिक लेखन ही नहीं करना पड़ता है। कभी-कभी कुछ कार्यों के लिए अनुवाद कार्य भी करना पड़ता है।" इस क्षेत्र में कम समय में समाचार पत्र एवं पत्रिकाओं के लिए अनुवाद करने वाले क्षमतावान अनुवादक-पत्रकार को मुद्रित माध्यम में रोजगार एवं सम्मान भी मिलता है। यथाशीघ्र अनुवाद करने की कला अवगत होने वाले अनुवादकों को आकाशवाणी तथा दूरदर्शन संचार माध्यम क्षेत्र में रोजगार मिलता है। विशेष करके समाचार सामग्री, लाइव्ड समारोह का स्थानीय एवं राष्ट्रभाषा में मौलिक तथा लिखित अनुवाद करने वाले अनुवादक को प्रधानता से नियुक्ति मिलती है।

3. वाणिज्य क्षेत्र—भूमण्डलीकरण के युग में हर देश तथा निजी उद्योगपति एवं व्यावसायिक अपना वाणिज्य क्षेत्र विस्तारित करना चाहता है। अपने को अन्य बाजार में स्थापित करने के लिए सम्बन्धित वाणिज्यिक संस्था स्थानीय भाषा में संवाद स्थापित करने को मान्यता देती है। अर्थात् यह कार्य अनुवाद के बिना सम्भव नहीं होता। वाणिज्यिक क्षेत्र में मुख्यत: व्यवसाय, उद्योग-धन्धे, बैंक, विज्ञापन, आयकर, बीमा, केंद्रीय उत्पाद तथा सीमा शुल्क आदि क्षेत्र आते हैं। इन क्षेत्रों को व्यवसाय वृद्धि के लिए जनभाषा का प्रयोग उपयोगी सिद्ध लगता है। राष्ट्रीयकृत बैंक, आयकर विभाग में अनुवाद की जिम्मेदारी विशेष अधिकारी को दी जाती है। निजी व्यावसायिक तथा उद्योगपति अपने देश की राष्ट्रभाषा तथा राजभाषा में अनुवाद करने वालों को रोजगार देते हैं। निजी वाणिज्यिक संस्था स्वतंत्र रूप से घर बैठकर स्वतंत्र व्यवसाय के रूप में अनुवाद कार्य करने वाले अनुवादक को पृष्ठों के आधार पर रुपये देकर अनुवाद करवाते हैं।

4. शिक्षा क्षेत्र—शिक्षा क्षेत्र का विकास अनुवाद के बिना असम्भव है। छात्रों को राष्ट्रीय एवं वैश्विक ज्ञान से जोड़ने का प्रभावी माध्यम अनुवाद है। इस सन्दर्भ में डॉ. अर्जुन चव्हाण जी के विचार महत्वपूर्ण है- "अनुवाद प्रधानत: ज्ञानार्जन तथा विज्ञानार्जन का मुख्य साधन है।

सभी प्रकार की देश-विदेश की ज्ञानात्मक सामग्री हमें अनुवाद के कारण ही उपलब्ध हो सकती है।'' वाणिज्य, विज्ञान, तकनीकी शाखा का शिक्षा माध्यम अधिकतर अंग्रेजी है। इस शाखा के सन्दर्भ-ग्रन्थ छात्र की मातृभाषा में या राष्ट्रभाषा में अनुवाद के जरिए उपलब्ध होते हैं तो ज्ञानार्जन तथा विज्ञानार्जन की प्रक्रिया आसान हो जाती है। इस दृष्टि से शिक्षा जगत में अनुवादकों की आवश्यकता है। शिक्षा क्षेत्र का अभिन्न अंग अनुसन्धान है। अनुसन्धान में आधार ग्रंथ एवं सामग्री, सन्दर्भ-ग्रंथ; विद्वतजनों से परामर्श प्रश्नावली जैसी इकाई महत्वपूर्ण होती है। भिन्न भाषी क्षेत्र से सम्बन्धित अनुसंधान में अनुवादित सामग्री तथा दुभाषिया के सिवा अनुसन्धान कार्य सम्भव नहीं है। वर्तमान काल में Digital Classroom अर्थात् दृकश्राव्य-ज्ञानकक्षा की परिकल्पना विस्तृत हो रही है। इसके माध्यम से देश-विदेश के विषयगत छात्रों को सम्बोधित करते हैं तथा पढ़ाते हैं। ज्ञानार्जन की इस आधुनिक पद्धति में दुभाषिया तथा अनुवादक की उपस्थिति पठन-पाठन एवं रसग्रहण की दृष्टि से महत्वपूर्ण समझी जाती है।

5. फिल्म क्षेत्र—फिल्म-उद्योग जगत एक ऐसा क्षेत्र है, जो अनुवादक की सहायता से भौगोलिक सीमाएँ लाँघकर करोड़ों रुपयों का व्यवसाय करने की क्षमता रखता है। इस कारण फिल्म क्षेत्र बहुभाषी एवं बहुज्ञाता अनुवादक के लिए उर्वर भूमि सिद्ध हुआ है और हो रहा है। फिल्म उद्योग में स्थानीय, राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय मंच से जुड़कर नया तंत्रज्ञान, नया बाजार एवं नई कथाओं की तलाश अनुवाद के माध्यम से पूरी की जाती है। देश-विदेश की चर्चित फिल्मों एवं धारावाहिकों की डबिंग एवं रिमेक करने के लिए, अभिनेता एवं अभिनेत्रियों को संवाद समझाने के लिए नया तंत्रज्ञान निर्देशक एवं निर्माता तक पहुँचाने के लिए अनुवादक की सहायता ली जाती है।

6. कृषि क्षेत्र—कृषि प्रधान देश हरसम्भव कृषि की उपज लगाने की कोशिश करता है। उसके लिए किसानों को आधुनिक कृषि सम्बन्धी जानकारी तथा साधन देकर उन सुयशकर्ता किसानों से प्रत्यक्ष साक्षात्कार कराके तथा विभिन्न देशों की यात्रा करायी जाती है, किन्तु दिक्कत यह है कि अधिकतर किसान क्षेत्रीय बोली का प्रयोग करते हैं और उन्हें राष्ट्रीय एवं विश्वभाषा अंग्रेजी का ज्ञान नहीं होता है। ऐसे वक्त किसानों की दृष्टि से उपयुक्त जानकारी कृषकों तक पहुँचाने के लिए अनुवादक की आवश्यकता होती है। इस कारण कृषि जगत में अंग्रेजी किताबों का अनुवाद करने के लिए तथा सरकारी योजनाओं की जानकारी स्थानीय भाषा में देने के सम्बन्ध में रोजगार के अवसर परिलक्षित होते हैं।

7. पर्यटन क्षेत्र—यायावरी प्रवृत्ति मनुष्य का स्वभाव है। इस स्वभाव का लाभ उठाकर विश्व के अनेक देशों ने अपने देश के प्राकृतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, ऐतिहासिक तथा राजनीतिक स्थानों का विकास कर पर्यटन व्यवसाय को बढ़ावा दिया है। ऐसे स्थानों पर विश्वभर के यात्री आते हैं तो स्थानीय लोगों को रोजगार के विभिन्न अवसर खुल जाते हैं। गाईड व्यवसाय उसमें से एक है। सम्बन्धित पर्यटन स्थान की स्थानीय भाषा और अंग्रेजी भाषा का ज्ञान ग्रहण किये गाईड स्थानीय इतिहास, भूगोल, संस्कृति, महत्व एवं प्रवृत्तियाँ बताकर देशी-विदेशी पर्यटकों की जिज्ञासा तृप्ति करते हैं और अच्छी आमदनी प्राप्त करते हैं।

8. सरकारी कार्यालय—किसी भी बहुभाषी देश में सरकारी कार्यालय में अनुवाद की अत्यधिक आवश्यकता होती है। किसी भी देश का कारोबार उस देश की राजभाषा में चलता है, पर उस देश के सभी नागरिक राजभाषा के ज्ञाता नहीं होते। अत: देश के सुचारू परिचालन के लिए सम्बन्धित देश की राजभाषा में प्रकाशित सरकारी पत्र, अधिसूचना, कार्यालय आदेश, परिपत्र, राजपत्र, अनुस्मारक, सरकारी योजना, जनहित में जारी आदेश तथा राष्ट्रगणों के

भाषण स्थानीय जनभाषा में मौखिक एवं लिखित रूप में अनुवादित करने की आवश्यकता होती है। यह कार्य करने के लिए अनुवादक की जरूरत होती है।

9. राजनीतिक क्षेत्र—प्रान्तीय राजनेतागण जब अपने आपको राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति से जोड़ना चाहते हैं तो उनका कार्य दुभाषिया के बिना सम्भव नहीं होता है। ऐसे राजनेतागण मौखिक अनुवाद में प्रवीण दुभाषिया से अपना कार्य चलाते हैं। इस दृष्टि से अनुवादक को रोजगार उपलब्ध होता है। भारत जैसे बहुभाषी राष्ट्र के अनेक नेतागण अच्छी-खासी हिन्दी एवं अंग्रेजी नहीं बोल सकते और नहीं समझ पाते हैं, किन्तु इन भाषाओं में अन्य नेताओं ने किए भाषण, बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के प्रतिनिधियों के विचार तथा देश-विदेश के नागरिकों ने स्थानीय बोली में उपस्थित किए प्रश्न समझने के लिए निजी सहायक सचिव की नियुक्ति करते हैं। इस पद पर नियुक्ति करते समय सम्बन्धित व्यक्ति का बहुभाषा ज्ञान एवं अनुवाद करने की क्षमता तथा राजनीतिक एवं सामाजिक दृष्टिकोण देखा जाता है।

निष्कर्ष—अनुवाद का क्षेत्र व्यापक है। विभिन्न क्षेत्रों में अनुवाद के माध्यम से रोजगार के अवसर भी अधिक हैं, जो व्यक्ति अनुवाद प्रक्रिया, अनुवाद के भेद, तत्व-साधन और सफल अनुवादक के लिए आवश्यक गुणों की साधना करता है तथा संगणक साक्षर है, वह अनुवाद कला के बुते अच्छी-खासी नौकरी एवं स्वतंत्र रूप से व्यवसाय कर सकता है। साहित्य, फिल्म उद्योग, जनसंचार माध्यम, राजनीतिक शिक्षा, पर्यटन, वाणिज्य एवं कृषि क्षेत्र तथा सरकारी कार्यालय बहुभाषी एवं बहुज्ञाता अनुवादक के लिए उर्वर भूमि है। शिक्षा क्षेत्र में अनुसन्धान, पठन-पाठन, पाठ्यक्रम निर्मिति, दृकश्राव्य- ज्ञानकक्षा तथा विभिन्न विषयों की सी.डी. बनाने में अनुवादक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। ❑

2 अनुवाद की प्रक्रिया

प्रश्न 10. अनुवाद की प्रक्रिया प्रविधि की विस्तृत विवेचना कीजिए।

अथवा

(अ) अनुवाद प्रक्रिया का नाइडा द्वारा प्रस्तावित प्रारूप बताइए।

(ब) अनुवाद प्रक्रिया का न्यूमार्क द्वारा प्रस्तावित प्रारूप समझाइए।

उत्तर- अनुवाद या अनुदित कृति पर विचार करने की दो दृष्टियाँ हैं, पाठपरक दृष्टि और प्रक्रियापरक दृष्टि।

1. पाठपरक दृष्टि—पाठपरक दृष्टि के केन्द्र में मूलरचना और अनुदित कृति के बीच पाए जाने वाले सम्बन्धों की प्रकृति रहती है। इसके आधार पर हम यह देखना चाहते हैं कि अपने संदेश, बनावट और बुनावट में अनुदित कृति, मूल रचना के कितने निकट या समतुल्य है। इस सन्दर्भ में जो भी चर्चा सम्भव है, उसका आधार और सीमा पाठ के रूप में मूल रचना और अनुदित कृति ही बनती है। इस दृष्टि के आधार पर हम ऐसे प्रश्नों का उत्तर पा सकते हैं कि अनुवाद क्या है? अनुवाद कैसे बन पड़ा है? अनुदित पाठ, मूल रचना के कितने निकट या कितनी दूर है? मूल रचना के सन्देश को किस सीमा तक अनुदित कृति संप्रेषित करने में समर्थ है? या फिर अपनी संरचनात्मक बनावट या शैलीगत बुनावट में अनुवाद मूल रचना के शिल्प विधान के कितने अनुरूप है?

स्पष्ट है, पाठपरक दृष्टि अनुवाद या अनुदित कृति को पहले एक बनी-बनाई वस्तु के रूप में स्वीकार करती है और फिर उस पर चर्चा करती है। इस दृष्टि से अनुवाद पर बात करने वालों की आँख के आगे से वे सभी प्रसंग ओझल रहते हैं, जिसका सामना अनुवाद करते समय एक अनुवादक को करना पड़ता है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि अनुवाद भाषा-व्यापार की एक सर्जनात्मक प्रक्रिया भी है। यह प्रक्रिया मूल रचना पर अनुवाद की भावात्मक प्रतिक्रिया से प्रारम्भ होकर अनुदित पाठ के रचना-विधान तक फैली होती है। यह कहा जा सकता है कि अनुवाद भाषा-व्यापार की एक संश्लिष्ट प्रक्रिया भी है और इस प्रक्रिया का परिणाम भी। अनुवाद पर विचार करने वाली प्रक्रियापरक दृष्टि अनुदित कृति (पाठ) को मात्र मूल रचना में निहित सन्देश और उसकी बनावट तथा बुनावट के सन्दर्भ के आधार पर नहीं देखना चाहती, बल्कि अनुवाद को उन प्रसंगों के परिप्रेक्ष्य में भी देखना चाहती है, जिसका सामना अनुवादक को मूल रचना को समझने, इसके अर्थ को दूसरी भाषा में बाँधने तथा अनुदित कृति के रूप में सममूल्य पाठ के रचने के दौरान करना पड़ता है।

2. प्रक्रियापरक दृष्टि—प्रक्रियापरक दृष्टि अनुवाद (अनुदित कृति) को मूल रचना के सममूल्य एक स्वायत्त पाठ के रूप में भी देखती है और उसे उस प्रक्रिया के परिणाम के रूप में भी ग्रहण करती है, जो दो पाठों (मूल और अनुदित) को सममूल्य और समतुल्य बनाती है। दूसरी तरफ वह अनुदित पाठ की अपनी विशिष्टता और सीमा के कारणों पर भी प्रकाश डालती है। इस दृष्टि के आधार पर हम ऐसे प्रश्नों का भी उत्तर पा सकते हैं- अनुवाद मूल रचना से भिन्न है तो क्यों? इस तरह मूल रचना और अनुदित पाठ की भिन्नता का यह केवल आधार ही नहीं प्रस्तुत करती, वरन् उसकी व्याख्या भी करती है। वह उन प्रसंगों का निर्धारण भी करती है, जो मूल पाठ और अनुदित पाठ/कृति में अन्तर का आधार पैदा करता है।

वह उन भिन्न भूमिकाओं के सन्दर्भ में अनुदित कृति को देखती है, जिसका निर्वाह अनुवाद करते समय एक अनुवादक को करना पड़ता है। यही कारण है कि यह अनुवाद प्रक्रिया दो दृष्टियों से अत्यन्त महत्वपूर्ण और प्रासंगिक हो जाती है। एक तरफ अनुवाद प्रशिक्षण में इसका महत्व सहज-सिद्ध है, क्योंकि वह अनुवादक को उसकी विभिन्न भूमिकाओं के प्रति सजग और समर्थ बनाने में सहायक होती है। दूसरी तरफ इसका उपयोग मशीनी अनुवाद में सार्थक ढंग से किया जाना सम्भव है, क्योंकि वह अनुवाद व्यापार के विभिन्न चरणों की ओर न केवल संकेत देती है, बल्कि उन चरणों में पाए जाने वाले विकल्पों को भी निर्धारित करने में सहायक होती है।

अनुवाद का व्यापार-क्षेत्र—किसी कही हुई बात को फिर से कहना अनुवाद है। दूसरे शब्दों में किसी एक भाषा में पहले से ही रचित कृति (पाठ) के सन्देश को किसी दूसरी भाषा में सममूल्य रचना (पाठ) के रूप में व्यक्त करना अनुवाद है। स्पष्ट है कि अनुवाद दो भाषाओं के सम्प्रेषण व्यापार की अपेक्षा रखता है। पहली भाषा का सम्बन्ध मूल रचना से है, जिसे अनुवाद की तकनीकी शब्दावली में स्त्रोत-भाषा कहा जाता है। दूसरी भाषा का सम्बन्ध उस भाषा से है, जिसमें अनुवाद किया जाना है। इसे लक्ष्य भाषा की संज्ञा दी जाती है।

दो भाषाओं के सम्प्रेषण व्यापार से सम्बद्ध होने के कारण अनुवाद व्यापार में हमें दो प्रकार के पाठकों का सामना करना पड़ता है। पहला पाठ, स्त्रोत भाषा में रचित कृति के रूप में अनुवादक को पहले से ही उपलब्ध होता है। इस मूल कृति का रचयिता (लेखक) कोई अन्य होता है और लेखन के समय इसका पाठक समुदाय भी कोई दूसरा होता है। अनुवादक का मूल कृति के रचयिता से परिचय हो भी सकता है और नहीं भी। अनुवादक सबसे पहले

पाठक के रूप में इस रचना से टकराता है। उसका पहला दायित्व पाठक के रूप में मूल कृति में अन्तर्निहित सन्देश को समझना होता है।

अनुवाद सन्देश का भाषान्तर होता है। स्त्रोत-भाषा के पाठ में अन्तर्निहित सन्देश को समझने का काम तो उस भाषा का सामान्य पाठक भी करता है। पर अनुवादक को द्विभाषिक की भूमिका का निर्वाह भी करना पड़ता है। उसे इस सन्देश को लक्ष्य भाषा में बाँधना पड़ता है। यहाँ ध्यान देने की आवश्यकता है कि अपने अस्तित्व के एक धरातल पर सन्देश भाषा-तटस्थ होता है तो एक-दूसरे धरातल पर वह भाषा-विशिष्ट। उदाहरण के लिए अंग्रेजी की अभिव्यक्ति Good morning को ही लें। अपने अस्तित्व के एक धरातल पर यह भाषा-तटस्थ है, क्योंकि हम कह सकते हैं कि इसके सन्देश का सम्बन्ध अभिवादन-व्यवस्था से है। जब दो व्यक्ति आपस में मिलते हैं, तब अपनी बात या आचरण का प्रारम्भ अभिवादन के साथ शुरू करते हैं। प्रत्येक समाज की अपनी एक अभिवादन-व्यवस्था होती है, जिसे वह अपने आचरण की किसी विशिष्ट मुद्रा या भाषा की विशिष्ट अभिव्यक्ति द्वारा व्यक्त करता है। Good morning को अभिवादन की अभिव्यक्ति समझना सन्देश के प्रयोजन या प्रकार्य को समझना है, जो भाषा से बँधकर भी भाषा की विशिष्ट अभिव्यक्ति से मुक्त है।

अंग्रेजी भाषा में Good morning को अभिवादन की अभिव्यक्ति के रूप में ग्रहण तो किया जाता है, पर प्रयोग के सन्दर्भ में इसका व्यवहार प्रातःकाल ही सम्भव है। इस भाषा में यह अभिव्यक्ति समय-सापेक्ष है, इसलिए वहाँ Good morning के साथ-साथ Good after-noon, Good evening, Good night का प्रयोग सम्भव है। यह अंग्रेजी भाषा या समाज का अपना वैशिष्ट्य है। हिन्दी भाषा या समाज के संस्कार में अभिवादन-व्यवस्था का सम्बन्ध समय के साथ नहीं होता। अतः इन सभी सन्दर्भों में उसका समानान्तर प्रयोग "नमस्ते" ही होगा। सुबह, दोपहर, शाम या रात में किए जाने वाले अभिवादन में सर्वदा "नमस्ते" का प्रयोग ही सम्भव है।

हिन्दी भाषा या उसके समाज की अभिवादन व्यवस्था की अपनी विशिष्टता है। इसमें अभिव्यक्तियाँ समय के सन्दर्भ में नहीं बदलतीं पर वे सामाजिक स्तर-भेद के साथ अपने प्रयोग में अवश्य बदल जाती हैं। हम बराबर वालों को "नमस्ते" या "राम-राम" कहते हैं तो बड़ों के अभिवादन के लिए "प्रणाम" या "पाँव-लागे" का व्यवहार करते हैं। इस दूसरी स्थिति में बड़ा, छोटों को अभिवादन के सन्दर्भ में आशीर्वाद देते हुए "खुश रहो" या "चिरंजीव भव" कहता है। ये तथ्य इस बात की ओर संकेत देते हैं कि प्रत्येक भाषा और उसके समाज की अभिव्यक्ति-रूढ़ियाँ सन्देश को विशिष्ट बनाती है। सन्देश के भाषान्तरण के समय अनुवादक को उस द्विभाषिक की क्षमता का परिचय देना पड़ता है, जो स्त्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की न केवल अभिव्यक्ति-रूढ़ियों और शैली-संस्कार की भिन्नता का उसे पता बताए, बल्कि यह भी सूचित करे कि अभिव्यक्ति-शैली की भिन्नता के बावजूद किस प्रकार भाषान्तरित सन्देश समान स्थिति में समान प्रकार्य सम्पादित करते हैं।

अनुवादक लक्ष्य भाषा में पाठ का रचयिता (लेखक) भी होता है। वह न केवल मूलकृति के सन्देश को समझता है और उसे भाषान्तरित करता है, बल्कि लक्ष्य भाषा में पाठ के रूप में उसे प्रस्तुत भी करता है। लेखक के रूप में अनुवादक को कई प्रकार के दबाव का सामना करना पड़ता है। उसे एक तरफ मूल कृति में निहित सन्देश को लक्ष्य भाषा की अभिव्यक्ति-रूढ़ियों के माध्यम से व्यक्त करना पड़ता है, दूसरी तरफ उसे अनुदित पाठ का इस प्रकार का निर्माण करना पड़ता है, जिससे वह (अनुदित पाठ) मूल पाठ के समतुल्य बन सके और साथ ही उसके

अपने पाठकों के लिए बोधगम्य और सम्प्रेष्य हो सके। हर अनुवाद का अपना पाठक-वर्ग होता है, अत: लेखक के रूप में अनुवादक को पाठ के सन्देश के प्रति ईमानदारी के साथ-साथ अपने पाठक को भी अनुवाद के प्रति आश्वस्त करते चलना पड़ता है।

अनुवाद के इस व्यापार को निम्नलिखित आरेख द्वारा दिखलाना सम्भव है-

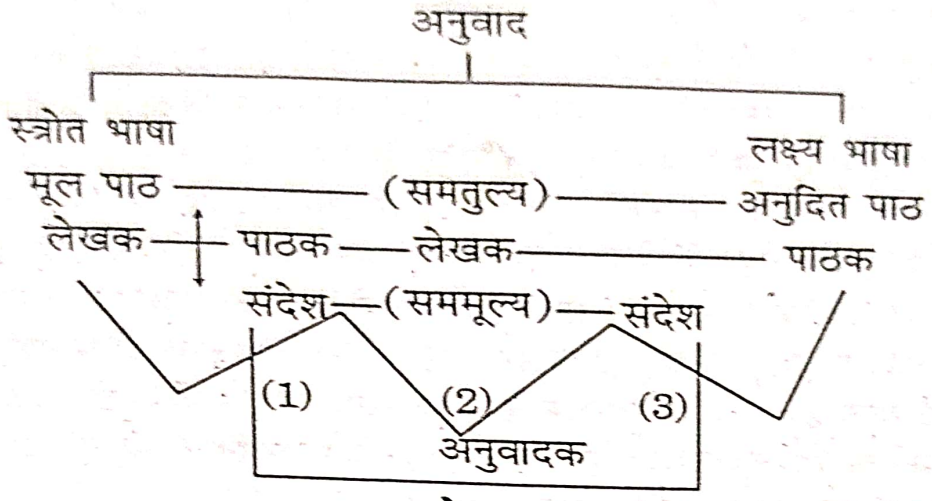

आरेख-1

ऊपर के आरेख (1) से स्पष्ट है कि दो भाषाओं के सम्प्रेषण-व्यापार के सन्दर्भ में अनुवादक को तीन प्रकार की विशिष्ट भूमिकाओं का निर्वाह करना पड़ता है- 1. मूल पाठ के पाठक की भूमिका, 2. (मूलपाठ के) सन्देश को (अनुदित पाठ) में भाषान्तरित करने वाले द्विभाषिक की भूमिका, और (3) अनुदित पाठ के रचयिता की भूमिका।

अनुवाद प्रक्रिया—विभिन्न प्रारूप—अनुवाद प्रक्रिया पर जिन विद्वानों ने गम्भीरतापूर्वक विचार किया है, उनमें नाइडा और न्यूमार्क के विचार भी अधिक चर्चित है। यहाँ संक्षेप में इन दोनों विद्वानों द्वारा प्रस्तावित प्रारूप पर प्रकाश डालना अनुचित न होगा।

नाइडा द्वारा प्रस्तावित प्रारूप—नाइडा अनुवाद को एक वैज्ञानिक तकनीक के रूप में स्वीकार करते हैं। उनके अनुसार अनुवाद, भाषा विज्ञान का एक अनुप्रयुक्त पक्ष है, अत: अनुवाद प्रक्रिया के विभिन्न सोपानों को समझने और उसके विश्लेषण के लिए भाषा वैज्ञानिक तकनीक का प्रयोग आवश्यक है। उनके अनुसार अनुवाद प्रक्रिया के तीन सोपान हैं-

1. विश्लेषण, 2. अन्तरण और 3. पुनर्गठन। एक कुशल और अनुभवी अनुवादक इन तीन विभिन्न सोपानों को एक छलाँग में पार कर लेता है। पर अनुवाद के प्रशिक्षार्थी को इन तीनों सोपानों से क्रमश: गुजरना पड़ता है। इन सोपोनों को नाइडा ने आरेख द्वारा निम्न प्रकार व्यक्त किया है-

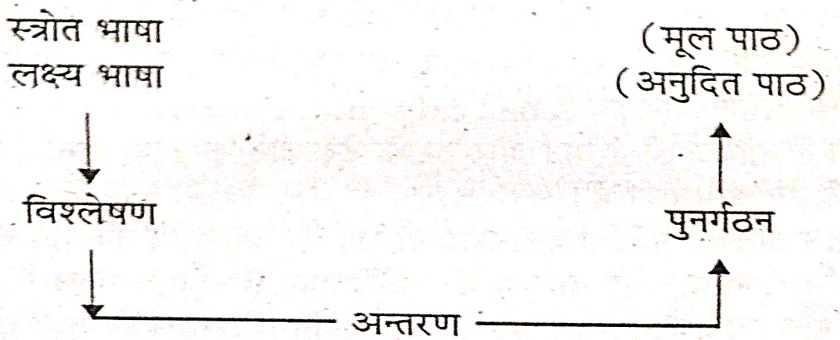

आरेख-2

आरेख (2) द्वारा स्पष्ट है कि इन तीनों सोपानों में एक निश्चित क्रम है। स्त्रोत भाषा में पहले से ही रचित मूल पाठ के सन्देश को ग्रहण करने के लिए अनुवादक सबसे पहले पाठ का विश्लेषण करता है। पाठ भाषाबद्ध होता है और संदेश भाषिक संरचना के माध्यम से सम्प्रेषित किया जाता है, इसलिए नाइडा के अनुसार मूल पाठ के विश्लेषण के लिए भाषा सिद्धान्त तथा उसमें अपनाई जाने वाली विश्लेषण तकनीक का उपयोग आवश्यक हो जाता है। नाइडा का यह भी मत है कि हर भाषिक संरचना के दो स्तर होते हैं- आभ्यान्तर तथा बाह्य। आभ्यान्तर स्तर का सम्बन्ध भाषा के सार्वभौम पक्ष से जुड़ा होता है। अत: इस स्तर पर स्थिति सन्देश स्त्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा के लिए समान-रूप से होता है। इसके विपरीत बाह्य स्तर की संरचना का सम्बन्ध भाषा विशेष की विशिष्ट व्याकरणिक व्यवस्था के साथ रहता है, जिसके फलस्वरूप गहरे स्तर पर स्थित समान सन्देश को अभिव्यक्त करने के लिए दो भाषाएँ (स्त्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा) दो भिन्न-भिन्न अभिव्यक्त प्रणालियों का प्रयोग करती हैं। नाइडा के अनुसार अनुवाद गहन स्तर पर स्थित समानधर्मी सन्देश के फलस्वरूप ही सम्भव हो पाता है। अत: अनुवादक के लिए आवश्यक है कि वह बाह्य स्तर पर स्थित भाषिक संरचना का विश्लेषण करते हुए उसके गहन स्तर पर स्थित संदेश का पता लगाए और उस धरातल पर पाठ का अर्थबोध करे।

उदाहरण के लिए, अंग्रेजी का एक वाक्य लें- Mohan frightens Sheela. गहरे स्तर पर इसकी दो व्याकरणिक संरचना सम्भव है। एक में मोहन, कर्ता के रूप में सक्रिय प्राणी (एजेन्ट) के रूप में कार्य करता है और दूसरे में वह करण के रूप में मात्र क्रिया के साधन के रूप में प्रयुक्त होगा। इसी के अनुसार क्रिया के दो अर्थ भी सम्भव हो पाते हैं। हिन्दी में इसके दो समानार्थी सन्देश सम्भव हैं- 1. मोहन शीला को डराता है और 2 शीला मोहन से डरती है। विश्लेषण के उपरान्त प्राप्त इन दोनों सन्देशों के बाद ही अनुवादक पाठ के सन्दर्भ के अनुसार उनमें से किसी एक या दोनों सन्देशों को अनुदित पाठ में सम्प्रेषित करने का निर्णय लेता है।

विश्लेषण से प्राप्त अर्थबोध का लक्ष्य भाषा में अन्तरण अनुवाद प्रक्रिया का दूसरा सोपान है। प्रत्येक भाषा मूल सन्देश को अपने ढंग से भाषिक इकाइयों में बाँधती है। अत: सन्देश को एक भाषा से दूसरी भाषा में अन्तरित करने का मतलब ही है अभिव्यक्ति के धरातल पर उसका पुर्नविन्यास करना। नाइडा के अनुसार पुनर्विन्यास की यह प्रक्रिया कुछ-कुछ उसी प्रकार की है जिस प्रकार कुछ विभिन्न आकार के बक्सों के सामान को उससे भिन्न आकार के दूसरे बक्सों में दुबारा सुव्यवस्थित ढंग से सजाया जाना। पुनर्विन्यास की यह प्रक्रिया कभी मात्र ध्वनि/लिपि स्तर तक सीमित होती है। जैसे अंग्रेजी के शब्दों में "एकेडमी", "टेकनीक", "इंटरीम", "कॉमेडी" क्रमश: अकादमी, तकनीक, अन्तरिम और कामदी के रूप में और कभी नवीन अभिव्यक्ति के रूप में भाषा के सभी स्तरों पर। हिन्दी की लोकोक्ति "नाच न आवे आँगन टेढ़ा" के अंग्रेजी अनुवाद A bad carpenter quarrels with his tools. में न तो नाच का प्रसंग है और न ही आँगन और उसके टेढ़े होने का। पर सन्देश के धरातल पर ये दोनों अभिव्यक्तियाँ सममूल्य हैं।

पुनर्गठन अनुवाद प्रक्रिया का तीसरा सोपान है। ध्यान देने की बात है कि प्रत्येक भाषा की अपनी अभिव्यक्त-प्रणाली और कथन-रीति होती है। लक्ष्य भाषा में अनुदित पाठ का निर्माण अगर मूल रचना के सन्देश को यथारूप रखने के प्रयास से जुड़ा होता है, तो उसके साथ लक्ष्य भाषा की उस अभिव्यक्ति-संस्कार के साथ भी सम्बद्ध रहता है, जो अनुदित पाठ

को सहज, स्वाभाविक और बोधगम्य बनाता है। अनुदित पाठ के रचयिता के रूप में अनुवादक कई प्रकार की छूट ले सकता है, यथा पद्य में लिखी मूल कृति का यह गद्यानुवाद कर सकता है (पर मूलकृति की काव्यात्मकता का बिना ह्रास किए हुए) मूल रचना के सात-आठ वाक्यों के सन्देश को चार-पाँच वाक्यों अथवा दस-ग्यारह वाक्यों में बाँध या फैला सकता है (पर मूल सन्देश में बिना कुछ जोड़े या घटाए), व्याकरणिक संरचना में भी वह परिवर्तन ला सकता है, यथा- कर्मवाच्य में व्यक्त मूल अभिव्यक्ति को अनुदित पाठ में वह कर्तृवाच्य में बदल सकता है (बशर्ते यह बदलाव लक्ष्य भाषा की प्रकृति की माँग का परिणाम हो)।

बाइबिल का अनुवादक होने के कारण नाइडा की दृष्टि मूलत: एक विशिष्ट प्रकार के पाठ के अनुवाद तक सीमित थी। उनके अनुवाद सम्बन्धी उदाहरण भी प्राचीन पाठ, उसमें निहित गूढ़ार्थ की पकड़, विकसित तथा अविकसित भाषाओं में सन्देश के सम्प्रेषण की समस्या आदि से जुड़े थे। अनुवाद प्रक्रिया पर न्यूमार्क द्वारा प्रस्तावित प्रारूप नाइडा के समान कुछ चरणों की अपेक्षा रखता है, पर अपने चिन्तन में वह अधिक व्यापक है। इसे निम्नलिखित आरेख से दिखाया जाना सम्भव है-

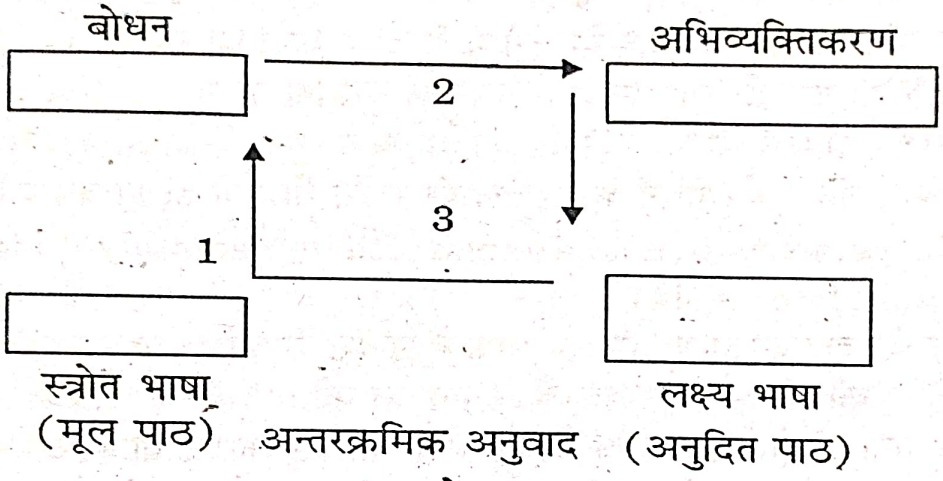

आरेख-3

न्यूमार्क द्वारा प्रस्तावित प्रारूप—न्यूमार्क और नाइडा द्वारा प्रस्तावित आरेख की तुलना से स्पष्ट होता है कि अनुवाद प्रक्रिया सम्बन्धी संकल्पना में अगर उनमें समानता है, तो एक सीमा तक विभिन्नता भी है। न्यूमार्क अनुवाद प्रक्रिया की दो दिशाएँ स्वीकार करते हैं और इसीलिए मूल पाठ और अनुदित पाठ के सह-सम्बन्ध को दो स्तरों पर स्थापित करते हैं। पहला सम्बन्ध दो पाठों के अन्तरक्रमिक अनुवाद पर आधारित है, जिसे उन्होंने खण्डित रेखा के माध्यम से जोड़ा है। अन्तरक्रमिक अनुवाद, शब्द-प्रति-शब्द अनुवाद होता है। अत: कई सन्दर्भों में न केवल अपनी प्रकृति में अपारदर्शी होता है, बल्कि भ्रामक भी होता है। खण्डित रेखा से जोड़ने का मतलब ही है कि यह अनुवाद की सही प्रक्रिया नहीं है, भले ही कुछ अनुवादक इस रास्ते को अपनाने की ओर प्रवृत्त हों और कुछ को यह मार्ग सहज और सीधा लगे।

अनुवाद का दूसरा रास्ता मूल पाठ के अर्थबोधन और लक्ष्य भाषा में उच्च अर्थ के अभिव्यक्तिकरण का है। न्यूमार्क द्वारा संकेतित बोधन की प्रक्रिया, नाइडा द्वारा प्रस्तावित विश्लेषण की प्रक्रिया से अधिक व्यापक संकल्पना है, क्योंकि इसमें विश्लेषण से प्राप्त अर्थ के साथ-साथ अनुवादक द्वारा मूलपाठ की व्याख्या का अंश भी सम्मिलित है। कई भाषिक पाठ या उक्तियाँ अनुवादक की व्याख्या की अपेक्षा रखती हैं, अन्यथा अर्थ पारदर्शी नहीं बन

पाता। सुरेशकुमार ने कुछ उदाहरण देकर न्यूमार्क के प्रारूप को समझाने का प्रयत्न किया है। उदाहरण के लिए, हम ऐसे ही कुछ उदाहरण द्वारा इस प्रारूप को यहाँ स्पष्ट करना चाहेंगे–

किसी ट्रक पर अंकित "पब्लिक केरियर" का अनुवाद क्या हो? अन्तरक्रमिक अनुवाद के अनुसार "पब्लिक" के लिए "लोक/जन" और "केरियर" के लिए "वाहन" मानते हुए एक अनुवाद "लोकवाहन/जनवाहन" सम्भव है। पर यह अनुवाद पारदर्शी अनुवाद नहीं माना जा सकता और न ही पूर्णरूप से बोधगम्य। बोधन के धरातल पर "पब्लिक केरियर" का एक अर्थ यह भी है कि उक्त वाहन किसी की निजी सम्पत्ति इस रूप में नहीं है कि सामान्य व्यक्ति इसका उपयोग कर सके। इसका जनसाधारण के लिए उपयोग सम्भव है बशर्ते कि व्यक्ति इसका उचित भाड़ा दे। अत: अर्थ के एक धरातल पर इसका अन्वय सम्भव है- A carrier which can be hired by public. अत: पारदर्शी अनुवाद के रूप में इसका अनुवाद "भाड़े का ट्रक" भी सम्भव है।

बोधन, व्याख्या सापेक्ष होता है और यह व्याख्या स्त्रोत भाषा में अन्वय के रूप में सम्भव है। उदाहरण के लिए, अंग्रेजी का एक वाक्य लें- Judgement has been reserved. अन्तरक्रमिक अनुवाद के रूप में हिन्दी में कहा जा सकता है- निर्णय आरक्षित/सुरक्षित कर लिया गया है। यह अनुवाद बोधन के धरातल पर न केवल अपारदर्शी है, बल्कि अर्थ-सम्प्रेषण में भ्रामक भी है। "निर्णय का आरक्षण/सुरक्षा" अपने आशय को स्पष्ट नहीं कर पाता। अत: यह अर्थ-बोधन के धरातल पर स्त्रोत भाषा में ही अन्वय की अपेक्षा रखता है, यथा- Judgement will not be announced immediately/Judgement will be announced later. आदि।

बोधन के बाद का चरण है लक्ष्य भाषा में सन्देश के अभिव्यक्तिकरण का, जो पुनर्गठन और पुन:सर्जना की भी अपेक्षा रखता है। ध्यान देने की बात है कि प्रत्येक भाषा की अपनी बनावट और बुनावट होती है, उसकी अपनी शैली और संस्कार होता है, अपना मिजाज और तेवर होता है। लक्ष्य भाषा में अनुदित पाठ के अभिव्यक्तिकरण के चरण में सन्देश को यथासम्भव सुरक्षित रखते हुए एक भाषा के रचना विधान और संस्कार से दूसरी भाषा के रचना-संस्कार और शैली-संस्कार की यात्रा करनी होती है। अंग्रेजी के वाक्य- I have two books का अनुवाद होगा, "मेरे पास दो पुस्तकें हैं", पर I have two daughters का अनुवाद "मेरे पास दो लड़कियाँ हैं" गलत माना जाएगा। हिन्दी के भाषा-व्यवहार के अनुरूप अनुवाद होगा- "मेरी दो लड़कियाँ हैं।" यह भाषा संस्कार ही है जिसके अनुसार A line in reply will be appreciated का अनुवाद "उत्तर में लिखी एक पंक्ति प्रशंसित की जाएगी" गलत माना जाएगा जबकि "उत्तर की प्रतीक्षा रहेगी" अनुवाद सही माना जाएगा। इसी प्रकार I wonder if this is true का अनुवाद "मुझे इसकी सच्चाई में सन्देह है" अधिक उपयुक्त माना जाएगा। इस चरण पर Judgement has been reserved का हिन्दी में अभिव्यक्तिकरण होगा- निर्णय अभी नहीं सुनाया जाएगा।

अनुवाद प्रक्रिया के अन्तिम चरण का सम्बन्ध पाठ-निर्माण से है। इस चरण पर अनुवादक न केवल लक्ष्य भाषा के अनुरूप सन्देश को भाषिक अभिव्यक्ति का जामा पहनाता है, बल्कि मूल भाषा के पाठ की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए सह-पाठ का निर्माण करता है। उदाहारण के लिए, अंग्रेजी का No Admission या No Smoking का बोध के धरातल पर अन्वय होगा Admission is not allowed या Smoking is not allowed और

अभिव्यक्तिकरण के चरण पर हिन्दी में कथन होगा "अन्दर आना मना है, सिगरेट-बीड़ी पीना मना है।" पर यह सम्भव है कि पाठ-निर्माण के चौथे चरण में हम अनुवाद करें "प्रवेश निषिद्ध"। इसी प्रकार Judgement has been reserved का अभिव्यक्तिकरण के चरण पर हिन्दी रूपान्तरण "निर्णय अभी नहीं सुनाया जाएगा" स्वीकार हो सकता है। पर पाठ-निर्माण के चरण पर इसका अनुवाद "निर्णय बाद में सुनाया जाएगा" अधिक सार्थक माना जाएगा।

अनुवाद प्रक्रिया के इन विभिन्न चरणों पर पाई जाने वाली अंग्रेजी-हिन्दी की दो अभिव्यक्तियों के उदाहरण नीचे दिए जा रहे हैं-

1. **स्त्रोत (मूल) भाषा पाठ**—(क) No smoking,
   (ख) Judgement has been reserved.
1. **(क) अन्तरक्रमिक अनुवाद**—(क) नहीं धुआँ करना/धूम्रपान,
   (ख) निर्णय रख लिया गया सुरक्षित।
2. **बोधन**—(क) Smoking is not allowed here,
   (ख) Judgement will not be announced immediately.
3. **अभिव्यक्तिकरण**—(क) बीड़ी-सिगरेट पीना मना है।
   (ख) निर्णय अभी नहीं सुनाया जाएगा।
4. **पाठ-निर्माण**—(क) धूम्रपान निषेध।
   (ख) निर्णय बाद में सुनाया जाएगा। ❑

स्त्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा के अर्थान्तरण की प्रक्रिया

प्रश्न 11. स्त्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा के अर्थान्तरण की प्रक्रिया समझाइए।

अथवा

अनुवादक को किस तरह की 'अनुवाद प्रक्रिया', अपनानी चाहिए? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-

अनुवाद प्रक्रिया

अनुवाद प्रक्रिया की मूलभूत समस्या लक्ष्य भाषा में अनुवाद समानार्थी खोजने की है। अत: स्त्रोतभाषा की पाठ-सामग्री को पूरी तरह समझे बिना अनुवादक लक्ष्य भाषा के समानार्थी शब्दों के द्वारा उसे प्रतिस्थापित नहीं कर सकता। साथ ही लक्ष्य भाषा के वाक्यों तथा संरचनात्मक तत्वों को भी अत्यंत सावधानीपूर्वक प्रयुक्त करना चाहिए। एक शब्द अनेक संदर्भों में प्रयुक्त होकर अनेक अर्थ देता है इसलिए मूल पाठ के संदर्भ और प्रयोग परिवेश को समझकर ही समानार्थी शब्दों का चयन किया जाना चाहिए। प्रत्येक भाषा में अभिव्यक्ति का अपना एक विशेष मुहावरा होता है। इसका लक्ष्य भाषा में अनुवाद कठिन होता है अत: इसका अनुवाद लक्ष्य भाषा की प्रकृति को ध्यान में रखकर करना चाहिए। अनुवाद करते समय सांस्कृतिक परंपराओं का ध्यान भी रखा जाना चाहिए। वाक्य में पदों का अनुक्रम भी लक्ष्य भाषा की अनुक्रम-व्यवस्था के अनुरूप होना चाहिए। लक्ष्य भाषा में स्त्रोत भाषा से अनुवाद करते समय शब्दों के लिंग, वचन और व्याकरणिक रूपों की संगति को ध्यान में रखना चाहिए। वाक्यांश और लोकोक्तियों के अनुवाद से लक्ष्य भाषा को अस्पष्ट एवं अव्यवस्थित नहीं बनाना चाहिए।

अनुवाद ऐसा होना चाहिए कि वह यांत्रिक या निर्जीव न लगे। अनुवाद प्रक्रिया के अन्तर्गत व्यावहारिक ज्ञान का होना भी आवश्यक है।

उदाहरण के लिए अंग्रेजी भाषा का निम्नलिखित वाक्य देखें–

The boy, who does not understand that his future depends on hard studies, is a fool.

यदि हिन्दी में इसका अनुवाद इस प्रकार किया जाता है–

वह लड़का, जो यह नहीं समझता कि उसका भविष्य सख्त अध्ययन पर निर्भर करता है, मूर्ख है। तो यह वाक्य विन्यास हिन्दी भाषा के वाक्य विन्यास के अनुरूप नहीं होगा, hard के लिए यहाँ 'सख्त' शब्द भी उपयुक्त समानार्थी नहीं लगता। यदि अनुवाद निम्नलिखित हो–

वह लड़का मूर्ख है जो यह नहीं समझता कि उसका भविष्य कठोर अध्ययन पर निर्भर है।

तो अनुवाद का वाक्य–विन्यास हिन्दी भाषा की प्रकृति के अनुरूप होगा। इसी प्रकार–

Soharab, was killed by his own father Rustam. का अनुवाद–

सोहराब मार दिया गया था अपने पिता रुस्तम के द्वारा। उचित नहीं है, हिन्दी में–

सोहराब अपने पिता रुस्तम के ही हाथों मारा गया। अनुवाद उपयुक्त होगा।

अत: लक्ष्य भाषा के वाक्य–विन्यास को ध्यान में रखकर ही अनुवाद किया जाना चाहिए। जैसा कि कहा गया है प्रत्येक भाषा में अभिव्यक्ति का एक अपना विशेष मुहावरा होता है, इसका लक्ष्य भाषा में यथावत् अनुवाद कठिन होता है, इसका अनुवाद लक्ष्य भाषा का प्रकृति के अनुरूप ही होना चाहिए। देखें–

स्रोत भाषा अंग्रेजी	लक्ष्य भाषा हिन्दी में शब्दश: अनुवाद	सही अनुवाद
1. There is no room in the car.	कार में कोई कमरा नहीं है	कार में कोई स्थान नहीं है

यदि अनुवादक 'no room' मुहावरे का अर्थ नहीं जानता और कोश में से room का अर्थ 'कमरा' देखकर अनुवाद कर देता है तो यह भ्रष्ट अनुवाद ही होगा।

2. She is taking food. 'Taking meals', 'Taking tea'	वह खाना ले रही है। आदि विशेष प्रयोग है।	वह खाना खा रही है। इनके अनुवाद हिन्दी की प्रकृति के अनुरूप होना चाहिए।
3. He is playing on violin	वह वायोलिन पर खेल रहा है।	वह वायोलिन बजा रहा है।

उदाहरण–

(अ) स्रोत भाषा अंग्रेजी

The central core of Gandhiji's teaching was meant not for his country or his people alone but for all mankind and is valid not only for today but for all time. He wanted all men to be free so that they could grow unhampered into full self realisation. He wanted to abolish the exploitation of man by man in any shape or form because both exploitation and submission to it are a sin not only against society but against the moral law, the law of out being. The means to be compatible with this end therefore, he said, have to be purely moral, namely, unadulterated truth and non-violence. He had been invited by many foreigners to visit their countries and deliver his message to them directly but he declined to accept such invitations as, he said, he must make good what he claimed for Truth and Ahinsa in his own country

before he could launcch on the gigantic task of winning or rather converting the world. With the attainment of freedom by India, by following his method, though in a limited way and in spite of all the immperfections in its practice, the condition precedent for taking his message to other countries was to a certain extent fulfilled. and although the partition had caused wounds and raised problems which claimed all his time and energy, he might have been able to turn his attention to this larger question even in the midst of his distractions. But Providence had ordained otherwise. May some individual or nation arise and carry forward the effort launched by him till the experiment is completed the work finished and the objective achieved !

लक्ष्य-भाषा हिन्दी

गाँधीजी की शिक्षा का मर्म केवल उनके देश भारत या यहाँ की जनता के लिए ही सीमित नहीं था। वह सारी मानव-जाति के लिए था, और वह केवल वर्तमान काल के लिए ही नहीं, परन्तु त्रिकाल के लिए सत्य है। वे चाहते थे कि सारे मानव स्वतंत्र हों जिससे वे अपना अबाधित मनुष्य द्वारा होने वाला सभी प्रकार का शोषण मिटा देना चाहते थे, क्योंकि शोषण करना और शोषण का शिकार होना दोनों ही पाप है- न केवल समाज के प्रति बल्कि नैतिक नियम के प्रति भी, हमारे जीवन के नियम के प्रति भी इसलिए उनका कहना था कि इस उद्देश्य के अनुरूप ही साधन भी सर्वथा नैतिक अर्थात् विशुद्ध सत्य और अहिंसा पर आधारित होने चाहिये। अनेक विदेशियों ने अपने देशों में गाँधीजी को बुलाया था, ताकि वे अपना संदेश उन्हें स्वयं दे सकें। परन्तु गाँधीजी ने ये निमन्त्रण स्वीकार नहीं किये। उन्होंने कहा कि सत्य और अहिंसा के विषय में उनका जो दावा है उसे पहले उन्हें अपने ही देश में पूरा करना चाहिये, उसके बाद ही वे संसार का हृदय जीतने या उसके विचार बदलने का भगीरथ कार्य हाथ में ले सकते हैं। सीमित रूप में ही सही और पालन में अनेक अपूर्णताएँ रहने के बावजूद भी उनकी अहिंसक कार्य-पद्धति का अनुसरण करके जब भारत ने स्वतंत्रता प्राप्त कर ली, तब किसी हद तक दूसरे देशों में उनका संदेश ले जाने की वह पूर्व शर्त पूरी हो गई और यद्यपि देश के विभाजन के कारण ऐसे आघात लगे और ऐसी समस्याएँ पैदा हुई जिन पर उन्हें अपना सारा समय और सारी शक्ति लगानी पड़ी, फिर भी वे अपनी व्यस्तताओं के बीच भी इस विशाल और व्यापक प्रश्न की और ध्यान देने की क्षमता रखते थे। परन्तु विधाता को कुछ और ही स्वीकार था। भगवान करे कोई व्यक्ति या राष्ट्र ऐसा आगे आये, जो गाँधीजी के आरंभ किये हुए प्रयास को उस समय तक जारी रखे जब तक उनका प्रयोग पूरा न हो जाये, कार्य समाप्त न हो जाय और उद्देश्य सिद्ध न हो जाय !

(ब) स्त्रोत भाषा हिन्दी

आदर्शवादियों को आम तौर पर गगन-विहारी, अव्यावहारिक समझा जाता है। पर गाँधीजी का आदर्शवाद गगन-विहार करने जैसा नहीं था। उनका यह दावा था और उसे उन्होंने सिद्ध कर दिखाया था कि वे व्यावहारिक आदर्शवादी थे। उन्होंने दिखा दिया कि भलाई को परिणामकारी कैसे बनाया जा सकता है। अपने सत्य के आग्रह और पूर्ण पालन से उन्हें वास्तविकता पर पूरा नियंत्रण प्राप्त हो गया था और मानव-स्वभाव का अद्वितीय ज्ञान प्राप्त हो गया था। उसकी शक्तियों और उसकी दुर्बलताओं को जानने के कारण वे अचूक अंतर्ज्ञान

से अपने अस्त्र चुन सकते थे और मिट्टी से शूरवीरों को जन्म दे सकते थे। शायद हमारी जानकारी में अन्य कोई व्यक्ति गाँधीजी की तरह इतने विभिन्न प्रकार के मनुष्यों और प्रतिभाशाली व्यक्तियों को अपने चारों तरफ इकट्ठा करने या उन्हें एक साथ रखने में समर्थन नहीं हुआ। पंडित नेहरू ने अपनी अनोखी शैली में लिखा है, "हमारा एक-दूसरे से सर्वथा भिन्न लोगों का जमघट था। हमारी पृष्ठभूमियाँ, हमारी जीवन-प्रणालियाँ और हमारी विचारधाराएँ सब कुछ भिन्न थीं। परन्तु हमने एक सामान्य उद्देश्य की पूर्ति के लिए ऐसे नेता के साथ अपना विकास किया, जिसे (हम) अपने विभिन्न दृष्टिकोणों से एक महान् और भव्य विभूति समझते थे।

लक्ष्य-भाषा अंग्रेजी

Idealists are generally classed as visionaries, unpractical people. Gandhiji's idealism was not Utopian. He was no "ineffectual angel beating his luminous wings in the void". He claimed and proved himsilf to be a practical idealist. He showed how goodness could be made effective. His insistence on truth and full practice there of gave him a firm hold of reality and endowed him with an unrivalled knowledge of human nature- its potentialities as well as its weaknesses- which enabled him to choose his instruments with an unerring instinct and make heroes out ot clay. Perhaps no other person we know, was able to draw round him men and talents of such diverse types as Gandhiji, or to hold them together as a team. "We were on odd assortment," Pandit Nehru has recorded in his inimitable style, "very different from each other, different in our back-ground, ways of life and ways of thinking, but.... we..... frw in the service of a common cause, with a leader to whom ..... (we) lokked up.....from our different viewpoints, as a great and magnificent personality." ❑

अनुदित पाठ का पुनर्गठन और अर्थ सम्प्रेषण की प्रक्रिया

प्रश्न 12. अनुदित पाठ का पुनर्गठन और अर्थ सम्प्रेषण की प्रक्रिया का वर्णन कीजिए।

उत्तर- अनुदित पाठ का पुनर्गठन और अर्थ सम्प्रेषण की प्रक्रिया

अनुवाद प्रक्रिया के सन्दर्भ में मूलपाठ के अर्थग्रहण और अर्थान्तरण के सोपानों से गुजरने के वाद अनुवादक को अर्थ-सम्प्रेषण के दायित्व का निर्वहन करना पड़ता है। यहाँ अनुवादक रचयिता/लेखक के रूप में प्रस्तुत होता है और उसे पुनर्गठन की समस्या का सामना करना पड़ता है। इस पुनर्गठित रूप को ही लक्ष्य भाषा का अनुदित रूप कहा जाता है। इस अनुदित पाठ की सफलता के लिए आवश्यक है कि वह मूल पाठ का सहपाठ बनकर सामने आए अर्थात् अनुदित पाठ वही अर्थ सम्प्रेषित करे जो मूल पाठ स्त्रोत भाषा में करता है। रचयिता के रूप में अनुवादक को एक ओर लक्ष्य भाषा के पाठक का ध्यान रखना पड़ता है, अर्थात् अनुदित पाठ को अपने देश और काल के अनुरूप बोधगम्य और संप्रेष्य बनाना पड़ता है तो दूसरी ओर मूल पाठ के संदेश और फिर उसकी अभिव्यक्ति से सम्बन्धित शैलीगत गठन के दबाव के साथ उसको अनुदित पाठ का निर्माण करना पड़ता है।

इस सोपान पर अपनी भूमिका निभाने के लिए अनुवादक अनुदित पाठ को अनेक स्तरों पर विभिन्न कसौटियों से जाँचता-परखता है। इसके अन्तर्गत लक्ष्य भाषा की प्रकृति

को ध्यान में रखते हुए स्त्रोत भाषा की सामग्री को प्रस्तुत किया जाता है। अनुदित पाठ की सम्प्रेषणीयता के लिए अनेक स्तरों पर अनुवादक को ऐसा करना पड़ता है। यदि ऐसा न किया जाए तो लक्ष्य भाषा के पाठक-वर्ग के लिए वह बोधगम्य नहीं हो पाएगा और उसे सफल अनुवाद नहीं कहा जाएगा। इसके लिए अनुवादक को लक्ष्य भाषा और स्त्रोत भाषा के प्रयुक्ति सन्दर्भों में समानता और विषमता का अध्ययन करना आवश्यक होता है। उसके बाद ही लक्ष्य भाषा की प्रकृति के अनुरूप पाठ का पुनर्गठन करना सम्भव हो पाता है। वस्तुत: प्रकार्यात्मक और संरचनात्मक दृष्टि से जब कोई अनुदित पाठ अपने मूल पाठ के सहपाठ रूप में सिद्ध होता जाता है। अनुवादक प्राय: रचयिता के रूप में इसी दबाव में अनुवाद कार्य करता है। अनुवाद प्रक्रिया में केवल संकेतार्थ की समतुल्यता ही नहीं होती, बल्कि उन सभी अभिव्यक्ति-प्रकारों की समतुल्यता होती है, जिनका सम्बन्ध पाठपरक उपादानों के साथ रहता है। अनुवाद प्रक्रिया के इस अन्तिम सोपान पर अनुवादक को निम्नलिखित दो स्तरों पर पुनर्गठन करना पड़ता है।

(क) भाषा-प्रयोग के स्तर पर

भाषा प्रयोग के स्तर पर प्रयुक्ति क्षेत्र, प्रयुक्ति प्रकार तथा प्रयुक्ति शैली के सन्दर्भ में पुनर्गठन किया जाता है।

(1) प्रयुक्ति—प्रयुक्ति क्षेत्र का सम्बन्ध विषयवस्तु की प्रकृति से होता है। जैसे- पत्रकारिता, साहित्य, विज्ञान, विधि, प्रशासन आदि के विषयों से सम्बन्धित भाषा की प्रयुक्तियाँ। इसमें प्रमुख समस्या दोनों भाषाओं में समान अभिव्यक्तियाँ उपलब्ध नहीं होने की है। इसलिए अनुवादक को दोनों में समायोजन करते हुए स्त्रोत भाषा की अभिव्यक्ति का लक्ष्य भाषा में पुनर्गठन करना पड़ता है। उदाहरण के लिए, पत्रकारिता के सन्दर्भ में निम्नलिखित वाक्य देखे जा सकते हैं-

(i) Cotton is cool this hot summer.

(ii) Roshan, Roshan is burning bright.

प्रथम वाक्य में 'cool' का अर्थ 'ठंडा' नहीं है, बल्कि इसका अर्थ है 'माँग न होना''। दूसरे वाक्य में 'Roshan' न तो किसी सामान्य व्यक्ति का नाम है और न ही इसका अर्थ 'दीपक के जलने' से है। 'Roshan' वास्तव में सुप्रसिद्ध फिल्मी सितारा 'Hrithik Roshan' है, जिसकी चर्चा हर किसी की जुबाँ पर है। अत: पुनर्गठन करते हुए इन दोनों वाक्यों का अनुवाद इस प्रकार होगा-

(1) इस वर्ष गर्मी के मौसम में कपास की माँग नहीं है।

(2) सबकी जुबाँ पर एक ही नाम-रितिक रोशन, रितिक रोशन।

इसी प्रकार अन्य विषयों/क्षेत्रों के सन्दर्भ में भी पुनर्गठन अपेक्षित होता है।

शैली का सम्बन्ध वक्ता और श्रोता के पारस्परिक सामाजिक सम्बन्धों पर आधारित होता है। पुनर्गठन के इस सोपान पर अनुवादक को स्त्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा के प्रयुक्ति सन्दर्भों को समतुल्यता की कसौटी पर परखते हुए लक्ष्य भाषा की प्रकृति के अनुरूप पाठ का विन्यास करना पड़ता है।

अंग्रेजी वाक्य :

(i) Would you please be kind enough to visit my home ?

(ii) The animals began to run helter-skeltor.

(iii) I shall now make a move.

लक्ष्य भाषा की प्रकृति के अनुकूल अनुवाद :

(1) क्या आप मेरे घर पधारने की कृपा करेंगे।
(2) जानवरों में भगदड़ मच गई।
(3) अच्छा तो मैं चलता हूँ।

हिन्दी वाक्य :

(1) अबे ओ रामू कहाँ मर गया था ?
(2) चाय तो चलेगी न ?
(3) अबे ओ तानसेन की औलाद, क्यों गला फाड़ रहा है ?

पुनर्गठित अभिव्यक्तियाँ :

(i) Oh Ramu where have you been so long ?
(ii) Will you like to have a cup of tea ?
(iii) You poor singer! Why have you been hoarsing for nothing like this ?

(ख) विधा के स्तर पर

भाषा प्रयोग के अतिरिक्त विधापरक उपादानों के स्तर पर भी अनुवादक को पुनर्गठन करना पड़ता है। विधा का तात्पर्य पाठ के संरचनात्मक रूप से है, जैसे- कहानी, उपन्यास, नाटक, कविता, निबन्ध। इन विधाओं के बाह्य रूप के साथ-साथ उनकी आभ्यंतर प्रकृति को भी ध्यान में रखते हुए ही पुनर्गठन किया जाता है। नाटक का अनुवाद करते समय उसके बाहरी रूप संवाद-विधान और आभ्यंतरिक रूप, नाटकीयता/रंगमंचनीयता दोनों का ही ध्यान रखना होता है। इसी प्रकार कविता का अनुवाद करते समय उसके बाह्य रूप, छंद-विधान और आभ्यंतरिक रूप काव्यात्मकता दोनों का ही ध्यान रखना होता है। इस प्रक्रिया में अनुवाद विधा के वाहरी रूप को तो वदल सकता है, किन्तु उसके आभ्यंतरिक रूप को नहीं। कहने का आशय यह है कि यदि मूलपाठ कविता है तो उसका अनुदित पाठ गद्यानुवाद के रूप में दिया जा सकता है, किन्तु अनुदित पाठ 'सहपाठ' है तो उसकी काव्यात्मकता को किसी भी कीमत पर नहीं छोड़ा जा सकता।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि पुनर्गठन के सोपान पर अनुवादक को अनुदित पाठ की संप्रेषणीयता पर ध्यान केन्द्रित करना आवश्यक होता है। कुल मिलाकर आशय यह है कि अनुवाद कार्य एक अनुप्रयुक्त भाषिक प्रक्रिया है, इसलिए उसका एक पक्ष लक्ष्य भाषा के पाठकों से सम्बन्धित होता है, जिनके लिए वह अनुवाद कार्य किया जाता है। इस दृष्टि से यह अति आवश्यक है कि अर्थ-सम्प्रेषण की प्रक्रिया में अनुदित पाठ स्पष्ट, सहज, बोधगम्य तथा लक्ष्यभाषा की प्रकृति के अनुरूप होना चाहिए। यह कार्य निश्चित रूप से किसी भी अनुवादक के लिए एक चुनौतीपूर्ण कार्य है, क्योंकि वह पाठ का मूल रचयिता नहीं है और उसके सामने 'प्रारूप' के रूप में पहले से ही एक पाठ होता है, जिसके समानान्तर लक्ष्य भाषा में उसे एक 'सहपाठ' का निर्माण करना पड़ता है। मूलपाठ के संदेश और फिर उसकी अभिव्यक्ति से सम्बन्धित शैलीगत गठन के दबाव के साथ उसको अनुदित पाठ का निर्माण करना पड़ता है। इसके अतिरिक्त उसे अनुदित पाठ को अपने देश और काल के अनुरूप सम्प्रेषित करना होता है, ताकि वह पाठक वर्ग के लिए सुबोध, सहज एवं स्पष्ट बन सकें। ❑

अनुवाद एवं समतुल्यता का सिद्धान्त

प्रश्न 13. अनुवाद एवं समतुल्यता के सिद्धान्त पर विस्तृत विवेचना कीजिए।

अथवा

निम्न पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए-

(अ) भाषापरक समतुल्यता, (ब) शैलीपरक समतुल्यता।

उत्तर-

अनुवाद तथा समतुल्यता का सिद्धान्त

पश्चिमी अनुवाद सम्बन्धी चिन्तकों ने अनुवाद के विविध पक्षों पर व्यापक विचार और विश्लेषण किया है। उन्होंने भाषागत और भाव अथवा विषयगत अन्तरण दोनों पर गहराई से विचार किया। कृति का शरीर ही नहीं उसके प्राण अथवा आत्मा दोनों होते हैं। अनुवाद में दोनों का अन्तरण होता है। भाषा पीछे छूट जाती है, परन्तु उसके संकेतों का वहन होता है। आत्मा अथवा प्राण को नई भाषा के जरिए अनुवाद पुन:स्थापना करता है। यहाँ बिहारी लाल का दोहा स्मरण में आता है-

"दुखी होहुगे सरल हिय, बसत त्रिभंगी लाल।"

गले, कमर, घुटनों- तीनों जगह बांकी मुद्रा वाले कृष्ण मेरे सरल (सीधे) हृदय में कैसे खड़े होंगे ? उहें कष्ट नहीं होगा ? अत: मैं अपने हृदय या मन को भी वैसे वक्र बनाए हूँ। अर्थात् उनके स्थापन हेतु वैसे ही वक्र आकार निर्माण किया है।

'समतुल्यता' शब्द हम यहाँ गणित के शब्द का प्रयोग कर रहे हैं। वहाँ पर (=) समानता के लिए व्यवहार करते हैं। जैसे- 3-2 = 2-1 को कहते हैं। अनुवाद में उसी लहजे में बांयी तरफ मूल भाषा और दाहिनी तरफ लक्ष्य भाषा रख कर मिलान करते हैं। तब उसमें कम-अधिक की चर्चा उठती है। यह उद्देश्य बराबरी के स्तर पर नहीं। यहाँ पर दिशा समान हो, भाव समान हो और स्तर एक जैसा हो। यहाँ गणितिक तुलना की बात नहीं है। यहाँ संदेश पहुँचाने का मामला है। **केटफोर्ड** और **नाइडा** ने जो विचार रखे हैं, वे अभिव्यक्ति के स्तर पर तुलनीय हैं। मूल और अनुवाद की अभिव्यक्ति का भाषा तथा अर्थ के स्तर मिलान करते हैं। लेकिन नाइडा ने पाठ में निहित अर्थ को दोनों में तुलना कर देखा है, उसी प्रकार शैली पर गौर करते हुए तुलना करते हैं।

इसके अलावा डॉ. के.के. गोस्वामी ने सामाजिक-सांस्कृतिक सन्दर्भ, शैलीगत सौन्दर्य और पाठ की विशिष्ट भूमिका की बात उठाई है। अत: उन्हें पाश्चात्य चिन्तकों का वर्गीकरण स्वीकार्य नहीं होता। वे संशोधन करते हैं। शब्दानुवाद, आगत शब्द, शब्द निर्माण, क्रम परिवर्तन, रूपान्तरण, अनुकूलन, लिप्यंतरण, भावानुवाद आदि की भूमिका को स्पष्टत: स्वीकारते हैं। तद्नुसार समतुल्यता की चार विभिन्न स्तरों पर विचार करने की बात उन्होंने कही हैं-

1. भाषापरक समतुल्यता

यहाँ पर भाषा सामग्री को लेकर समतुल्यता निर्धारित होती है। स्त्रोत भाषा की तथा लक्ष्य भाषा की-

शब्द	और	शब्द
पदबंध		पदबंध
वाक्य		वाक्य

इन तीनों भाषायी इकाइयों में लक्ष्य भाषा के साथ तुलना पर निष्कर्ष निकाले जाते हैं। सबसे छोटी इकाई 'शब्दों' की है।

कुछ शब्दों का अनुवाद शब्द स्तर पर समतुल्य देख सकते हैं-

	हिन्दी	ओड़िया
Office	कार्यालय	कार्यालय
Production	उत्पादन	उत्पादन
Crowd	भीड़	भीड़
Sky	आकाश	आकाश

उपरोक्त में हिन्दी और ओड़िया दोनों अनुवाद समान हैं। अंग्रेजी से दोनों भाषाओं में अनुवाद कैसे समतुल्य हो रहा है, यह देखने योग्य है।

इसी प्रकार 'पदों' का रूपान्तरण भी समतुल्य देखा जा सकता है-

	हिन्दी	ओड़िया
Chief Justice	मुख्य न्यायाधीश	मुख्य न्यायाधीश
General manager	मुख्य प्रबंधक	मुख्य प्रबंधक
Government School	सरकारी विद्यालय	सरकारी विद्यालय
Armed Forces	सैन्य बल	सैन्य बल
Old Generation	पुरानी पीढ़ी	पुरुणा पीढ़ी

वाक्य स्तर पर समतुलनात्मकता विशेष महत्व रखती है।

I went home	मैं घर गया
This is his bag	यह उसका थैला है
Dowry is not abolishid in India	भारत से दहेज समाप्त नहीं हुआ।

अगर मुहावरेदार वाक्य आ जाते हैं तो लक्ष्य भाषा में कई बार मिल जाते हैं, कई बार उसी तरह के अन्य मुहावरों से काम चलाते हैं

Mind and Matter	जड़ चेतन
Leap and Bounds	रात दिन फलना फूलना
In long run	लम्बी अवधि में
Fall in love	प्रेम करना
To go to dogs	बर्बाद होना

मूल भाषा के गद्य, पद्य, कथा, नाटक आदि में भी यह बात शामिल है। इनकी शैली अनुदित कृति में मिलान कर देखना होता है।

2. शैली परक समतुल्यता

यहाँ पर अभिव्यक्ति की शैली का महत्व है। इसे अनुवाद में मिलाया जाता है।

(1) औपचारिक (2) अनौपचारिक (3) लिखित
(4) मौखिक (5) सामाजिक (6) प्रयुक्तिपरक।

ये छः शैलियाँ मुख्य मिलती हैं। ये शैलियाँ हर भाषा की अपनी-अपनी होती हैं। इसे लखनवी भाषा में 'अंदाज' कहा जाता है। कहने का कायदा या तरीका भिन्न-भिन्न होता है। अनुवादक में लक्ष्य में समान लहजा या शैली का प्रयोग किया जाता है।

	उर्दू	हिन्दी
जैसे-	तशरीफ लाइए	बैठिए, बिराजमान होइए
	कृपया पधारिए-	Please, come in.

गद्य-पद्य नाटकादि की शैलियों में से यहाँ एक कविता का उदाहरण देना उचित होगा।

प्रसिद्ध रुबाइयत ऊमर खय्याम/हरिवंश राय बच्चन ने उनके अंग्रेजी (फिटजिराल्ड कृत) अंश का हिन्दी रूप यहाँ प्रस्तुत है-

With me along some strip of Herbage strow
That just divides the desert from the sown.
While name of slave and sultan scarce is known
and pity sultian Mahamud on his throne.

इसका रूपपरक समतुल्य अनुवाद (नाइडा की भाषा में) यहाँ दिया जा रहा है-

"चलो चल कर बैठें उस ठौर,
बिछी जिस थल मखमल-सी घास।
जहाँ पर शस्य श्यामला भूमि
धवल मरु के बैठी है पास,
जहाँ कोई न किसी का नाथ,
भूपति महमूद सिहाए भाग,
जहाँ हमको यदि देखे साथ।"

यहाँ पर मूल लक्ष्य प्रभावोत्पादकता है। इस शैली में हिन्दी यह प्रदान करने में सक्षम है। एक कृति के कई तरह से अनुवाद प्रस्तुत करते हैं। शैली को लेकर यह विविधता आती है। हाँ अनुवादक के अनुभव, क्षमता और दृष्टि का प्रभाव भिन्न-भिन्न रूप देता है। इसी को मैथिलीशरण गुप्त, सुमित्रानन्दन पंत, केशव प्रसाद पाठक आदि के रूबाइयत के अनुवादों से मिलाकर भिन्नता देखी जा सकती है। शैली बदल रही है। मूल अर्थ और अभिव्यक्ति का आशय अक्षुण्ण रहता है। यह कविता में ज्यादा प्रयुक्त होता है। नाटक या कथा या निबन्ध में उतना स्पष्ट रूप नहीं बनता, क्योंकि कविता में कल्पनाशीलता बहुत अधिक होती है। भाषा में रचनाकार जितनी ऊँची उड़ान भरता, है, अनुवादक को लक्ष्य में उतना ही उड़ना पड़ता है।

परन्तु भाषाश्रयी पाठ का अनुवाद बहुत कठिन है। उपेन्द्रभंज का 'वेदेहीश विलास' राम कथा का रीति शैली में रचित महाकाव्य है। ये शब्द और उनके अर्थ वैचित्र्य का सौन्दर्य ओड़िया की विशेषता है। यहाँ छंद भी ओड़िया का अपना है। सिर्फ काव्य विश्वविश्रुत है। एक-एक छंद के कई अर्थ सम्भव हैं। उसी तरह बिहारी के दोहों में एक-एक शब्द के अर्थ बदल कर उन्हें भिन्न धरातल पर प्रस्तुत कर सकते हैं। अर्थात् भंज और बिहारी काव्य का संदेश अथवा कथ्य उनकी भाषा में पूरी तरह लिपटा, गूंथा है। ऐसी संश्लिष्ट जटिल और बहु स्तरीय भाषा का प्रयोग किया है कि अनुवादक एक अर्थ लेकर अनुवाद करे तो दूसरा काव्याशय छूट जाता है। ऐसे में अगर गद्यानुवाद करे तो उस शैली के किरच-किरच हो जाते हैं। सारे अलंकार और छंद के स्तर पर प्रयासों पर पानी फिर जाता है। लिप्यंतरण करने पर भी (चूँकि बहुत कुछ संस्कृतनिष्ठ अघौर समास परक छंदों का प्रयोग है) पाठक के लिए सम्प्रेषणीय नहीं हो पाता। "Poetry cannot Be translated".

काव्यानुवाद सम्भव नहीं। अगर करता है तो वह एक नया (अनुदित भाषा का) पाठ होता है। मूल को अनुवाद में दुहराया नहीं जा सकता। इस शैली से जो छंद क्षति होती है, वह अत्यन्त हास्यास्पद होती है। मूल की गरिमा, गंभीरता और गहनता को अक्षुण्ण रख पाना दुरुह होता है। ❑

3 अनुवाद के उपकरण एवं अनुवाद का सामाजिक-सांस्कृतिक सन्दर्भ

शब्दकोश

प्रश्न 14. अनुवाद का महत्वपूर्ण उपकरण 'शब्दकोश' को विस्तार से समझाइए।

अथवा

"अनुवादक के लिए शब्दकोश महत्वपूर्ण उपकरण है।" स्पष्ट कीजिए।

अथवा

(अ) एकभाषी शब्दकोश पर टिप्पणी लिखिए।

(ब) द्विभाषी शब्दकोश को विस्तार से समझाइए।

(स) विशेष विषयगत शब्दकोश को संक्षिप्त में लिखिए।

उत्तर-

अनुवाद और शब्दकोश

अनुवादक के लिए सबसे बड़ा सहायक उपकरण होता है- शब्दकोश। अनुवाद चाहे साहित्यिक पाठ का हो या तकनीकी, सभी अनुवादकों को अच्छे शब्दकोश की जरूरत महसूस होती है। शब्दों के पर्याय देने के साथ-साथ अच्छे शब्दकोश में स्वनिक लिप्यंकन (शब्द का उच्चारण), पर्याय, अर्थ अथवा दूसरी भाषा में पर्याय (शब्द-साधन) और व्युत्पत्ति भी दी जाती है। शब्द साधन का मतलब किसी शब्द से बनने वाले अन्य शब्द जैसे 'दोस्त' से 'दोस्ती' बना या 'उद्योग' से 'उद्योगीकरण'। व्युत्पत्ति का अर्थ है शब्द का मूल स्त्रोत अर्थात यह बताया जाए कि स्त्रोत शब्द किस धातु से बना है। अनुवादक को यह अच्छी तरह पता होना चाहिए कि कब कौन-सा कोश देखा जाए तथा किसी शब्द को कोश में कहाँ ढूँढा जाए। ध्यान में रखने वाली बात यह है कि शब्दकोश तैयार करने का कार्य निरन्तर जारी रहने वाला कार्य होता है। किसी भी जीती-जागती भाषा का शब्दकोश कभी भी निश्चित रूप से सम्पूर्ण नहीं कहा जा सकता है, क्योंकि समय के साथ-साथ पुराने शब्द बोलचाल की भाषा से लुप्त हो जाते हैं, नए शब्दों का विकास होता है और शब्दों के अर्थ भी लगातार बदलते रहते हैं, उनका अर्थ विस्तार तथा अर्थ संकोच होता रहता है। जैसे- हिन्दी के पद शब्द का अंग्रेजी के "Post" पर्याय के रूप में अर्थ विस्तार। अर्थ संकोच का एक उदाहरण है 'मृग' शब्द जिसका संस्कृत में अर्थ था पशु किन्तु हिन्दी में यह हिरन का पर्याय हो गया है। आधुनिक शब्दकोश कई मायनों में अनुशासनात्मक है, न कि वर्णनात्मक, क्योंकि वे भाषा के स्वरूप को बेहतर बनाने की कोशिश करते हैं। अनुवादक के लिए शब्दकोश सबसे महत्वपूर्ण उपकरण है चाहे वह एकभाषी हो या द्विभाषी या बहुभाषी।

1. एकभाषी शब्दकोश—आप सोच रहे होंगे कि अनुवाद तो एक भाषा से दूसरी भाषा में किया जाता है। यह दो भाषाओं के बीच होता है तो इसमें एकभाषी शब्दकोश की क्या जरूरत है या अनुवादक के लिए बहुभाषी शब्दकोश क्यों उपयोगी है। इस जिज्ञासा का समाधान आपको आगे मिलेगा।

शब्दों की परिभाषा और पर्याय/अर्थ एक ही भाषा में दिए जाते हैं। साधारणत: इन शब्दकोशों का संकलन उस भाषा विशेष के विशेषज्ञों की एक समिति द्वारा किया जाता है, जिसका यह परिणाम होता है कि अनुवादक को किसी भी शब्द के विश्वसनीय, उपयोगी, लगभग यथातथ्य

अर्थ और भावानुवाद उपलब्ध हो जाते हैं। एकभाषी कोश अनुवादक के लिए तब उपयोगी होता है, जब स्त्रोत भाषा के किसी शब्द के लक्ष्य भाषा में दिए गए पर्यायों के बीच अर्थ का अन्तर समझना हो। इससे अनुवादक को स्त्रोत भाषा को स्पष्ट रूप से समझने में मदद मिलती है।

एकभाषी शब्दकोश लेखक-केन्द्रित या पाठ-आधारित भी हो सकते हैं। इस तरह का एक कोश है- 'ब्रजभाषा सूरकोश'। लेखक-केन्द्रित शब्दकोश में किसी लेखक विशेष द्वारा प्रयोग किए गए शब्दों को संग्रहित किया जाता है। ऐसे शब्दकोशों से भी अनुवादक को बहुत मदद मिलती है, विशेष रूप से इसीलिए क्योंकि इनमें (किसी लेखक के सन्दर्भ में) शब्दों के निजी या विचलित प्रयोग भी मिल जाते हैं। हिन्दी के एकभाषिक कोशों की जानकारी आपको होनी चाहिए, क्योंकि अक्सर आप किसी विदेशी भाषा मुख्यत: अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद करते हैं। हिन्दी में ऐसे दो शब्दकोश हैं, जो आपके लिए उपयोगी हैं-

(1) बृहत हिन्दी कोश, कालिका प्रसाद, मुकुदी लाल श्रीवास्तव

(2) मानक हिन्दी कोश, (पाँच खंड) रामचन्द्र वर्मा।

2. द्विभाषी शब्दकोश—अनुवादक को द्विभाषी शब्दकोश की विशेष आवश्यकता होती है। यह अनुवाद का सबसे महत्वपूर्ण उपकरण है, जिसकी मदद से यह लक्ष्य भाषा में उपयुक्त शब्दों का चयन कर सकता है। स्त्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा के द्विभाषी शब्दकोश से अनुवादक का समय भी बचता है। स्त्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा के बीच यह पुल का काम करते हैं। मान लीजिए अनुवादक बांग्ला से हिन्दी में अनुवाद कर रहा है तो उसके लिए बांग्ला-हिन्दी शब्दकोश नितान्त आवश्यक है। इसी तरह अंग्रेजी से हिन्दी के अनुवादक के लिए अच्छी अंग्रेजी-हिन्दी शब्दकोश अनिवार्य उपकरण है। अंग्रेजी-हिन्दी के कई शब्दकोश उपलब्ध हैं। उनमें से कौन-सा बेहतर है तथा किस उद्देश्य के लिए कौन-सा देखा जाए यह अनुवादक को मालूम होना चाहिए। उसे यह भी अच्छी तरह पता होना चाहिए कि किसी शब्द को कोश में कहाँ ढूँढा जाए।

अनुवादक के पास शब्दकोश होना मात्र पर्याप्त नहीं है। उसे कोश का उपयोग आना चाहिए। साथ ही उसे कोश देखने का आलस नहीं करना चाहिए। जिन शब्दों के अर्थ उसे नहीं आते, उनके लिए तो वह कोश देखता ही है। अनुवाद सीखने की प्रक्रिया में उसे उन शब्दों के लिए भी कोश देखने की आदत डालनी चाहिए जिनका अर्थ उसे पता है।

आपके मन में सहज सवाल उठ सकता है भला इसकी क्या जरूरत? जब अर्थ पता है तो कोश क्यों देखा जाए। वास्तव में यही अच्छा अनुवादक बनने की कुंजी है। मान लीजिए आप जानते हैं कि references का अर्थ संदर्भ होता है तो यदि आप कोश नहीं देखते तो हमेशा reference का सही अनुवाद नहीं कर सकेंगे, जैसे यदि कहा गया है terms of reference और आप लिख देते हैं 'संदर्भ की शर्तें' तो यह बिल्कुल गलत होगा, क्योंकि वास्तव में terms of reference का अर्थ है- किसी बैठक आदि में 'विचारणीय विषय'। इसी तरह एक शब्द के अनेक पर्यायों में से कौन-सा चुना जाए, यह भी आपको तभी आएगा, जब कोश देखकर उसके विभिन्न पर्याय पता लगाएँगे और विचार करेंगे कि विषय, सन्दर्भ और प्रसंग की दृष्टि से कौन-सा पर्याय उपयुक्त होगा।

इसके अलावा भारतीय भाषाओं के बीच बहुत-सी ऐसी शब्दावली है, जो संस्कृत स्त्रोतों से आई है, किन्तु भिन्न-भिन्न भाषाओं में अलग-अलग अर्थों में प्रयुक्त होती है। उदाहरण के लिए, हिन्दी में 'सत्कार' का अर्थ होता है, 'आतिथ्य' जबकि बांग्ला में इसका अर्थ होता है 'अन्तिम संस्कार'। अब यदि आप बांग्ला-हिन्दी कोश न देखकर अपनी पूर्व जानकारी का सहारा लेंगे तो भयंकर भूल कर देंगे। अच्छे शब्दकोशों में बोलचाल के शब्द

और उसके अनुवाद भी दिए जाते हैं। इनसे अनुवादक को स्त्रोत भाषा के चलते हुए स्वरूप को समझने में सहायता मिलती है।

कोश में शब्द विशेष से बनने वाले शब्दों को भी शामिल किया जाता है, उनके पर्याय भी दिए जाते हैं। उनके व्याकरणिक रूप का उल्लेख होता है और उससे निर्मित व्याकरणिक रूप रचना का भी। जैसे एक संज्ञा शब्द है beauty। अब इससे विशेषण बना beautiful, क्रिया बनी beautify और beautify से फिर संज्ञा बनी beautification। अंग्रेजी-हिन्दी कोश में इसकी रूप रचना के साथ-साथ सभी व्याकरण रूपों के हिन्दी पर्याय (क्रमश: सौन्दर्य/सुन्दरता, सुन्दर, सुन्दर बनाना, और सौन्दर्यीकरण) भी दिए जाते हैं।

3. विशेष विषयगत शब्दकोश—सामान्य शब्दकोशों में- एकभाषी या द्विभाषी शब्दकोशों में- सामान्य तकनीकी और वैज्ञानिक शब्दावली को भी शामिल किया जाता है। इनके अतिरिक्त कुछ विशेष शब्दकोश ऐसे हैं, जो एक खास क्षेत्र से जुड़े हुए शब्दों की जानकारी देते हैं। ऐसे शब्दकोश व्यावसायिक अनुवादक के लिए बहुत मददगार साबित होते हैं। विशेष विषयगत शब्दकोश शब्दों का वह संकलन है, जो किसी विशेष क्षेत्र पर केन्द्रित होता है। इसके तीन प्रकार हैं- बहुक्षेत्रीय जो कई शब्दार्थ क्षेत्रों को सम्मिलित करता है, एक ही विषय पर केन्द्रित जैसे कि विधि-केन्द्रित या मानविकी केन्द्रित। इस तरह तैयार किया गया शब्दकोश 'glossary' शब्दावली/शब्द संग्रह भी कहलाता है। जैसे- 'Glossary of Legal terms', 'Glossary of Administrative terms'। इनमें कई बार विषय के अन्तर्गत उपक्षेत्र केन्द्रित कोश भी होते हैं। उदाहरण के लिए, 23 भाषाओं में उपलब्ध Interactive Terminology of Europe एक बहुक्षेत्रीय शब्दकोश है, 'American National Biography' एक ही विषय का शब्दकोश है, और 'African American National Biography Project' एक उपक्षेत्रीय शब्दकोश है।

आजकल हर महत्वपूर्ण, प्रांसगिक विषय के विशेष शब्दकोश है। जैसे 'ऑक्सफोर्ड मौसम शब्दकोश', 'ऑक्सफोर्ड संगीत शब्दकोश', 'चिकित्सा शब्दकोश', 'विधिक शब्दकोश' इत्यादि। कई बार अनुवादक को किसी विशेष क्षेत्र में प्रयोग किए जाने वाले शब्दों के स्पष्टीकरण की जरूरत महसूस होती है। ऐसे समय में विशेष शब्दकोश उपयोगी होते हैं। उदाहरण के तौर पर, 'Illustrated Oxford Dictionary' में accompany(y)list अर्थात् 'संगत' शब्द का अर्थ इस प्रकार दिया गया है- (1) साथ चलने वाला, (2) संगीत में- वाद्य यंत्रों का समूह जो किसी एकल वाद्य, या गायन या स्वर समूह का साथ दे। लेकिन इसी शब्द की परिभाषा 'Oxford Dictionary of Architecture' में दी गई है- 'Ornament of Ornamentation', ऐसा अलंकरण जो किसी अन्य अलंकरण की शोभा बढ़ाए, जैसे किसी इमारत का वास्तुकला का मूर्तिकला या चित्रकला से अलंकरण। इस तरह का अलंकरण वस्तुत: अलंकार्य से इतनी निकटता से संबद्ध होता है कि एक ही सुन्दरता दूसरे से सुशोभित होती है। ❑

थिसॉरस

प्रश्न 15. भाषिक कोशों में "थिसॉरस" महत्वपूर्ण है। स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'थिसॉरस' पर संक्षिप्त लेख लिखिए।

उत्तर-

थिसॉरस

थिसॉरस तथा पर्याय कोश, भाषिक कोशों में अत्यन्त म हत्वपूर्ण कहे जा सकते हैं।

'थिसॉरस' लेटिन शब्द है जिसका शब्दार्थ है, "खजाना" या "कोशागार"। ऑक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी में इसके और भी अर्थ दिए गए हैं, जिनमें से एक हैं- शब्दकोश या विश्वकोश जैसा ज्ञान भंडार। दूसरा अर्थ है- A colleaction of concepts or words arranged according to sense- "अर्थात् अवधारणा/संकल्पनाओं अथवा शब्दों का आशय के असार विन्यस्त संग्रह।" अमेरिका में इसका प्रयोग पर्याय तथा विपर्याय कोश के अर्थ में भी होता है। रॉजे के प्रसिद्ध **थिसॉरस** का उद्देश्य है- साहित्यिक अभिव्यक्ति को सहज तथा प्रभावी बनाने के लिए उपयुक्त शब्दों तथा मुहावरों का सुझाव। इसके लिए अवधारणाओं के अनुसार शब्दों को वर्गीकृत किया गया है और एक-सा ही अर्थ देते हुए प्रतीत होने वाले अनेक शब्दों को साथ-साथ न देकर केवल उनके विभिन्न प्रयोग समझाए गए हैं, बल्कि उनकी सूक्ष्म अर्थच्छायाओं पर प्रकाश डालते हुए उनके बीच का अन्तर भी समझाया गया है। हर शब्द की सूक्ष्म ध्वनि का परिचय देते हुए इसमें यह भी स्पष्ट कर दिया गया है कि एकार्थी प्रतीत होने वाले शब्द कैसे भिन्न-भिन्न अर्थ सन्दर्भों का वहन करते हैं और विशेष स्थिति में क्यों इनमें से कोई विशेष विकल्प ही अधिक उपयुक्त होता है।

कोई लेखक रचना के क्रम में एक कठिनाई का अनुभव अवश्य करता है। वह है दिमाग में आशय स्पष्ट होते हुए भी उसके उपयुक्त शब्द का न मिलना। शब्दकोश ऐसे में अपर्याप्त सिद्ध होता है क्योंकि एक उपयुक्त शब्द की खातिर पूरे ग्रंथ को छान मारना सम्भव नहीं होता। थिसॉरस में वह संबद्ध अवधारणा से जुड़े शब्दों पर विचार करके सही शब्द चुन सकता है। एक शब्द के कई विकल्प उपलब्ध होने के कारण वह आवश्यकतानुसार भिन्न शब्दों का प्रयोग करते हुए दोहराव से भी बच सकता है। अनुवादक को भी थिसॉरस के प्रयोग से ये सुविधाएँ मिल सकती हैं यदि थिसॉरस की भाषा अनुवाद में लक्ष्य भाषा हो तो उसमें वह विशेष अवधारणाओं के अन्तर्गत आने वाले शब्दों में सर्वाधिक उपुयक्त तथा सटीक शब्द का चुनाव कर सकता है। यदि थिसॉरस की भाषा अनुवाद में स्त्रोत भाषा है तो किसी शब्द का सही और परिशुद्ध अर्थ समझने में उसे इससे सहायता मिलती है। स्त्रोत भाषा के शब्द का अर्थ स्पष्ट होने पर उसके लिए अधिक सटीक अनुवाद करना सम्भव होता है।

थिसॉरस में पात्र प्रचलित और मानक शब्दों का ही नहीं चालू भाषा की शब्दावली, आद्याक्षर से बने शब्दों और चर्चाधीन शब्दों से बने मुहावरों का भी विवरण रहता है। इस प्रकार यह मौलिक तथा अनुवाद, दोनों ही प्रकार के लेखन कर्म में बहुत उपयोगी रहता है।

सहायक कोश—Roget's International Thesaurus, Oxford & India Book House Publishing Co. Pvt. Ltd., New Delhi. ❑

पारिभाषिक कोश

प्रश्न 16. पारिभाषिक कोश को विस्तार से समझाइए।

उत्तर-

पारिभाषिक कोश

पारिभाषिक कोश मात्र पारिभाषिक शब्दावली कोशों संग्रहों से भिन्न होते हैं। शब्दावली संग्रहों में विभिन्न विषयों तथा अनुशासनों से संबद्ध पारिभाषिक शब्दावली दी जाती है। पारिभाषिक शब्दकोश भी विषय विशेष की पारिभाषिक शब्दावली से ही जुड़े हुए होते हैं। ऐसे द्विभाषिक शब्द कोशों में एक भाषा में दी हुई पारिभाषिक शब्दावली के प्रतिशब्द दूसरी भाषा/भाषाओं में दिए जाते हैं किन्तु परिभाषा को समझाया भी जाता है। इसी प्रकार ये विषय

कोशों की श्रेणी में होते हुए भी उनसे कुछ भिन्न है। विषय कोशों में विषय से संबद्ध सिद्धान्तों, अवधारणाओं आदि की जानकारी दी जाती है। इस क्रम में पारिभाषिक शब्द तथा संबद्ध अवधारणाएँ दी जाती हैं, किन्तु परिभाषा कोश मूलत: शब्दकोश हैं और इनका पूरा बल विषय की जानकारी कराने पर नहीं, बल्कि पारिभाषिक शब्दावली की अवधारणा और उसके अभिधेय पर रहता है।

आप पूछ सकते हैं कि पारिभाषिक शब्द की अवधारणा को समझना क्यों आवश्यक है, जबकि शब्दों का अर्थ देना ही काफी है, पर यह बात आपके सामने कई बार आ चुकी है और अनुवाद अभ्यास के क्रम में स्वयं आपने भी कई बार महसूस किया होगा कि शब्दरूपी किसी ध्वनि समूह का कोई निर्विकल्प अर्थ नहीं होता। वास्तविक अर्थ पूरे संदर्भ में ही निर्धारित होता है। उदाहरण के लिए, हिन्दी से अंग्रेजी अनुवाद के क्रम में ध्वनि का अर्थ आप क्या देंगे ? सामान्य अर्थ है Sound किन्तु काव्यशास्त्रीय सन्दर्भ में यह अर्थ असंगत होगा। इसी प्रकार जयशंकर प्रसाद की कविता 'काली आँखों का अन्धकार' की पंक्ति अत्यन्त तिरस्कृत अर्थ सदृश का अनुवाद like extremely disclaimed meaning निश्चय ही नहीं होगा। 'अत्यन्त तिरस्कृत वाच्य' भारतीय काव्यशास्त्र की अवधारणा है। इसके विपरीत अंग्रेजी प्रतिशब्द के चुनाव के लिए आपके आगे इस अवधारणा का स्पष्ट रहना जरूरी है।

यहाँ आप फिर प्रश्न उठा सकते हैं कि इसके लिए कोश देखना क्यों जरूरी है? काव्यशास्त्र या इसी प्रकार अन्य विषयों के ग्रंथ भी इसमें सहायक हो सकते हैं। ठीक है, किन्तु ध्यान रखें कि अनुवादक को हर विषय का ज्ञान होना जरूरी है। इसलिए किसी भी विषय के सही ग्रंथ को उठाकर उसमें संबद्ध अवधारणा के बारे में पढ़ लेना इतना आसान नहीं है। पहले तो उसे आवश्यकतानुसार उपयुक्त ग्रंथ का पता लगाना होगा, फिर अवधारणा से संबद्ध भाग को पढ़ना होगा, जिसमें स्वाभाविक रूप से ही बहुत-सी ऐसी जानकारी भी शामिल होगी, जो वर्तमान प्रसंग में उसके लिए इतनी आवश्यक नहीं भी हो सकती है। अनुवाद कार्य की समय-सीमा को देखते हुए उसके लिए ऐसे ग्रंथ अधिक सहायक होंगे, जिनमें अधिक समय या शक्ति नष्ट किए बिना यह आवश्यक अनिवार्य जानकारी पा सके। इसी दृष्टि से बहुत मददगार होते हैं।

परिभाषा कोशों में भी शब्दों का वर्ण क्रमानुसार संयोजन होता है, ये एकभाषिक भी हो सकते हैं, जिनमें जिस भाषा का शब्द होता है, उसी भाषा में उसके विषय की जानकारी (उच्चारण, इतिहास, अर्थ, प्रयोग सन्दर्भ तथा आवश्यकतानुसार विभिन्न विद्वानों के मतामत तथा विवेचन आदि) रहती है। अनुवादक के लिए और भी उपयोगी ऐसे द्विभाषिक कोश होता है, जिनमें एक भाषा के पारिभाषिक शब्द के साथ उसका प्रतिशब्द तथा अन्यान्य जानकारी दूसरी भाषा में रहती है। उदाहरण के लिए-

Hypochondria (हाइपोकॉन्ड्रिया)- स्वकाय दुश्चिंता।

अपने स्वास्थ्य के बारे में विस्तृत चिन्ता-रोगी का यह भाव कि वह शरीर के रोग से पीड़ित है। दृष्टान्त के लिए यह सोचना कि उसे अनीमिया या क्षयरोग हो गया है, इत्यादि। यह कारण और आधारहीन होता है। वस्तुत: व्यक्ति शरीर से स्वस्थ होता है और यह उसकी कोरी कल्पना मात्र रहता है। एडलर के अनुसार यह अवस्था हीनत्व ग्रंथि के कारण होती है। इस मानसिक विकृत लक्षण को हटाने में मुक्त साहचर्य और संसूचन (Suggestion) की विधियाँ विशेष सफल सिद्ध होती हैं। **(मानविकी पारिभाषिक कोश, 'मनोविज्ञान खंड')**

एपिग्राफ : पुरालेख, सुभाषित।

व्युत्पत्ति की दृष्टि से इसका अर्थ है "पुरालेख" किन्तु कोई भी ऐसी उक्ति जो संक्षिप्त, सुष्ठु और चमत्कारपूर्ण हो सुभाषित कही जाएगी। इसमें और व्यंग्योक्ति में यह अन्तर है कि व्यंग्योक्ति मूलत: व्यंग्यात्मक ही होना चाहिए, इसका व्यंग्यात्मक होना अनिवार्य नहीं है।

(मानविकी पारिभाषिक कोश, 'साहित्य खंड')

आप देख रहे हैं कि इन उदाहरणों में न केवल अवधारणाओं को समझाया गया है, बल्कि मिलती-जुलती अवधारणाओं से इनका अन्तर भी स्पष्ट कर दिया गया है। दूसरे उदाहरण में दिए गए शब्दों के दो वैकल्पिक प्रतिशब्द तथा उनके सन्दर्भ भी स्पष्ट कर दिए गए हैं। इन सब बातों से अनुवादक के लिए इनकी उपयोगिता स्पष्ट है।

पुस्तकालयों में आपको दर्शन, साहित्य, धर्म, कला, विज्ञान आदि सभी विषयों से संबद्ध परिभाषा कोश, पारिभाषिक कोश मिल जाएँगे। सभी विषयों के ऐसे कोशों का उल्लेख इस पाठ की सीमा में सम्भव नहीं है। आपकी सुविधा के लिए यहाँ सामान्य रूप से उपयोगी कुछ कोशों का सुझाव दिया जा रहा है।

सहायक कोश

1-3. Encyclopedia of Humanities सम्पादक डॉ. नगेन्द्र, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन (दर्शन खंड, साहित्य खंड, मनोविज्ञान खंड)।

4. साहित्यशास्त्र का पारिभाषिक शब्दकोश, राजेन्द्र द्विवेदी, दिल्ली, आत्माराम एंड संस।

5. भाषाशास्त्र का पारिभाषिक शब्दकोश, राजेन्द्र द्विवेदी, दिल्ली, आत्माराम एण्ड संस।

6. साहित्यिक पारिभाषिक शब्दकोश, प्रो. महेन्द्र चतुर्वेदी तथा डॉ. तारकनाथ बाली, दिल्ली, बुक्स एंड बुक्स। ❑

विश्वकोश, कम्प्यूटर, इण्टरनेट

प्रश्न 17. विश्व कोश से आप क्या समझते हैं? स्पष्ट कीजिए।

अथवा

विश्व कोश पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर-

विश्व कोश

विश्व कोश का अंग्रेजी पर्याय है एनसाइक्लोपीडिया। विश्व कोश में विश्व के अनेक विषयों की जैसे- धर्म, संस्कृति, दर्शन, कला, इतिहास, भूगोल आदि की विस्तृत जानकारी दी जाती है। विश्व कोश चूँकि एक भाषा अथवा एक भाषा के निश्चित ज्ञान तक सीमित नहीं है इसलिए इसकी गणना भाषेतर कोशों में की जाती है। इसमें कोश के अनुसार वर्णानुक्रम का ध्यान रखा जाता है, ताकि किसी भी शब्द अथवा अवधारणा को सरलता से खोजा जा सके। किसी भी शब्दकोश का उद्देश्य दिए गए शब्द के उसी अथवा अन्य भाषा में अर्थ प्रदान करना होता है। इसी कारण वह सीमित भी होता है, जबकि विश्व कोश से तात्पर्य ऐसे कोश से है, जिसके अन्तर्गत किसी एक शब्द अथवा अवधारणा को विभिन्न दृष्टिकोणों से तथा व्यापक रूप में समझाया जाता है। अनुवादक चूँकि दूसरी ओर कई बार अपनी भाषा की संस्कृति, समाज और उससे जुड़ी विभिन्न अवधारणाओं से पूरी तरह परिचित नहीं होते। ऐसी

स्थिति में वे विश्व कोश की मदद से न केवल अर्थ की तह तक पहुँचते हैं, अपितु उसका उचित अनुवाद भी सम्भव हो पाता है।

उदाहरण-

1. Collin's Encyclopedia
2. Encyclopedia Britannica
3. हिन्दी विश्वकोश—नागरी प्रचारिणी सभा
4. समाज विज्ञान विश्व कोश- (संपा) अभय कुमार दुबे ❑

प्रश्न 18. कम्प्यूटर एवं इण्टरनेट शब्द कोश को संक्षिप्त में समझाइए।

अथवा

ऑनलाइन शब्दकोश पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

कम्प्यूटर

उत्तर-

आजकल कम्प्यूटर के बढ़ते उपयोग ने हमें अनेक सुविधाएँ दी हैं। आजकल कम्प्यूटरों में भी कामचलाऊ शब्दावली उपलब्ध होती है, जो अनुवादक सीधे ही कम्प्यूटर पर अनुवाद करते हैं, वे अपनी आवश्यकता के अनुरूप शब्दावली को कम्प्यूटर में फीड कर सकते हैं, जब जरूरत हो इसका उपयोग कर सकते हैं।

अंग्रेजी के कम्प्यूटर शब्द से बने 'कम्प्यूटर' (Computer) का अर्थ होता है- 'गणना या गिनती करना।' आधुनिक विज्ञान की अचंभित और चौंका देने वाली उपलब्धि तथा सौगात के रूप में कम्प्यूटर ने सम्पूर्ण धरती को बेशक, विश्वग्राम और गुलाबी गाँव के रूप में बदल दिया है। उसने मनुष्य की हर चुनौतियों को हल करने का ढाढ़स दिया है, जो काम महीनों में नहीं हो पाते थे, इसके माध्यम से अब पलक झपकते हो रहे हैं। तार्किक शक्ति से लबरेज कम्प्यूटर वैज्ञानिक शोध, व्यापार, सम्प्रेषण, शिक्षा, यातायात नियंत्रण, अन्तरिक्ष, चिकित्सा, उद्योग, पुस्तकालय-संग्रहालय, प्रकाशन, फिल्म-निर्माता में मनुष्य के लिए वरदान बना ही था, भाषाओं के अनुवाद के क्षेत्र में भी इसने अपनी पैठ बनाकर सबको चकित कर दिया है, इसने विभिन्न भाषाओं को बरतने वाले लोगों के बीच अनुवाद के माध्यम से अपरिचय के संगिस्तान और जड़ता को तोड़ दिया है।

अब भाषा की दुर्बोधता के कारण आपस में कोई अनचिन्हार नहीं रह गया है। कम्प्यूटर रूपी जीवंत और प्रामाणिक दुभाषिया सामने खड़ा है। फटाफट अनुवाद हुआ नहीं कि संवाद शुरु कीजिए। सूचना क्रान्ति या सूचना-विस्फोट के इस आधुनिक दौर में कम्प्यूटर का यही बहुआयामी प्रयोग है। अनुवाद के माध्यम से इसने सम्पूर्ण धरती को आपके दरवाजे खड़ा कर दिया है।

पुरानी लीक से हटकर अनुवाद अब मौखिक तथा लिखित-इन रूपों में होने लगा है। कम्प्यूटर मौखिक अनुवाद की तुलना में लिखित रूप में होने वाले अनुवाद में सहायक होता है। इस प्रक्रिया में अलग-अलग भाषा-भाषियों के लिए पृथक् रूप से भाषाओं की श्रृंखलाएँ तैयार की जाती हैं। प्रत्येक विभिन्न भाषा-भाषियों को इन श्रृंखलाओं से सम्बद्ध कर दिया जाता है। हर श्रोता अपने पास सुनने का दूरभाष रखता है। वे भाषण देने वाले को सुनते हैं और अपने इसी दूरभाष से उसका अनुवाद करते हैं। अंग्रेजी से हिन्दी में कम्प्यूटर अनुवाद की दो नई प्रणालियाँ अलग-अलग सिद्धान्तों पर आधारित है। 'शिव' प्रणाली में अनुवाद पूर्व संकलित उदाहरणों के आधार पर किया जाता है। इसके विपरीत 'शक्ति' प्रणाली में व्याकरण को अनुवाद का आधार बनाया गया है।

इन प्रणालियों को कर्नेजी मैलॉन यूनिवर्सिटी (अमेरिका), इण्डियन इन्स्टीट्यूट ऑफ साईन्स, बंगलूर और इन्टरनेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ इन्फार्मेशन टेक्नालॉजी- हैदराबाद ने संयुक्त रूप से निर्मित किया है। यद्यपि कुछ लोग कहते हैं कि इन प्रणालियों के परीक्षणों से सन्तोषजनक अनुवाद नहीं पाया गया, लेकिन इस तरह का दावा प्रणाली का विकास करने वालों ने स्वत: कतई नहीं किया। हाँ, इन वैज्ञानिकों का कहना है कि अनुवाद को पूरी तरह शुद्ध बनाने के लिए इन्सानी सम्पादन आवश्यक है। उल्लेखनीय है कि इससे पूर्व इण्डियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नालॉजी, कानपुर के वैज्ञानिकों के एक दल ने तथा कुछ स्वतंत्र लोगों ने अनुवाद का सॉफ्टवेयर विकसित कर लिया है।

भारत सरकार द्वारा किए जा रहे प्रयास—कम्प्यूटर द्वारा अनुवाद व कम्प्यूटरों में हिन्दी में काम करने के लिए कम्प्यूटरों के सॉफ्टवेयर विकास हेतु भारत सरकार राजभाषा विभाग का तकनीकी निशालय भी प्रयासरत् हैं। इस सम्बन्ध में अधिक जानकारी के लिए इस पते पर सम्पर्क किया जा सकता है- निदेशक (तकनीकी) कक्ष राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय, आठवीं, मंजिल, बी, ब्लॉक पर्यावरण भवन केन्द्रीय कार्यालय परिसर लोदी रोड, नई दिल्ली-3, यहाँ से देवनागरी में यांत्रिक सुविधाओं पर नि:शुल्क पत्रिका भी निकाली जाती है जिसे 'परिदृश्य' के नाम से निकाला जाता है। यह अच्छी सूचनाप्रद पत्रिका है।

अन्य, सीमित अनुवाद की व्यवस्था के लिए आज अनेक कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर कम्पनियाँ भी बहुत अच्छा कार्य कर रही हैं।

इण्टरनेट या ऑनलाइन शब्दकोश

इण्टरनेट ने ऑनलाइन शब्दकोशों के रूप में अनुवादकों को एक अन्य उपकरण भी उपलब्ध करा दिया है। ऑनलाइन शब्दकोश से अभिप्राय है, इण्टरनेट पर उपलब्ध शब्दकोश। ऐसे शब्दकोश एकभाषी भी होते हैं और द्विभाषी भी। किसी शब्दकोश की वेबसाइट में जाकर आवश्यक शब्द टाइप करने पर उसके अर्थ सामने आ जाते हैं। इस तरह ऑनलाइन शब्दकोश का लाभ यह है कि अनुवादक को अपने साथ शब्दकोश रखना नहीं पड़ता है। ऐसे शब्दकोशों का जल्दी-जल्दी नवीनीकरण भी होता रहता है, जबकि पारम्परिक शब्दकोशों का नवीनीकरण उनके नए संस्करण के प्रकाशित होने पर ही हो पाता है। कुछ भाषाओं के तो ढेरों ऑनलाइन शब्दकोश इण्टरनेट पर उपलब्ध है। जहाँ तक अंग्रेजी-हिन्दी या हिन्दी-अंग्रेजी ऑनलाइन कोशों की बात है, अभी इस दिशा में जो काम हुआ है, वह सीमित ही कहा जा सकता है। पारिभाषिक शब्दावली के ऑनलाइन कोशों का तो लगभग अभाव ही है। कुल मिलाकर यही कहा जा सकता है कि हिन्दी के ऑनलाइन द्विभाषी कोश अनुवादक के लिए सीमित रूप में ही मददगार हो सकते हैं।

हिन्दी के ऑनलाइन शब्दकोशों की कुछ वेबेसाइटों के नाम इस प्रकार हैं-

1. http://www.google.com/translate-dict
2. http//www.shabdakosh.com/
3. http//www.hinkhoj.com/
4. htp://www.efitt.iiitf.ac.in/
5. http/www.shabdakosh.com./shabdanjali

ऑनलाइन शब्दकोशों का काम निरन्तर चल रहा है। ऐसे शब्दकोशों की अभिवृद्धि हो रही है और पहले से उपलब्ध शब्दकोशों में निरन्तर संशोधन भी हो रहा है। ❑

समाज, संस्कृति एवं अनुवाद के अन्तर्सम्बन्ध

प्रश्न 19. समाज, संस्कृति एवं अनुवाद के अन्तर्सम्बन्ध पर प्रकाश डालिए।

उत्तर- **समाज, संस्कृति एवं अनुवाद का अन्तर्सम्बन्ध**

किसी भी संस्कृति के विकास में भाषा और साहित्य का बड़ा योगदान होता है। साहित्य के द्वारा सामाजिक और सांस्कृतिक मान्यताओं की अभिव्यक्ति होती है और सामाजिक तथा सांस्कृतिक मानकों की स्थापना भी होती है। भाषा ही मानव चेतना की अभिव्यक्ति का माध्यम है। भाषा का संस्कृति के साथ संश्लिष्ट सम्बन्ध है, क्योंकि भाषा मनोभावों की अभिव्यक्ति का माध्यम होने के कारण संस्कृति का अंग होती है और उसे निरूपित भी करती है। अतः भाषा और साहित्य का विकास संस्कृति के विकास का एक बड़ा कारक होता है।

जब दो संस्कृतियाँ टकराती हैं, भाषा दोनों के बीच सामंजस्य स्थापित करने में सहायता का काम करती है। दो भिन्न समाजों द्वारा बोली जाने वाली भाषाएँ एक-दूसरे को इस प्रकार प्रभावित करती हैं कि दोनों का रूप ही बदल जाता है। यह निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है, जो सभी भाषाओं को कम या ज्यादा प्रभावित करती है। किसी भी भाषा का रूप सदा एक-सा नहीं रहता। दूसरी भाषाओं के प्रभाव से उसमें निरन्तर बदलाव आता रहता है।

भारत में इस्लाम के आगमन के पश्चात् भारतीय और अरबी संस्कृति के टकराव से जब दोनों संस्कृतियाँ एक-दूसरे के निकट आईं तो एक-दूसरे की भाषा समझना अनिवार्य था। मुसलमान भारत में बस गए और दोनों जातियाँ एक-दूसरे को समझने लगीं। भारत में अरबी-फारसी का बोलबाला होने लगा। इस प्रकार भारत में बोली और लिखी जाने वाली भाषाओं में अरबी और फारसी भाषाओं के शब्दों का प्रवेश हुआ। फारसी से हिन्दी एवं संस्कृत में तथा हिन्दी और संस्कृत से फारसी में अनुवाद होने लगे। इन्हीं अनुवादों के द्वारा दो संस्कृतियों के पारस्परिक सम्पर्क से एक ऐसा भाषा रूप विकसित हुआ, जो आगे चलकर उर्दू के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस उर्दू भाषा में फारसी शब्दों की भरमार थी। आरम्भिक उर्दू और हिन्दी में इतना ही अन्तर है कि उर्दू में फारसी शब्दों का और हिन्दी में तत्सम शब्दों का बाहुल्य है। धीरे-धीरे उर्दू और हिन्दी दोनों अलग-अलग भाषाओं के रूप में विकसित हुई। दोनों की अपनी-अपनी साहित्यिक महत्ता स्थापित हुई।

इस बीच भारत का सम्पर्क यूरोपीय संस्कृति से हुआ। सोलहवीं शताब्दी में अनेक यूरोपीय देशों ने भारत के साथ व्यापार शुरु किया और यहाँ अपने उपनिवेश कायम किए। फलस्वरूप हिन्दी भाषा अंग्रेजी, फ्रांसीसी, पुर्तगाली आदि भाषाओं से प्रभावित हुई और उसमें उन भाषाओं के शब्दों का प्रचलन बढ़ा। हिन्दी और संस्कृत ग्रन्थों का यूरोपीय भाषाओं में और यूरोपीय भाषाओं (विशेषकर अंग्रेजी और फ्रांसीसी भाषाओं) के ग्रन्थ का हिन्दी में अनुवाद हुआ।

स्पष्ट है कि भारतीय संस्कृति और हिन्दी भाषा दोनों का विकास दो चरणों में समान्तर रूप से हुआ। उन्नीसवीं सदी के मध्य में जब राजा लक्ष्मण सिंह ने संस्कृत से 'शकुन्तला' नाटक का अनुवाद किया, वह मुगल शासन का अवसानकाल था। उस समय प्रचलित राजकीय भाषा फारसी का भारतीय रूप 'रेख्ता' या 'उर्दू' थी। उस समय तक खड़ी बोली को व्यापक लोक भाषा अथवा साहित्य भाषा का रूप प्राप्त नहीं हो सका था। ऐसी स्थिति में राजा साहब ने ब्रजभाषा को ही अपने अनुवाद का माध्यम बनाया। उनका अनुवाद ब्रजभाषा काव्य का बहुत ही सुन्दर रूप प्रस्तुत करता है, लेकिन आज का कवि 'अभिज्ञान शाकुन्तलम' के अनुवाद के लिए ब्रजभाषा को न चुनकर खड़ी बोली को चुनेगा, क्योंकि आज खड़ी बोली ही साहित्य की

भाषा है। यह बात केवल हिन्दी पर ही लागू नहीं होती। अन्य भाषाओं का रूप भी समय के साथ बदलता रहता है। इसलिए क्लासिक साहित्य के अनुवाद में यह समस्या रहती है कि प्रत्येक युग में उसका अनुवाद उस समय प्रचलित साहित्यिक और मानक भाषा में करना पड़ता है। होमर के प्राचीन ग्रीक भाषा में लिखे गए साहित्य को समझने में आज के ग्रीक-भाषी पाठकों को कठिनाई आ सकती है। इसलिए उसका आधुनिक ग्रीक में अनुवाद करना आवश्यक हुआ।

इंग्लैण्ड में शेक्सपियर और चौसर के काल में बोली और लिखी जाने वाली अंग्रेजी भाषा जिस रूप में विकसित हुई थी, उसका भी अपना अलग इतिहास है। जर्मनी, फ्रांस, रोम, ग्रीस आदि अनेक देशों की संस्कृतियों और भाषाओं के प्रभाव से ही उसका वह रूप विकसित हुआ था। तब से अंग्रेजों की विकास यात्रा रूकी नहीं है और वह जिस रूप में आज लिखी और बोली जाती है, वह शेक्सपियर और चौसर के काल की अंग्रेजी से भिन्न है। इस बीच अंग्रेजी भाषा और उसको बोलने और लिखने वालों का सम्पर्क विश्व की अनेक संस्कृतियों और भाषाओं से हुआ और इस कारण अंग्रेजी के स्वरूप में तद्नुसार परिवर्तन आया। इतना ही नहीं, विश्व के अनेक देशों में अंग्रेजी साम्राज्य की स्थापना के बाद से अंग्रेजी का प्रसार अमेरिका, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड आदि देशों में हुआ। इनमें से अधिकांश देशों में अंग्रेजी को आज भी राजभाषा का दर्जा प्राप्त है। इन देशों के लोगों ने अंग्रेजी को सीखकर उसे अपने तरीके से लिखना और बोलना शुरू किया। इस प्रकार उन देशों में अंग्रेजी अलग-अलग रूप में विकसित हुई और प्रत्येक देश का अपना ही अंग्रेजी साहित्य विकसित हुआ। इस तरह अंग्रेजी भाषा और साहित्य के अनेक रूप विकसित हुए। आज भारत में बोली और लिखी जाने वाली अंग्रेजी उस अंग्रेजी से भिन्न है, जो इंग्लैंड या अमेरिका में बोली और लिखी जाती है।

उसमें न केवल भारतीय भाषाओं के अनेक शब्द समाविष्ट हुए हैं, बल्कि भारतीय संवेदना, भारतीय जीवन-स्थितियों को अभिव्यक्त करने वाली भाषिक छवियों का भी समावेश हुआ है। भारतीय भाषाओं से अंग्रेजी में अनुवाद करने वाले भारतीय अनुवादकों के सामने यह समस्या आती है कि जिस प्रकार की अंग्रेजी भाषा में वे अनुवाद करते हैं वह इंग्लैण्ड और अमेरिका के निवासियों को विदेशी भाषा सी लगती है, क्योंकि आज की भाषा का मुहावरा बिल्कुल भिन्न है। भारत में आज भी विशेष रूप से प्रशासनिक क्षेत्र में बहुत हद तक उस तरह की अंग्रेजी भाषा लिखी और बोली जाती है, जो विक्टोरिया के जमाने में प्रचलित थी। इस बीच इंग्लैण्ड और अमेरिका में अंग्रेजी का स्वरूप बहुत बदल चुका है।

इसके अतिरिक्त भारतीयों द्वारा लिखी जाने वाली अंग्रेजी का मुहावरा उनकी अपनी संस्कृति से भी प्रभावित होता है। भारतीय अंग्रेजी लेखकों ने अंग्रेजी भाषा में भारतीय जीवन और संस्कृति से जुड़े अनेक शब्द इस्तेमाल किए हैं, क्योंकि उनके लेखन की सेटिंग भारत में है। अनुवाद करते समय भी उनकी भाषा में भारतीय संस्कृति से जुड़ाव मौजूद रहता है। साहित्य अकादमी द्वारा हिन्दी कविताओं के अनुवाद के लिए एक कार्यशाला 1990 में दिल्ली में आयोजित की गई, जिसमें अनेक कवियों और अनुवादकों के अतिरिक्त आयोवा विश्वविद्यालय के विद्वान और अनुवादक डेनियल वीसबोर्ट ने भी भाग लिया था। इस कार्यशाला के दौरान यह तथ्य सामने आया कि भारतीय विद्वानों ने हिन्दी कविताओं के अनुवाद जिस अंग्रेजी भाषा में किए उसे डेनियल बीसबोर्ट नहीं समझ पाए। इसका कारण भारतीय समाज और संस्कृति से उनकी दूरी थी। ये कविताएँ भारतीय संवेदना की कविताएँ थीं। उनकी अंग्रेजी में प्रस्तुति करते हुए भी अनुवादक ने उस संवेदना को कायम रखा था। ऐसे में बीसबोर्ट की कठिनाई स्वाभाविक थी। ❑

4 विभिन्न क्षेत्रों में अनुवाद की समस्याएँ एवं समाधान

कार्यालयीन अनुवाद

प्रश्न 20. कार्यालयीन अनुवाद से आप क्या समझते हैं? कार्यालयीन अनुवाद की समस्याएँ एवं उनके समाधान के सुझाव दीजिए।

अथवा

कार्यालयीन हिन्दी के अनुवाद में किन तथ्यों का ध्यान रखना चाहिए? बताइए।

उत्तर-

कार्यालयीन अनुवाद

कार्यालयीन अनुवाद भी अनुवाद का महत्वपूर्ण पक्ष है। राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) के प्रावधान के अनुसार भारत सरकार के केन्द्रीय कार्यालयों के समस्त कार्यकलाप हेतु द्विभाषीकरण की व्यवस्था की गई है, अर्थात् केन्द्र सरकार के अधीन आने वाले कार्यालयों एवं बैंकों इत्यादि हेतु समस्त सरकारी कामकाज हिन्दी तथा अंग्रेजी दोनों भाषाओं में किए जाने चाहिए। यह प्रथम दृष्ट्या हिन्दी विरोधी कदम प्रतीत होता है, क्योंकि इसमें अंग्रेजी को हिन्दी के समकक्ष अथवा उससे बढ़कर प्राथमिकता दी गई है, लेकिन यदि दूसरे दृष्टिकोण से देखें तो इसने अनुवाद के माध्यम से ही सभी कार्यालयों में हिन्दी की पहुँच को सम्भव बनाया है, जिसकी आज से 75 साल पहले कल्पना भी नहीं की जाती थी। हालाँकि यह भी सच है कि द्विभाषीकरण के कारण कार्यालयों की भाषा के रूप में हिन्दी दोयम दर्जे की भाषा बनकर रह गयी है, लेकिन यह भी सच है कि इसके लिए कार्यालयों में राजभाषा के प्रचार-प्रसार हेतु नियुक्त हिन्दी अनुवादक, राजभाषा अधिकारी, सहायक निदेशक, उपनिदेशक आदि भी उत्तरदायी हैं, क्योंकि कई बार दोषपूर्ण तथा हास्यास्पद अनुवादों के कारण इन्होंने हिन्दी अनुवाद की जगहँसाई कराने का काम किया है।

उदाहरण के लिए, एक विदेश स्थित एक कार्यालय में 'Male changing room' का अनुवाद '**पुरुष बदलने का कक्ष**' कर दिया गया, जिससे अर्थ का अनर्थ हो गया। ऐसा ही हिन्दी से अंग्रेजी में किया गया एक अन्य अनुवाद एक हवाई अड्डे पर लिखा दिखा, जिसमें '**फर्श पर खाना सख्त मना है**' हेतु 'Eating carpet strictly prohibited' लिखा था, जो असंगत ही नहीं मूर्खतापूर्ण और हास्यास्पद भी है। इसी तरह से 'Air conditioned waiting room' का '**हवा की स्थिति इंतजार कर रहे कमरे**' जैसा फूहड़ अनुवाद भी एक कार्यालय में देखा गया। इसका खामियाजा अक्सर कार्यालयों में हिन्दी का विरोध करने वाले अधिकारी-कर्मचारी उठाते हैं और इस बहाने से वे अंग्रेजी को भारत की जनता पर थोपे रखने को जायज ठहराते हैं। ऐसे फूहड़ अनुवाद प्रायः सन्दर्भ एवं मन्तव्य को न समझ पाने तथा भाषा की प्रकृति का सम्यक ज्ञान न होने के परिणामस्वरूप होते हैं।

कार्यालयीन अनुवाद, साहित्यिक तथा वैज्ञानिक एवं तकनीकी अनुवाद से भिन्न होता है। इसमें संक्षिप्तता, सुस्पष्टता तथा सरलता अपरिहार्य होती है। कार्यालयीन अनुवाद में प्रयुक्त किए जाने वाले पारिभाषिक शब्द भी कार्यालय के स्वरूप तथा कार्यप्रणाली के अनुरूप भिन्न होते हैं। उदाहरणार्थ- रेलवे की शब्दावली बैंकिंग या डाकघर में प्रयुक्त होने वाली शब्दावली

से भिन्न होगी। इसका ध्यान न रखने पर कार्यालयीन अनुवाद गलत हो सकते हैं। जैसे- डाक विभाग की शब्दावली में 'Post' के लिए '**डाक**' शब्द प्रयुक्त होगा, जबकि रक्षा विभाग में इसे '**चौकी**', अन्य शुद्ध प्रशासनिक कार्यों में आवश्यकतानुसार '**पद**' और '**उत्तर**' अथवा '**पश्च**', विद्युत विभाग में '**खम्भा या स्तम्भ**', पत्रकारिता में '**समाचार पत्र**', अन्यत्र आवश्यकतानुसार '**घोषणापत्र लगाना**' '**चिपकाना**', '**डाकघर में पत्र छोड़ना**', '**तेजी से यात्रा करना**', '**विज्ञापन निकालना**', '**भेजना**', '**प्रकाशित करना**', '**प्रचार करना**', '**दर्ज करना**', '**नियुक्त या तैनात करना**', '**खाते में प्रविष्ट करना**', '**ब्यौरा देना**' आदि का प्रयोग होगा।

कार्यालयीन अनुवाद की दूसरी समस्या यह है कि उसमें विषय अथवा पत्र के स्वरूप के अनुसार भाषा का चयन किया जाता है। जो भाषा आदेश की होगी, वह अर्द्ध-सरकारी पत्र की नहीं हो सकती। इसलिए आवश्यकता इस बात की होती है कि तदनुरूप अनुवाद की भाषा भी रहे। अनेक बार अंग्रेजी के शब्दों की ध्वनि हिन्दी अथवा भारतीय भाषाओं हेतु वही नहीं होती, जैसी होनी चाहिए। जैसे अंग्रेजी में प्रयुक्त किए जाने वाले शब्द 'You' के लिए हिन्दी में 'तुम' शब्द का प्रयोग किया जाना शिष्टाचार की दृष्टि से अवांछित कहा जाएगा।

कार्यालयीन अनुवाद में मौलिकता अथवा साहित्यिकता का आग्रह नहीं होना चाहिए, क्योंकि कार्यालय के पत्राचार का लक्ष्य आम जनता तक अपनी बात पहुँचाना होता है न कि अपनी विद्वता अथवा साहित्यिक दृष्टि का परिचय देना। इसलिए कार्यालयीन अनुवाद में क्लिष्टता और भाषायी विशिष्टता को दोष माना जाता है। अतः अनुवाद करते समय इस बात का भरसक प्रयास किया जाना चाहिए कि वह आम जनता को समझ में आ सकने वाली भाषा में किया जाए। दुर्भाग्य की बात यह है कि अनुवादक अपने साहित्यिक कौशल का परिचय देने के फेर में अक्सर अत्यधिक क्लिष्ट और संस्कृतनिष्ठ शब्दावली से युक्त अनुवाद कर देते हैं, जिसका अर्थ न समझ पाने के कारण कई बार अनुवाद से प्राप्त किया जाने वाला लक्ष्य धूमिल हो जाता है। जैसे- 'Invigilator' शब्द के लिए साधारण रूप से '**निरीक्षक**' शब्द का प्रयोग किया जा सकता है, किन्तु इसके लिए अनावश्यक रूप से **प्रेक्षक, परिप्रेक्षक, अनुप्रेक्षक, अन्वीक्षक** जैसे शब्द प्रयोग किए जा रहे हैं, जिससे आम जनता को अर्थ समझने में कठिनाई का अनुभव होता है।

कार्यालयीन अनुवाद में एक समस्या क्षेत्रगत व्यवहार की आती है। अंग्रेजी के एक शब्द के लिए भारत के एक प्रदेश में कोई शब्द प्रचलन में है तो उसी शब्द को दूसरे प्रदेश में किसी अन्य शब्द से व्यवहृत किया जा रहा है। उदाहरण के लिए, अंग्रेजी के 'Engineer' शब्द हेतु उत्तर प्रदेश में '**अभियन्ता**' शब्द प्रचलन में है तो मध्यप्रदेश में उसे '**यंत्री**' के नाम से सम्बोधित किया जाता है, जबकि अन्य कई प्रदेशों में इसे **यंत्रवेत्ता, अभियांत्रिक** कहा जाता है। इसी प्रकार 'Limited' शब्द हेतु '**मर्यादित**' शब्द का प्रयोग मध्यप्रदेश तथा छत्तीसगढ़ में किया जाता है, जबकि अन्यत्र प्रायः इसे लिमिटेड ही लिखा जाता है। ऐसे में अनुवादक दुविधा में पड़ जाता है कि वह किस शब्द को ले।

कार्यालयीन अनुवाद में इसी भाँति वर्तनी की समस्या भी आती है। उदाहरण के लिए, अंग्रेजी के 'Railway' शब्द हेतु उत्तरप्रदेश, बिहार में '**रेलवे**' शब्द प्रचलन में है तो मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ तथा महाराष्ट्र आदि प्रदेशों में इसके लिए '**रेल्वे**' शब्द लिखा जाता है।

कार्यालयीन अनुवाद हेतु उपयुक्त शब्दावली चयन का आधार वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा प्रकाशित पारिभाषिक शब्दावली कोश माने जाने चाहिए, किन्तु यदि

इनमें उपयुक्त शब्द न मिले तो प्रयास यही किया जाना चाहिए कि निकटतम सुस्पष्ट अर्थ देने वाले सरलतम शब्द का प्रयोग किया जाए। यदि ऐसा किया जाना सम्भव न हो तो अंग्रेजी अथवा किसी भी विदेशी भाषा के शब्द को हू-ब-हू लिप्यंतरण कर इस्तेमाल में लाया जाए, बशर्ते उससे अर्थ समझने में आसानी होती हो। यदि इसमें दिक्कत आए तो हू-ब-हू लिखने के पश्चात् कोष्ठक में इसके अर्थ को स्पष्ट किया जा सकता है। समग्रत: कहा जा सकता है कि अनुवाद भविष्य का वह 'एडहेसिव' है, जिससे दुनिया को न सिर्फ जोड़ा जा सकता है, वरन् एक-दूसरे की संस्कृति, रहन-सहन, आचार-व्यवहार को भी परखा जा सकता है। इक्कीसवीं सदी के पिछले दो दशकों में हुए प्रौद्योगिकीय विकास और ई-माध्यमों के बढ़ते प्रयोग से वर्तमान समय में हम एक समय में एक से अधिक लोगों के साथ सम्पर्क में रह सकते हैं, मशीनी अनुवाद के माध्यम से अपरिचित भाषा को बोलने वाले व्यक्ति से संवाद भी कर सकते हैं और एक बेहतर दुनिया के स्वप्न को साकार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

कार्यालयीन अनुवाद की समस्याओं का समाधान

अत: ऐसी स्थिति में हमें चाहिए कि प्रशासनिक अनुवाद के लिए जो भाषा इस्तेमाल की जाय, उसके सम्बन्ध में सामान्य धारणा यह होती है कि वह बिल्कुल सही अभिप्राय को व्यक्त करे, उसमें बात को सीधे ढंग से अभिव्यक्त किया जाए, और वह सर्वसाधारण के लिए सुग्राह्य हो। नए पारिभाषिक शब्द जहाँ भी क्लिष्ट लगते हों, वहाँ उसका प्रचलित मूल रूप भी देना व्यावहारिक दृष्टि से आवश्यक होता है। डॉ. माणिक मृगेश भी सलाह देते हैं कि कार्यालयीन अनुवाद में औपचारिकता से बचना चाहिए। अनुवादकों को अपनी समझ के अनुसार शब्दों का चयन कर लेना चाहिए। कई बार शब्दकोशों में दिए गए अर्थों के अलावा भी दूसरे शब्दों का प्रयोग करना पड़े तो करना चाहिए। जितना हो सके, सटीक अनुवाद किया जाए। मितव्ययिता बरती जानी चाहिए। अनुवादक या हिन्दी अधिकारी चाहें तो विषय वस्तु के अनुसार शब्दों का निर्माण कर सकते हैं। नए शब्द गढ़ सकते हैं। ❑

वाणिज्यिक अनुवाद

प्रश्न 21. वाणिज्यिक अनुवाद का क्या तात्पर्य है?

अथवा

वाणिज्यिक अनुवाद की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- वर्तमान युग अर्थ या आर्थिक युग है। लोगों ने कहा भी है बाप भला ना भइया- सबसे बड़ा रुपइया। आज धन-वैभव या अर्थ भगवान का दूसरा रूप है। अर्थ प्रधान युग में वाणिज्य या व्यापार प्रमुख है। लोगों ने लिखा है-व्यापारे वसति लक्ष्मी: अर्थात्, व्यापार या वाणिज्य में लक्ष्मी का निवास है। व्यापार एवं व्यवसाय के अनेक या असंख्य साधन हैं। व्यवसाय के लिए विश्व में अनेक कारखाने, व्यापारी समुदाय या कम्पनियाँ, यातायात, औषधि या स्वास्थ्य सेवाएँ, सभी कुछ इसके अन्तर्गत आता है। यहाँ तक कि शिक्षा एवं धर्म भी व्यवसाय बन गया है। शिक्षा की लाखों संस्थाएँ आज व्यावसायिक बन गई हैं। सभी दूर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों की धूम मच गई है। ये पाठ्यक्रम व्यावसायिक, शिक्षा, तकनीकी शिक्षा, प्रौद्योगिकी शिक्षा, इंजीनियरिंग शिक्षा, कम्प्यूटर शिक्षा, होटल व्यवस्था शिक्षा इत्यादि अनेक पाठ्यक्रमों में इस शिक्षा का बोलबाला है। महाविद्यालय, विश्वविद्यालय इनका संचालन करते हैं। भारत में एवं विदेशों में स्थित हिन्दी भाषा-भाषियों के लिए वाणिज्यिक शिक्षा अत्यन्त

महत्वपूर्ण है एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी हिन्दी बहुत महत्वपूर्ण है। उसके लिए हिसाब या एकाउण्ट, पत्र व्यवहार, लेनदेन सभी कुछ हिन्दी में होता है। यह कार्य अनुवाद के माध्यम से ही होता है। बहुत बड़ी-बड़ी संस्थाओं में भी अब हिन्दी का प्रयोग हो गया है। अत: उनमें अनुवाद के माध्यम से ही कार्य होता है। भारतीयों द्वारा विदेश में स्थापित व्यापारिक संस्थाओं द्वारा अनुदित हिन्दी का प्रयोग होता है तो विदेशों की लाखों व्यावसायिक संस्थाएँ भारत से व्यापार करती हैं एवं करना चाहती हैं। ऐसी स्थिति में हिन्दी का ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है। ये संस्थाएँ अपने कार्य हेतु अनुदित हिन्दी का प्रयोग करते हैं एवं पत्र व्यवहार करते हैं यह अनुवाद कई बार अत्यन्त रोचक होता है। हर भाषा का कुछ न कुछ प्रभाव सम्बन्धित अनुवाद पर पड़ता है एवं उन भाषाओं से प्रभावित हिन्दी का प्रभाव इनके पत्राचार एवं संचार व्यवस्था में पड़ता रहता है। तात्पर्य यह है कि वाणिज्यिक अनुवाद की भी कोई सीमा नहीं है। देश-विदेश की बहुसंख्यक वाणिज्यिक संस्थाओं में अनुदित हिन्दी का प्रयोग होता है। वाणिज्यिक विषय के लिए अनेक पुस्तकों का प्रकाशन भी हुआ है। विदेशी वाणिज्यिक पुस्तकों का प्रकाशन भी हिन्दी में अनुवाद के द्वारा हुआ है। आज संचार के साधनों ने समस्त विश्व को छोटा या एक बना दिया है। यह सब भाषा के माध्यम से ही होता है। भाषाओं में हिन्दी अत्यन्त महत्वपूर्ण है तो निश्चय ही वाणिज्य में अनुवादित हिन्दी का प्रयोग अवश्यंभावी है। ❑

प्रश्न 22. वाणिज्यिक अनुवाद की प्रमुख समस्याओं का वर्णन करते हुए उनके समाधान भी बताइए।

उत्तर-

वाणिज्यिक अनुवाद की समस्याएँ

1. अर्थ के अनर्थ की समस्या—वाणिज्यिक अनुवाद में विषयवस्तु के सम्प्रेषण के साथ-साथ साधारण आदमी की भाषा को प्रयोग किया जाता है, कभी-कभी विषयगत और भाषा की प्रकृति की जानकारी के अभाव में अनुवादक अर्थ का अनर्थ कर बैठता है। अत: इसमें भावानुवाद की पद्धति को अपनाते हुए निहित अर्थ को सम्प्रेषित करना चाहिए। जैसे कि 'Charge the bill against his account' का अनुवाद 'बिल को उसके खाते के विरुद्ध प्रभारित करें' किया जाए तो अर्थ का अनर्थ हो जाएगा। इसका अनुवाद होना चाहिए- बिल उसके खाते में से प्रभारित करें। वाणिज्य साहित्य के अनुवाद में कभी-कभी Negotiable instrument, Preference share, Banking principle, Bucket shop, Bull regging जैसे विशिष्ट शब्दावली का शब्दानुवाद करने पर अर्थ का अनर्थ होने की सम्भावना बनी रहती है।

2. भाषा की सहजता एवं बोधगम्यता की समस्या—वाणिज्यिक क्षेत्र के अनुवाद को सफल बनाने के लिए भाषा की सहजता एवं बोधगम्यता एक आवश्यक गुण है, क्योंकि इसका प्रयोग आम आदमी को बार-बार करना पड़ता है, परन्तु इस प्रकार के अनुवाद में कभी-कभी शब्दों की सूचनात्मकता एवं पारिभाषिकता भाषा की सहजता में रुकावट पैदा करती है। अनुवादक को चाहिए कि वह इस तरह की समस्या सामने आने पर फुटनोट में टिप्पणियाँ देते रहे, ताकि अर्थ का अनर्थ भी न हो और पाठक को उसका अर्थ भी समझ में आ जाए। इसके लिए अनुवादक को लक्ष्य भाषा में समकक्ष और प्रचलित शब्दों का प्रयोग करना चाहिए ताकि आम यूजर को समझने में आसानी हो।

3. संक्षिप्ताक्षरों की समस्या—वाणिज्यिक साहित्य एवं उसके अनुवाद में संक्षिप्ताक्षरों का प्रयोग आम बात है। इस क्षेत्र से जुड़े लोगों को प्राय: इन पर निर्भर रहना पड़ता है, अत:

अनुवादक को इनका अनुवाद करने में सावधानी रखना आवश्यक हो जाती है, क्योंकि आवश्यक नहीं कि लक्ष्य भाषा में वही संक्षिप्ती प्रचलित हो।

4. वाणिज्य-शब्दावली के अनुवाद की समस्या—वाणिज्य शब्दावली में अनेक पारिभाषिक शब्दों के अनुदित रूपों का प्रयोग किया जाता है, जिसके कारण कभी-कभी अस्पष्टता एवं संदिग्धता जैसी समस्या उत्पन्न हो जाती है। इसके लिए अंग्रेजी के बहुप्रचलित शब्दों का लिप्यन्तरण करते हुए ही उनका प्रयोग करना व्यावहारिक दृष्टि से उपयुक्त है।

5. वाणिज्य-शब्दावली में अनेकरूपता की समस्या—इस प्रकार के अनुवाद में कभी-कभी एक ही मूल शब्द के लिए हिन्दी में अनेक पर्याय उपलब्ध होने के कारण अनेकरूपता की समस्या उत्पन्न हो जाती है, इसलिए अनुवादक को मानक शब्दों का प्रयोग करना चाहिए, किन्तु ऐसा करते समय एकरूपता का ध्यान रखना चाहिए।

6. लिप्यन्तरण की समस्या—वाणिज्य अनुवाद में व्यक्ति, वस्तु, स्थान, पद, संकल्प आदि के नाम के अनुवाद की अपेक्षा लिप्यन्तरण ही लिया जाना चाहिए। एक भाषा के शब्द अथवा संज्ञा के लिए दूसरी भाषा में पर्याय उपलब्ध न होने की स्थिति में लिप्यन्तरण ही एकमात्र उपाय है।

7. हिन्दी की प्रवृत्ति के अनुकूल शब्दावली—कभी-कभी अनुवाद के दौरान पूरे वाक्य-खण्ड का अनुवाद हिन्दी के एक शब्द में सम्भव होने की स्थिति में अनुवादक को हिन्दी की प्रकृति का पूरा-पूरा ध्यान रखना चाहिए।

वाणिज्यिक अनुवाद में आने वाली समस्याओं के समाधान हेतु सुझाव

वाणिज्यिक अनुवाद से सम्बन्धित निम्न बिन्दुओं पर ध्यान दिया जाए तो कठिनाइयों का उपशमन कुछ हद तक सम्भव हो सकता है। चूँकि बैंकों में पत्र-व्यवहार, फॉर्म, लेखन, नियम, दस्तावेज आदि सभी में अंग्रेजी का ही प्रयोग होता रहा है, अत: यहाँ हमें सुकर-सुघर, सरल-सहज हिन्दी का प्रयोग करना चाहिए। पत्र, प्रलेख और रिपोर्ट का हिन्दी अनुवाद बहुत ध्यान से करना चाहिए। अनुवादक को बैंकिंग विषय का प्रचुर-बोध होना चाहिए। बैंक में कार्मिक निरीक्षण, लेखा-विभाग, विवरण तथा ऋण आदि विभागों द्वारा समय-समय पर पत्र-परिपत्र जारी किए जाते हैं, सो इनके अनुवाद में बहुत सजगता बरतनी चाहिए। इसी तरह मूल भाषा, लक्ष्य भाषा का ज्ञान, उपयुक्त शब्दों का चयन ठीक-ठीक करना चाहिए। हिन्दी पाठ मात्र अंग्रेजी पाठ की नकल न हो। कठिन शब्दों के प्रयोग से बचना चाहिए। शब्दावलियों मे एकरूपता होनी चाहिए।

इसी तरह बीमा कार्यालयों में हजारों फॉर्म, वाउचर, बैंक स्टेटमेंट, प्रीमियम रजिस्टर, बैंक गारंटी, पॉलिसी अलाटमेंट, रजिस्टर से सम्बन्धित अनुवाद पर बहुत बारीकी से ध्यान देना चाहिए। **डॉ. रेखा रानी सिंह** इस प्रकार के अनुवाद से सम्बन्धित समस्याओं पर हमारा ध्यान आकर्षित करते हुए कहती हैं कि अंग्रेजी के पारिभाषिक शब्दों के हिन्दी पर्यायों में एकरूपता का अभाव भी एक समस्या है। 'डिपॉजिट' के लिए कोई 'जमा' का प्रयोग करता है तो कोई 'निक्षेप' का 'हाइपोथेकेशन' के लिए 'दृष्टिबंधक' और 'आड़मान'- दोनों शब्दों का प्रयोग किया जाता है। 'सब्सिडी' के लिए एक ही कार्यालय में 'अनुदान', 'उपदान', 'परिदान', 'आर्थिक सहायता', तथा 'इमदाद' आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है। 'Fixed deposit' के लिए कहीं 'सावधि जमा' तो कहीं 'मियादी जमा' का प्रयोग किया जाता है। इसी तरह 'Regional Office' के लिए कहीं 'क्षेत्रीय कार्यालय' तो कहीं 'प्रादेशिक कार्यालय' का प्रयोग किया जाता है। अत: हमें इनके द्वैध प्रयोगों से बचना चाहिए। ❑

वैज्ञानिक एवं तकनीकी अनुवाद

प्रश्न 23. वैज्ञानिक एवं तकनीकी अनुवाद का क्षेत्र एवं परिभाषा दीजिये।

अथवा

वैज्ञानिक एवं तकनीकी अनुवाद का आशय समझाइये।

उत्तर- अनुवाद के विभिन्न क्षेत्रों में विज्ञान वर्तमान युग में सबसे गहरा और महत्वपूर्ण हो गया है। शिक्षा के प्राथमिक स्तर से विज्ञान पाठ्यक्रम का अंग है। प्रौढ़ शिक्षा के ग्रन्थों में भी लोकप्रिय शैली में विज्ञान की सामग्री रहती है। शिक्षा के उच्चतम स्तर तक विज्ञान की पढ़ाई अब व्यापक रूप से चलती है।

विज्ञान की शिक्षा की बात कहते ही अंग्रेजी सर्वशक्तिमान होने की बात कई लोग कहते हैं। मगर वे यह भूलते हैं कि संसार के अनेक देशों में वैज्ञानिक हुए हैं और उन्होंने अपने देश की भाषा में वैज्ञानिक निष्कर्ष लिखे हैं। यह सही है कि ऐसे ग्रन्थों का अनुवाद अंग्रेजी में मिलता है। अंग्रेजी इस अनुवाद से सुपुष्ट हो सकी है। किसी भी भाषा का वैज्ञानिक साहित्य अनुवाद से धनी बनता है।

सरसरी दृष्टि से कहा जा सकता है कि अनुवाद रचना प्रधान है। विज्ञान के सिद्धान्त, तथ्य, आविष्कार, प्रयोग, प्रयोग-विधि आदि का विवरण ही विज्ञान में प्राप्त होता है। शुद्ध वैज्ञानिक ग्रन्थों में कल्पना की गुंजाइश नहीं है। द्वयार्थता का अलंकार आदि की भी बात नहीं उठती। स्त्रोत भाषा की सामग्री को लक्ष्य भाषा में ईमानदारी से और वैज्ञानिक शब्दों से प्रस्तुत करना ही विज्ञान के अनुवादक का काम है। यह प्रथम दृष्टि में सरल लगता है। पर अनुवाद कार्य शुरू करते ही कठिनाइयाँ भी शुरू होती हैं। वैज्ञानिक साहित्य में सामान्य अर्थवाची शब्द कम रहते हैं और तकनीकी शब्दावली अधिक। जो तकनीकी हैं इनको हम इच्छानुसार नये-नये पर्यायवाची शब्दों से अनुदित नहीं कर सकते। अपनी लक्ष्य भाषा के वैज्ञानिक ग्रन्थों या तकनीकी शब्दकोषों में दिए हुए हैं। पर्यायवाची तकनीकी शब्दों का ही प्रयोग करना पड़ता है। वैज्ञानिक क्षेत्र की उक्तियाँ (रजिस्टर) बड़ी संख्या में हैं।

वैज्ञानिक शब्दों का क्षेत्र—वैज्ञानिक शब्दों में कुछ ठोस वस्तुओं के नाम हैं। कुछ क्रियाओं और संकल्पनाओं का बोध कराते हैं। उनका सूक्ष्म बोध कराने वाले शब्दों से ही अनुवाद करना चाहिए। पारिभाषिक शब्दावली के प्रसंग पर इन शब्दों का विस्तृत विवेचन किया जा चुका है। जो पाठक स्त्रोत भाषा, विज्ञान-ग्रन्थों से सुपरिचित हैं उन्हें उनकी भाषा, शब्दावली आदि सरल लगते हैं। परन्तु एक नई भाषा में उसके अपरिचित वैज्ञानिक पारिभाषिक शब्दों में अनुवाद किया जाता है तो वह प्रारम्भ में कठिन व दुरूह-सा लग सकता है। यह अनिवार्य है। अभ्यास करते-करते अनुदित सामग्री भी मूल भाषा की सामग्री की तरह परिचित हो जाएगी। जैसे—हमारे संचार माध्यमों के सम्पर्क से अब तापमान (Temperature), परमाणु ऊर्जा (Electronic Energy), उपग्रह (Setellite) आदि अनुदित शब्द हमारे लिए सुपरिचित हो गए हैं। ❑

प्रश्न 24. वैज्ञानिक अनुवाद के प्रसंग एवं क्षेत्र का वर्णन कीजिए।

उत्तर- वैज्ञानिक सामग्री के अनुवाद के अनेक प्रसंग होते हैं। शिक्षा क्षेत्र की बात कह चुके हैं। विज्ञान विज्ञान के परिचित क्षेत्र के नये-नये ग्रन्थों, शोध-पत्रों का अनुवाद होता है। विज्ञान का प्रतिदिन मानो विस्फोट होता जा रहा है। अनेक नयी विज्ञान शाखाओं का विकास होता है। नये वैज्ञानिक सिद्धान्तों एवं प्रयोगों का आविष्कार होता है। प्रत्येक प्रगति प्रेमी देश के

वैज्ञानिक अन्य भाषाओं अन्य भाषाओं में प्रकाशित होने वाले ऐसे ग्रन्थों का तुरन्त अनुवाद करना चाहते हैं। ऐसे हालात में नये पारिभाषिक शब्द गढ़ने की समस्या उठती है। इतनी तेजी से मानक पारिभाषिक शब्दावली का गठन कठिन है। तब सूझ-बूझ से अनुवादक नये शब्द गढ़ते हैं या स्त्रोत भाषा के शब्दों को अनुकूलन प्रक्रिया से कुछ परिवर्तित करके काम चलाते हैं। बाद में विद्वानों, विशेषज्ञों की मंडलियाँ नये विषयों की शब्दावली गढ़ती है।

ऊपर जैसा प्रसंग बनाया गया वह शैक्षणिक और ज्ञानवर्द्धक दृष्टि का है। इसके अलावा व्यापार, सुरक्षा और प्रतियोगिता की दृष्टि से वैज्ञानिक सामग्री का बड़ी मात्रा में अनुवाद अब संसार के विभिन्न देशों में करते हैं। जैसे—एलोपैथी के औषध निर्माता आयुर्वेद ग्रन्थों का अनुवाद कराते हैं ताकि उनसे औषधि निर्माण प्रक्रिया की कुछ नई चीजें मिलें। इसी तरह विदेशी यंत्र और तकनीक की सहायता लेने वाले देशी कारखाने विदेशी भाषा में लिखी तकनीकी सामग्री का अनुवाद अपनी भाषा में आवश्यक समझते हैं। यह जिज्ञासा व्यापार, उद्योग आदि की प्रतियोगिता के कारण भी होती है। प्रत्येक देश दूसरे देशों से टक्कर लेना तो चाहता ही है। सुरक्षा के क्षेत्र में प्रत्येक देश अपने अस्त्र-शस्त्र बना लेता है। उसे अन्य देशों के अस्त्र-शस्त्रों की तकनीक का ज्ञान अनिवार्य है। इसमें निश्चित रूप से अनुवाद आवश्यक होता है। सुरक्षा के लिए अत्यन्त सूक्ष्म वैज्ञानिक सामग्री चाहिए। यों विज्ञान की सामग्री के अनुवाद का क्षेत्र दिन दुगुना रात चौगुना विस्तृत होता जा रहा है।

आधुनिक विज्ञान विभिन्न देशों में विविध दिशाओं में विकास करता जा रहा है। जैसे अमेरिका और रूस नाभिकीय शस्त्रास्त्रों के आविष्कार में एक-दूसरे से होड़ करते रहते हैं। जापान इलैक्ट्रानिक्स के क्षेत्र में संसार में अग्रणी बनना चाहता है। स्पष्ट है कि इन देशों के वैज्ञानिक अपनी-अपनी ही भाषा में वैज्ञानिक शोध एवं प्रयोग की बातें लिखते हैं। जब दूसरे देशों के लोगों को इन तथ्यों का अनुवाद अपनी भाषा में करवाते हैं। ❑

प्रश्न 25. वैज्ञानिक सामग्री का अनुवाद सामान्य अनुवाद से भिन्न है। समीक्षा कीजिए।

उत्तर- वैज्ञानिक सामग्री का अनुवाद सामान्य लेखन के अनुवाद से कहीं भिन्न प्रकार का और कठिन है। इस पर डॉ. गोपाल शर्मा ने यों प्रकाश डाला है— "भाषा का मूल आधार सामान्यीकृत संकल्पना है। वृक्ष, नदी, मनुष्य, गाय आदि यह प्रत्यक्षों से (Perception) छनकर संकल्पना (Concept) का रूप लेती है।"

विज्ञान की भाषा पीछे चलती है संकल्पना से प्रत्यक्ष की ओर। विज्ञान की प्रत्येक भाषा वस्तुजगत् के एककोणीय प्रत्यक्षों का सिलसिला है। यह आम आदमी की नजर से अलग है। इसलिए आम आदमी की भाषा से विज्ञान की भाषा भिन्न है। किसी आविष्कर्ता की भाषा तो आरम्भ में व्यक्ति भाषा रही होगी और फिर क्रमशः प्रयुक्ति या भाषा-प्रयोग का प्रकार (रजिस्टर) बनी होगी।

अलग-अलग विज्ञान और तकनालॉजी के अलग-अलग रजिस्टर होते हैं। कभी तो कई शब्द विभिन्न विज्ञानों में विभिन्न अर्थों में प्रयुक्त होते हैं। उदाहरण—

Bank- Physics व्यूह. पुंज	Direct-Maths, सरल सीधा, ऋजु
Geology तट, किनारा,	Physics प्रत्यक्ष, समक्ष
Commerce बैंक	Fixed यौगिकीकृत, संयुक्त
Commission-Maths दलाली, कमीशन	स्थिर, निश्चित, नियत,
Administration—आयोग	अवाष्पशील बद्ध

इस तरह से विज्ञान की शब्दावली संकर होती है। सुविधा के लिए उन्हें तकनीकी शब्दावली कह सकते हैं। विज्ञान के लेख में साहित्य की ध्वनि, अलंकार, लक्षणा आदि नहीं होते। इसलिए तकनीकी शब्दावली का सम्यक् ज्ञान हो और उनका अनुवाद हो सके तो वैज्ञानिक सामग्री का अनुवाद सरलता से हो सकेगा।

वैज्ञानिक लेख का अनुवाद एक बड़ी समस्या है। आधुनिक पश्चिमी भाषाओं में जो आधुनिक विज्ञान विकसित हुआ है। उसने प्रारम्भ में ग्रीक एवं लैटिन के तकनीकी शब्दों को स्वीकार किया। उन शब्दों से जरूरत के अनुसार नये शब्द निष्पन्न किए। वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्द विकसित होते-होते अत्यन्त स्पष्टार्थ और विशिष्टतम हो जाते हैं। विशिष्टतम का अर्थ परिसीमित होता है। इन प्रश्नों की गठन कभी यौगिक प्रवृत्ति के आधार पर की जाती है, कभी किसी व्यक्ति, स्थान आदि का स्मरण कराने के लिए तो कभी यदृच्छा सम्बन्ध से। कभी कुछ शब्दों के आद्यक्षरों का संग्रह किया जाता है। उदाहरण—न्यूक्लियर एनर्जी (Nuclear Energy), पोलोनियम (Polonium), रमन इफैक्ट (Raman Effect), बी.सी.जी. (B.C.G.)

जब ऐसी वैज्ञानिक सामग्री का अनुवाद करना है तब पहले ढूँढना पड़ता है कि लक्ष्य भाषा में पहले से तैयार अनुदित शब्दावली कहाँ मिलती है। चूँकि आधुनिक विज्ञानों का विकास पश्चिमी देशों में हुआ है इसलिए उनकी तकनीकी शब्दावली भी उन्हीं की भाषाओं में सुलभ है। अनेक भारतीय भी वहीं जाकर या वहाँ की भाषाओं के माध्यम से वैज्ञानिक विषय सीखकर लौटे हुए हैं। इसलिए आधुनिक भारतीय भाषाओं में इन विद्वानों के ग्रंथों का अनुवाद अपने साथ-साथ तकनीकी शब्दावली के निर्माण से भी जुड़ा है।

विदेश में भी सभी भाषाओं में नवीनतम वैज्ञानिक सामग्री का नियमित रूप से अनुवाद चलता रहता है। वे अपनी ही भाषा में अपना वैज्ञानिक लेखन करते जाते हैं। भारत में अभी तक अंग्रेजी को ही ज्ञान-विज्ञान के आदान-प्रदान का माध्यम स्वीकार करते रहे हैं। भारतीय भाषाओं में लेखन व अनुवाद एक अतिरिक्त सेवा का ही स्थान प्राप्त कर सका है। यह भी कारण है कि तकनीकी भाषा के अनुवाद की गति धीमी है। ❑

प्रश्न 26. वैज्ञानिक एवं तकनीकी लेख के पक्षों का वर्णन कीजिए।

उत्तर- वैज्ञानिक एवं तकनीकी लेख के अनुवाद के दो पक्ष होते हैं—

1. शुद्ध तकनीकी अनुवाद।

2. लोकप्रिय अर्धतकनीकी की अनुवाद—जो संक्षेपण या रूपान्तरण तक हो जाता है। विज्ञान की दृष्टि से विकसित भाषाओं में तकनीकी शब्दावली प्रचुर मात्रा में मिलती है। उनका प्रयोग करना ही अनुवादक का काम है। लेकिन विकासशील भाषाओं में तकनीकी शब्दावली विकसित नहीं रहती। वहाँ अनुवादक को तकनीकी शब्दों का अनुवाद खुद करना पड़ता है। साथ ही अनुवाद से निकलने वाला समवेत अर्थ भ्रामक होना नहीं चाहिए। अगर अनुवादक अपनी इच्छानुसार तकनीकी शब्दों का अनुवाद करते हैं तो दूसरों को अर्थबोध नहीं होता। जहाँ तक हिन्दी का सम्बन्ध है, तकनीकी शब्दावली के अनुवाद के विषय में एक विलक्षण और अवांछनीय स्थिति भी है। जिस प्रकार प्रजातंत्रवादी शासन व्यवस्था में बहुत से नागरिक पद-पद पर शासन के कानूनों को चुनौती देते हैं, उसी प्रकार विज्ञान व तकनालाजी के क्षेत्र में लेखक समीक्षक भी हो जाते हैं। लेखक को प्राप्त शब्दों का प्रयोग करना चाहिए। समीक्षकों का अलग वर्ग अपनी गोष्ठियों में इन नवगठित शब्दों पर विचार करके नये शब्द गढ़ सकता है, गढ़ना भी पड़ेगा। मगर लेखक, लीक से हटकर मनमाने शब्द चलावें तो अव्यवस्था होगी। ❑

प्रश्न 27. वैज्ञानिक एवं तकनीकी अनुवाद के स्वीकृत सिद्धान्तों को समझाइए।

उत्तर- ये सिद्धान्त निम्नलिखित हैं—

1. वैज्ञानिक व तकनीकी लेखन में जो अन्तर्राष्ट्रीय चिह्न स्वीकृत हैं उन्हें ज्यों-का-त्यों स्वीकार किया जाए।

2. अन्य भाषाओं से यों स्वीकृत शब्दों का प्रयोग वाक्यों में करते समय लक्ष्य भाषा की प्रकृति के अनुसार उनका अनुकूलन करना चाहिए।

3. तकनीकी भाषा की संकररूपता या विलक्षणता से घबराना नहीं चाहिए।

4. जहाँ वैज्ञानिक सामग्री का लोकप्रिय प्रस्तुतीकरण हो वहाँ लक्ष्य भाषा में प्रचलित अर्धतकनीकी शब्दों का प्रयोग किया जा सकता है।

5. आधुनिक विज्ञान के अनुवाद के दौरान विदेशी शब्द और तत्सम प्रत्यय, विदेशी भारतीय शब्दों की समास व्यवस्था आदि की जरूरत पड़ेगी। यह साहित्य या भाषायी शुद्धि के प्रेमियों को खटक सकता है। उनके भय से यदि भ्रमजनक और ढीली भाषा का प्रयोग किया जाए तो वैज्ञानिक अर्थबोध नहीं हो पाएगा।

6. जो अन्तर्राष्ट्रीय संज्ञाएं हैं, उन्हें केवल लिप्यंतरण करके भाषा में लाया जाए।

संक्षेप में—1. विज्ञान और साहित्य का ध्येय भिन्न-भिन्न है।

2. विज्ञान में शब्दार्थ का स्पष्ट व विशिष्ट बोध महत्व का है।

साहित्य संवेदना-प्रधान है। लक्षणा-व्यंजना आदि से वह पाठक के मन को प्रभावित करता है।

3. वैज्ञानिक भाषा-शैली या सौन्दर्य का ध्यान नहीं रखता।

साहित्यकार के लिए भाषा का सौन्दर्य भी भाव-सौन्दर्य की तरह महत्वपूर्ण है।

4. संवेदना और भाषा-लेखन की सामान्य कुशलता रखने वाले लोग साहित्यिक सामग्री का अनुवाद कर सकते हैं।

विज्ञान की विकासशील धाराओं में खास धारा का विशेषज्ञ ही उस धारा की सामग्री का अनुवाद ठीक तरह से कर सकता है। ❑

प्रश्न 28. वैज्ञानिक एवं तकनीकी अनुवाद की समस्या का वर्णन कीजिए तथा इन समस्याओं के समाधान के सुझाव दीजिए।

उत्तर-

वैज्ञानिक एवं तकनीकी अनुवाद की समस्या

1. वैज्ञानिक ग्रन्थों के अनुवाद की समस्या—वैज्ञानिक साहित्य तथ्यपरक होता है। अत: इसके अनुवादक की समस्या अधिक जटिल होती है। इसके लक्ष्य भाषा की प्रकृति तथा संरचना को अक्षुण्ण रखते हुए अधिकांशत: शब्दानुवाद का सहारा लिया जाता है। इस प्रकार के अनुवाद में मुख्य समस्या होती है- संकल्पनात्मक शब्दों के अनुवाद की। वैज्ञानिक सूत्रों, संकेताक्षरों एवं अन्तर्राष्ट्रीय शब्दावली का प्रयोग वैज्ञानिक अनुवादकों को बहुधा करना पड़ता है। अन्य तरह के पारिभाषिक शब्दों के निर्माण एवं अनुकूलन वैज्ञानिक तकनीकी अनुवाद की सबसे बड़ी समस्या है। अपने देश में शब्दावली निर्माण का कार्य प्रारम्भ है, परन्तु समस्या का समाधान अभी नहीं हो सका है। आज भी विशिष्ट वैज्ञानिक तकनीकी विषयों के अनुवाद की समस्या है। इस प्रकार के अनुवाद में बोधगम्यता और स्पष्टता की समस्या अभी पर्याप्त है।

2. पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण एवं एकरूपता की समस्या—विज्ञान, तकनीकी और प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में अनुवाद के लिए पारिभाषिक शब्दावली का होना अति आवश्यक हैं। मूल भाषा में निहित वैज्ञानिक तकनीकी अथवा प्रौद्योगिकी सामग्री को लक्ष्य भाषा

में अनुदित करने के लिए उसका पारिभाषिक शब्दावली से सम्पन्न होना अति आवश्यक है। अपने देश में अभी ऐसी पारिभाषिक शब्दावली की रचना नहीं हुई है। डॉ. आलोक कुमार रस्तोगी के अनुसार, "विज्ञान सम्बन्धी शब्द-भण्डार की कोई विज्ञानगत परम्परा नहीं है और विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी दोनों बौद्धिक जीवन में दूसरी भाषा के माध्यम से आए हैं। इसमें अधिकतर यही कोशिश की गई है कि विदेशी भाषा के शब्दों को थोड़े परिवर्तन या संशोधन के साथ स्वीकार कर लिया जाये या उन्हें ज्यों-का-त्यों अपना लिया जाये।"

पारिभाषिक शब्दावलियों की संरचना का कार्य विश्व की भाषाओं में बड़ी तेजी से चल रहा है, किन्तु उनमें एकरूपता का अभाव है। उदाहरण के लिए, छात्रों को विभिन्न स्तरों पर विज्ञान तकनीकी प्रौद्योगिकी सम्बन्धी अध्ययन के लिए जो पाठ्य-पुस्तकें उपलब्ध करायी जाती हैं, उनमें एक ही शब्द अलग-अलग अर्थों में प्रयुक्त मिलता है, जैसे- 'Heat' शब्द का अनुवाद कहीं उष्णता, तो कहीं ऊष्मा है। एकरूपता का अभाव दुविधा की स्थिति उत्पन्न कर देता है।

3. विषय विशेषज्ञ की समस्या—विज्ञान, तकनीक तथा प्रौद्योगिकी अनुवाद के लिए अनुवादक को विषय का विशेषज्ञ होना चाहिए। विषय के ज्ञान के अभाव में किया गया अनुवाद भ्रामक और त्रुटिपूर्ण होता है। वैज्ञानिक विषय का पर्याप्त ज्ञान न होने के कारण हमारे देश में विज्ञान, तकनीकी और प्रौद्योगिकी सम्बन्धी अनुवाद कार्य पर्याप्त मात्रा में नहीं हुआ है। इस सन्दर्भ में डॉ. भोलानाथ तिवारी का यह कथन दर्शनीय है, "किन्तु इसके विपरीत वैज्ञानिक साहित्य के अनुवाद में विषय का ज्ञान अनिवार्यत: आवश्यक है। विषय का ज्ञान न होने से अनुवादक अनेक प्रकार की गलतियाँ कर सकता है।"

4. भाषा की सहजता की समस्या—विज्ञान, तकनीकी एवं प्रौद्योगिकी से सम्बन्धित अनुवाद की भाषा के सम्बन्ध में यह एक धारणा-सी बन गई है कि इसे संस्कृत के तत्सम-प्रधान शब्दों से युक्त होना चाहिए। डॉ. रघुबीर, जिन्होंने पारिभाषिक शब्द-कोशों की संरचना में महत्वपूर्ण कार्य किया है, इसी मत के पक्षधर थे, परन्तु इससे अनुवाद की भाषा क्लिष्ट हो जाती है। इससे विज्ञान और तकनीकी के अध्येता को मूल भाषा के शब्द अपेक्षाकृत अधिक सरल लगते हैं, अत: अनुवाद करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि शब्द सरल और सहज-सुबोध हों, तभी वे प्रयोग में स्वीकार होंगे, जैसे- "Heat is that which is transferred between a system and its surroundings as a result of temperature-differences only".

अनुवाद—"उष्मा वह है, जो किसी तंत्र के मध्य और उसके चारों तरफ तापान्तर के परिणामस्वरूप स्थान्तरित होती है।"

5. प्रामाणिकता के निर्वाह की समस्या—विज्ञान, तकनीक और प्रौद्योगिक अनुवाद में तथ्यात्मकता और प्रामाणिकता पर विशेष ध्यान देना आवश्यक होता है। भाषा का अलंकरण अथवा शैली की कलात्मकता का इस तरह के अनुवाद में कोई स्थान नहीं है। विज्ञान, तकनीक और प्रौद्योगिकी अनुवाद के क्षेत्र में प्रामाणिकता का निर्वाह आवश्यक है, क्योंकि इनका आधार कल्पना या भावना न होकर तथ्यपरकता होती है। ऐसा अनुवाद न तो पूरी तरह भावानुवाद होता है और न ही सारानुवाद। इस सम्बन्ध में डॉ. एच.एम.के. सक्सेना का अधोलिखित मत दर्शनीय है- "वैज्ञानिक अनुवाद में सारानुवाद या अनुकूलन के लिए भी कोई स्थान नहीं है, क्योंकि इस पद्धति में तथ्यात्मक प्रामाणिकता की सुरक्षा सम्भव नहीं हो पाती है। वैज्ञानिक और तकनीकी अनुवाद में स्वछन्द अनुवाद की भी मान्यता देना सम्भव नहीं है।" निष्कर्ष रूप में हम समस्याओं को इस प्रकार लिख सकते हैं-

(1) वैज्ञानिक विषय पर अत्याधुनिक पुस्तकें या विज्ञान साहित्य, अनुसन्धान पेपर अंग्रेजों में ही होने के कारण, वैज्ञानिकों को वैज्ञानिक लेखन हिन्दी में करना असम्भव प्रतीत होता है।

(2) वैज्ञानिक को हिन्दी में कार्य करने के लिए, उनके कार्य से सम्बन्धित विषयों पर हिन्दी में शब्दावली निर्मिति सीमित है।

(3) विश्व में प्रौद्योगिकी व अनुसन्धान क्षेत्रों में होने वाली नवीनतम जानकारी/शोध-प्रबन्ध/शोध-लेखों की जानकारी विभिन्न वेबसाइटों पर अंग्रेजी में उपलब्ध हैं, जबकि इस प्रकार की सामग्री हिन्दी में उपलब्ध नहीं है।

(4) वैज्ञानिकों को अपना कार्य कम्प्यूटरों के माध्यम से हिन्दी में करने के लिए, हिन्दी कम्प्यूटर का ज्ञान कम है।

(5) यदि हिन्दी में वैज्ञानिक सामग्री तैयार की जाती है, तो उसको महत्व कम मिलता है।

(6) विज्ञान अनुसन्धान व प्रौद्योगिकी कार्य हिन्दी में करने के लिए प्रोत्साहन भत्ता नहीं मिलता है।

समाधान एवं सुझाव

आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए समस्याओं के समाधान भी निकलते जा रहे हैं। इसके साथ उक्त समस्याओं के सम्बन्ध में अनेक सुझाव भी आ चुके हैं, क्योंकि अनुवाद का क्षेत्र बहुत व्यापक हो गया है। चूँकि हिन्दी में एक लाख से भी अधिक विज्ञान, आयुर्विज्ञान, इंजीनियरिंग तथा कृषि के पारिभाषिक शब्दों का निर्माण भारत सरकार (शिक्षा मंत्रालय) के वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा हो चुका है, अत: अंग्रेजी के संकल्पनात्मक अथवा तकनीकी शब्दों के पर्याय निर्धारण की समस्या हल हो चुकी है। अनुवादकों को इनका प्रयोग करना चाहिए। जहाँ कोशों से कुछ तकनीकी शब्दों की संकल्पना स्पष्ट न हो सके वहाँ अनुवादक को चाहिए कि सम्बन्धित विषय के परिभाषा-कोशों को या 'वेबस्टर' आदि कोशों को देखकर शब्द विशेष की अर्थच्छाया को समझने का प्रयत्न करें। हर हालत में हिन्दी प्रकृति की रक्षा की जानी चाहिए। इसके लिए अंग्रेजी के लम्बे वाक्यों को खण्ड-खण्ड में लाना चाहिए। कुछ कार्यालयों में यह भ्रम बना हुआ है कि तकनीकी काम हिन्दी में सुचारू रूप से नहीं हो सकता। यह भ्रम निराधार है। आज केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग के कार्यालयों में हिन्दी का व्यापक रूप में उपयोग हो रहा है और विभिन्न प्रकार के तकनीकी शब्दों के हिन्दी पर्याय ढूँढने की आवश्यकता नहीं है, जो अंग्रेजी के शब्द प्रचलित हैं, उन्हें ज्यों-का-त्यों देवनागरी लिपि में लिखा जा सकता है।

विज्ञान की परिभाषा प्राय: अन्तर्राष्ट्रीय होती जा रही है। इससे भारत को भी उदारतापूर्वक उनको ग्रहण कर लेना चाहिए। अनेक देशों की भाषाओं ने अनेक तकनीकी एवं प्रौद्योगिकी शब्दावली को अपना लिया है। इसमें नियत शब्द सामने आना चाहिए। आवश्यकता पड़ने पर पादटिप्पणी एवं मूल शब्द को कोष्ठक में देना चाहिए। मूल भाषा संरचना का अन्धानुकरण न करके उसके फल पर ध्यान देना चाहिए। प्रासंगिकता एवं व्यावहारिकता बैठानी चाहिए। जटिल वाक्य-रचना को सरल कर देना चाहिए। स्पष्टता का मानदण्ड सबसे अधिक आवश्यक है। मूल और अनुवाद की भाषा का ज्ञान अनुवादक को विशेष रूप से होना चाहिए। इस प्रकार के अनुवाद में तकनीकी, वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी अनुवाद के तत्वों का पालन अनिवार्य रूप से होना चाहिए। ❑

प्रश्न 29. प्रौद्योगिकी क्षेत्र के अनुवाद के विषय में आप क्या जानते हैं?

अथवा

प्रौद्योगिकी क्षेत्र का अनुवाद विषय में एक निबंध लिखिए।

अथवा

प्रौद्योगिकी क्षेत्र एवं अनुवाद की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- वर्तमान संसार में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में जिस पैमाने पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्पर्क एवं सहयोग हो रहा है वह इस क्षेत्र में अनुवाद की विशेष प्रासंगिकता एवं अनिवार्यता प्रमाणित कर रहा है। सहयोग के समान प्रतिद्वंद्विता भी अनुवाद की प्रेरणा देती है। इस क्षेत्र में कुछ देश अत्यधिक विकसित हैं। वे अपने विकास की गति और तेज बना लेना चाहते हैं। कम विकसित देश विकास करना चाहते हैं। कोई भी देश आज विज्ञान और प्रौद्योगिकी के मोह से नहीं छूटा है। चाहने पर भी वह छूट नहीं सकता क्योंकि इस विकास के बिना वह पिछड़ जाएगा, शायद दूसरों से निगल लिया जाएगा।

जैसा कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी का संक्षिप्त इतिहास बताता है– "पिछले सौ वर्षों की अवधि में विज्ञान ने सभ्यता पर जितना प्रभाव एवं परिवर्तन प्रस्तुत किया है उतना रोम के हजार वर्षों में तो क्या, पुराने शिला युग के लाखों वर्षों में भी नहीं हो पाया है। इलैक्ट्रोनिकी बीसवीं शताब्दी की देन है। प्रथम सार्वजनिक कम्प्यूटर ENIAC (इलैक्ट्रानिक न्यूमेरिकल इंटरप्रेटर एण्ड कैलकुलेटर) अमेरिका के पेन्सिलवेनिया विश्वविद्यालय में सन् 1946 में प्रस्तुत किया गया था। मतलब यह कि कम्प्यूटर ने 56 वर्ष भी मुश्किल से ही पूरे किए हैं।

गत सौ वर्षों में अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में इंग्लैण्ड और अमरीका के सितारे बुलन्द थे। उनकी भाषा अंग्रेजी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के माध्यम से बड़ी सशक्त हो सकी। उपनिवेशवाद ने भारत, बर्मा जैसे देशों में अंग्रेजी का रोब जमा दिया।

वस्तुत: विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विकास में सारे देशों का योग रहा है। इसका प्रारम्भिक विकास पूर्व में हुआ था। अरबों ने इसे यूरोप पहुँचाया। यूरोप में तेरहवीं सदी से ही शिक्षा-प्रसार का गंभीर प्रयास चला था। उसी सदी में पेरिस, आक्सफोर्ड, पादुबा, नेपिल्स आदि के विश्वविद्यालयों का श्रीगणेश किया गया। पन्द्रहवीं सदी से यूरोपीय वैज्ञानिकों की उज्जवल परम्परा जारी हुई।

चीन ने कागज-निर्माण, मुद्रण और बारूद-निर्माण की प्रौद्योगिकी संसार को दी थी। आतिशबाजी उसी देश की देन मानी जाती है। अरबों ने वैज्ञानिक आविष्कारों में अत्यधिक क्षमता पाई। कहते हैं, जब कोई अरब राजा दूसरे देश पर विजय पाता तब संधि की पहली शर्त यह होती कि हारे हुए देश के सारे वैज्ञानिक ग्रंथों को विजेता की सेवा में प्रस्तुत करना चाहिए। नौवीं शती में अरब के जबीर इबन हय्यां ने अल्केमी का आविष्कार किया था। गणित, खगोल विज्ञान, आयुर्विज्ञान एवं भौतिकी में अरबों का योगदान महत्वपूर्ण था।

यूरोप के विज्ञान और प्रौद्योगिकी का विकास विभिन्न देशों का योगदान है। इताली; फ्रांस, जर्मनी, पोलैण्ड आदि देशों में विभिन्न युगों में महान आविष्कारक हुए। इन देशों के वैज्ञानिकों ने अपने ग्रंथों में तकनीकी भाषा के लिए ग्रीक एवं लैटिन शब्द ही बुनियादी तौर पर स्वीकार किए थे। आधुनिक आयुर्विज्ञान धारा 'एलोपैथी' की शब्द-व्युत्पत्ति ग्रीक के अलोस (अन्य) एवं पायोस (पीड़ा) के संयोग से मानी गई है। 'मेडिकल एटिमालाजी' नामक कोश की भूमिका में सोदाहरण दिखाया गया है कि अंग्रेजी के मेडिकल संकेतित शब्दों में अधिकांश

ग्रीक से व्युत्पन्न हैं। लैटिन से भी अनेक शब्द व्युत्पन्न हैं। अरबी से औषधि-विज्ञान के बहुत से शब्द लिए गए हैं। फ्रेंच से सीधे या परिवर्तित रूप में शब्द ग्रहण किए गए हैं। इटली, डच, फारसी और चीनी के भी शब्द इन शब्दों में प्राप्त होते हैं।

यह निष्कर्ष इस बात को प्रमाणित करता है कि अंग्रेजी की तकनीकी शब्दावली शुद्ध अंग्रेजी शब्दावली नहीं है। अनेक भाषाओं के शब्द मूल रूप में या परिवर्तित रूप में उनमें शामिल हुए हैं।

लोकप्रिय अनुवाद तथा तकनीकी अनुवाद के बीच में स्वतन्त्र अनुवाद या रूपान्तरण कहलाने लायक प्रणाली भी होती है। कठिन वैज्ञानिक ग्रन्थों के अच्छे अनुवाद में अधिकतर लोगों को सफल होते देखकर विद्वानों ने यह प्रस्ताव किया है कि मूल भाषा के महत्वपूर्ण ग्रंथों को पढ़ने के पश्चात् अपनी तरफ से उन ग्रंथों को नये सिरे से लक्ष्यभाषा में रचना चाहिए। पाठ्यग्रंथ-निर्माण के क्षेत्र में इस प्रणाली की विशेष सिफारिश की जाती है। एक हद तक यह उचित लगता तो है, मगर सार-लेखन मूल ग्रंथ का प्रतिनिधि बन नहीं सकता। बड़े आचार्यों के वैज्ञानिक ग्रंथों का अनुवाद भाषा की वैज्ञानिक सम्पदा की वृद्धि के लिए अनिवार्य भी है।

अंग्रेजी के वैज्ञानिक एवं तकनीकी ग्रंथों के यथातथ्य अनुवाद में सबसे बड़ी बाधा उस भाषा की विशिष्ट शैली है। इस विषय पर केरल के एक वैज्ञानिक लेखक के विचारों का सार यहाँ दे रहा हूँ। वे कहते हैं कि वैज्ञानिक अंग्रेजी भाषा तथ्य-प्रधान होती है। उसके शब्दों की सूक्ष्मर्थिता एवं किफायत अन्य दो विशेषताएँ हैं। किसी-किसी वैज्ञानिक ग्रंथ की वाक्य-संरचना बड़ी संकीर्ण होती है। वाक्यों का जटिल गठन विधि की भाषा में भी होता है। विज्ञान में सामान्यत: बड़े वाक्यों को तोड़कर छोटे वाक्यों की शैली स्वीकार की जा सकती है। किन्तु वाक्यों का सम्बन्ध दृढ़ बना रहे और अर्थ की भ्रांति न हो।

अनुवाद में मुख्य समस्या वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली के अनुवाद की है। इसमें क्रियारूप एवं छोटे-छोटे पदबंध भी शामिल हैं। अनुवाद के विषय में आम लोगों के पक्षधर यही वात दुहराते हैं कि सरल से सरल शब्द स्वीकार कीजिए। वे वैज्ञानिक शब्दों की बारीकियों पर सोचने का कष्ट नहीं उठाते।

वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दों का अनुवाद करते समय हमें सबसे पहले यह देखना है कि मूल ग्रंथ में जिस संज्ञा या संकल्पना का परिचय दिया जा रहा है वह हमारे देश या राज्य के लिए पूर्वपरिचित है कि नहीं। भारत में गणित, खगोल विज्ञान, आयुर्विज्ञान, कूटनीति आदि विषय काफी प्रौढ़ दशा में रहे थे। अत: उनकी संकेतित शब्दावली और संकल्पनाएँ हमें संस्कृत ग्रंथों में मिलती है। जहाँ वे सुलभ हैं वहाँ उन्हें स्वीकार करने में कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए। यूरोप की आधुनिक भाषाओं ने लैटिन व ग्रीक से बड़ी संख्या में तकनीकी शब्दावली ग्रहण की है। जैसे यूरोप के देशों के लिए लैटिन व ग्रीक मूल भाषाएँ रही हैं वैसे ही आधुनिक भारतीय भाषाओं के लिए संस्कृत मूल भाषा रही है। इस वजह से संस्कृत सारी भारतीय भाषाओं को तकनीकी शब्दावली दे सकती है।

विदेशी वैज्ञानिक व तकनीकी शब्दों के हिन्दी अनुवाद के प्रसंग पर संस्कृत से बचकर व्यावहारिक शब्दों का व्यवहार करने का सुझाव भी नया नहीं है। इसका प्रयोग भी वहाँ किया गया था। वह प्रयोग हैदराबाद की कार्यशाला नाम से प्रसिद्ध है। स्वतंत्रतापूर्व आयोजित प्रस्तुत कार्यशाला में हजारों शब्द लोकप्रियता की दृष्टि से गढ़े गए। अफसोस है कि उस्मानिया विश्वविद्यालय में अंग्रेजी के माध्यम बनने के बाद वह पूरी उर्दू शब्दावली नष्टभ्रष्ट हो गई।

सुबोधता व लोकप्रियता दोनों गुण उसमें थे। उसमें कई त्रुटियाँ भी थीं। उसके आयोजकों में इस्लामी साम्प्रदायिकता की भावना थी। वे हिन्दी व संस्कृत से जानबूझकर बचते थे। वह प्रवृत्ति भारतीय भाषाओं के सामान्य धर्म के अनुकूल नहीं रही। दूसरे, इन गढ़े हुए शब्दों में वैज्ञानिक शब्द के लिए अनिवार्य नियतार्थता और परस्पर अपवर्जन के तत्व नहीं रहते थे। फिर भी अर्धतकनीकी शब्दों एवं तकनीकी शब्दों के रूप में उनका उपयोग अब हो सकता है।

तीसरा विकल्प यह है कि विभिन्न भारतीय भाषाओं में प्राप्त तकनीकी शब्दों का संकलन व्याख्या सहित किया जाए। उसके बाद उनमें तीन या अधिक भारतीय भाषा के (इनमें भारतीय आर्य एवं द्रविड़ दोनों की प्रतिनिधि भाषाएँ हों) प्रयुक्त शब्दों के अनुदित शब्द के रूप में हिन्दी में स्वीकार करें। इस सुझाव पर कुछ आपत्तियाँ उठ सकती हैं। पहली यह कि वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग ने जो शब्दावली अभी गढ़ी है उसे छोड़कर नये शब्द स्वीकार करना गलत है। मगर विकासशील भाषा में शब्दों पर पुनश्चिन्तन और बेहतर शब्दों का गठन आवश्यक प्रक्रिया है। इसके अलावा नये शब्द गढ़ लेने पर अर्थ की विभिन्न छवियों के निर्णय के लिए अधिक सुविधा रहेगी। अभी आयोग के शब्दों के विषय में संस्कृत में बोझिल रहने की जो शिकायत है वह भी एक हद तक दूर होगी। अन्य भारतीय भाषाओं के लिए वे शब्द अधिक सहज भी लगेंगे।

भारतीय भाषा के अनुवाद में अन्तर्राष्ट्रीय शब्दों, प्रतीकों के प्रयोग का महत्व दुहरा है। हमारी शिक्षा प्रणाली में दो प्रकार के माध्यम होते हैं। अर्थात् प्रारम्भिक एवं माध्यमिक विद्यालयों में भारतीय भाषा के माध्यम से विषय सिखाए जाते हैं। कालिज पहुँचने पर वही विषय अंग्रेजी के माध्यम से सिखाए जाते हैं। इसके प्रत्युत्तर में सुझाव हो सकता है कि कालेज व स्कूल में दोनों जगह भारतीय भाषा में सीखे। तब भी विज्ञान व प्रौद्योगिकी के उच्च अध्ययन की जरूरत पड़ेगी।

अन्तर्राष्ट्रीय तकनीकी शब्दों का पूर्णत: भारतीयकरण वांछनीय नहीं है। देखा गया है कि संसार की प्रमुख भाषाएँ अब नये-नये आविष्कार व सिद्धान्त निर्धारण के बाद उनमें उद्भावित एवं गठित नये तकनीकी शब्दों को भी स्वीकार कर लेती है अगर वे आविष्कार आदि अन्य भाषा-भाषी प्रदेश के हों तो अन्य भाषा में प्रयुक्त नवीन तकनीकी शब्दों को भी अपना लेती है। किन्तु अनुकूलन के क्रम में उन शब्दों की वर्तनी एवं उच्चारण अपनी भाषा के अनुकूल बना लेती है। इससे यह सुविधा प्राप्त होती है कि कोई भी वैज्ञानिक तथ्य या सिद्धान्त बड़ी आसानी से चर्चित हो सकता है। यही नहीं, अन्य भाषा वाले जब इस भाषा के वैज्ञानिक ग्रंथ पढ़ें तब उनकी समझ में भी आएँगे। एलसेवियर कम्पनी के बहुभाषी विज्ञान-कोशों की माला इस क्षेत्र की बड़ी उपलब्धि है। भारत में केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय ने कई वर्षों के प्रयत्न से भारतीय भाषा कोश निकाला है। वह प्राय: सामान्य शब्दों का है, परन्तु अत्यन्त उपादेय है। अफ़सोस है कि इसका जितना प्रचार व उपयोग होना चाहिए, हो नहीं पाया है।

भारतीय भाषा में वैज्ञानिक तथा तकनीकी साहित्य के अनुवाद के विषय में संकोच व टीका-टिप्पणी करने वाले शायद इस बात पर ध्यान नहीं देते कि संसार के विकसित व विकासशील देश अन्य देशों में होने वाली हर अच्छी वैज्ञानिक व तकनीकी रचना का अनुवाद अपनी भाषा में कराते हैं। शोध-पत्रों का भी जरूर अनुवाद कराया जाता है। इस कार्य के लिए अनुवादक-वैज्ञानिकों का पूरा दल लगा रहता है। हमारा भारत स्वतन्त्र राष्ट्र है। हमारी हिन्दी भाषा स्वतन्त्र राष्ट्र की प्रमुख भाषा है। इसमें संसार की नयी वैज्ञानिक उपलब्धियों का विवरण बराबर दिया जाना चाहिए।

अनुवाद-प्रणाली पर विचार करते हुए हमें दल द्वारा अनुवाद अथवा टीम-अनुवाद की उपयोगिता समझनी चाहिए। आजकल वैज्ञानिक क्षेत्र में अनुसंधान तक टीम द्वारा ही किया जाता है। अनुवादकों का एक छोटा दल या छोटी समिति अनुवाद कर सकती है।

डॉ.लोकेशचन्द्र ने 'अनुवाद' पत्रिका में 'विज्ञानोदय और अनुवाद' शीर्षक के लेख में चीन की प्राचीन अनुवाद-प्रणाली पर प्रकाश डाला है। दसवीं शताब्दी में चीन के बौद्ध विद्वानों ने अनुवाद की जिस प्रक्रिया को अपनाया था उसमें नौ विशेषज्ञ होते थे और प्रत्येक प्रसंग उनमें प्रत्येक के द्वारा निरीक्षण-परीक्षण के बाद ही आगे बढ़ता था। इन नौ विशेषज्ञों का क्रम इस प्रकार था—

1. ई-चु (प्रधान अनुवादक) केन्द्र में स्थान ग्रहण करता था। वह संस्कृत की व्याख्या करता था।

2. चइ-ई (अर्थ परीक्षक) प्रधान अनुवाद के सहित निहित अर्थ पर विचार-विमर्श करता था।

3. चइ-वन् (पाठ परीक्षक) प्रधान अनुवादक के पाठ को ध्यानपूर्वक सुनता था और उसकी शुद्धता का ध्यान रखता था।

4. शु-त्जु—संस्कृत का विद्वान होता था। वह भी पाठ को ध्यानपूर्वक सुनता और संस्कृत का चीनी भाषा में लिप्यन्तरण करता था।

5. पि-शीइ—लिप्यन्तरित शब्दों का अनुवाद चीनी भाषा में करता था।

6. चो-वन्—(पाठ रचयिता) चीनी शब्दों को वाक्यों में व्यवस्थित करता था एवं उपयुक्त वाक्यों की रचना करता था।

7. त्सान-ई—पाठों की तुलना और अनुवाद की शुद्धता सुनिश्चित करता था।

8. खान-तिठ (संवीक्षक) फालतू अभिव्यक्तियों को निकाल देता और शैली को अर्थगर्भित बनाता था।

9. जुन्-वन् (पुनरीक्षक) सभा के सारे निर्णयों को अंतिम रूप देता था।

यह सूचना चीन में अनुवाद-प्रविधि को दिए गए महत्व एवं गंभीरता का प्रमाण है। वैज्ञानिक व तकनीकी ग्रन्थ के अनुवाद के क्षेत्र में पन्तनगर कृषि वि.वि. का पाठ्य-पुस्तक वाला प्रयोग भी स्वीकार करने योग्य है। जैसा कि सभी जानते हैं, उस कृषि विश्वविद्यालय में कृषि एवं पशुपालन से सम्बन्धित उपाधि-स्तरीय पाठ्यक्रम हिन्दी के माध्यम से चलता है। इसके लिए उन्हें हिन्दी में पाठ्यपुस्तकें तैयार करनी पड़ी हैं। अब भी ये तैयार की जा रही हैं। छपाई की सुविधा मिलने के पहले ही उन्हें किसी-किसी पाठ्य-पुस्तक का उपयोग करना पड़ता है। अतएव वे पुस्तक की कुछ साइक्लोस्टाइल प्रतियाँ तैयार कर लेते थे। नये गंभीर विषय की पांडुलिपियों की कुछ साइक्लोस्टाइल प्रतियाँ तैयार करके उनका परीक्षण विभिन्न प्रकार से कराया जाए और उन पर विस्तृत समीक्षा व टिप्पणी प्राप्त की जाए तो उसके बाद सम्यक् सम्पादन करते हुए उसी ग्रन्थ का मुद्रण हो सकता है। इसमें त्रुटियाँ बहुत कम रहेंगी। इसके लिए विद्वान वैज्ञानिकों और भाषाविदों को ईमानदारी से परिश्रम करना पड़ेगा।

वैज्ञानिक और तकनीकी ग्रन्थों के अनुवाद की प्रणाली पर विचार करने के बाद एक ज्वलंत समस्या पर विचार करना जरूरी है। भाषा की तकनीकी पुस्तकों का स्तर बढ़ाया जा सकता है। इसके लिए पहले बनने वाली तकनीकी पुस्तकों की बिक्री झटपट होनी चाहिए। अगर बिक्री न हो, लोग न खरीदें तो फिर सुधारा हुआ संस्करण सम्भव नहीं होगा। केरल-भाषा-संस्थान के ग्रन्थों के विषय में बिक्री का अनुभव यह रहा है कि दो प्रकार के ग्रन्थ अधिक

बिके हैं—1. लोकप्रिय रुचि के ग्रंथ—फिल्म, संगीत और खेती से सम्बन्धित। 2. परीक्षाओं के लिए नियत। पोलिटेकनीक की परीक्षाओं में संस्थान की पाठ्य-पुस्तकें निर्धारित हैं और मलयालम में उत्तर लिखने की अनुमति है।

आजकल अनौपचारिक शिक्षा और खुले विश्वविद्यालय की शिक्षा हर जगह चल रही है। इनके कार्यक्रम में हिन्दी या अन्य भारतीय भाषा के माध्यम से वैज्ञानिक व तकनीकी पाठ्यक्रम की योजना बनाई गई जिसका हजारों युवक-युवतियों ने उसका स्वागत किया है। इससे भारतीय भाषा में नये वैज्ञानिक ग्रन्थों के प्रकाशन की सुविधाएँ बढ़ेंगी।

उपसंहार में मैं यही निवेदन करना चाहता हूँ कि हमारे देश में उच्च कोटि के ऐसे वैज्ञानिकों और प्रौद्योगिकी के विशेषज्ञों की जरूरत है जो भारतीय भाषाओं पर गर्व करते हैं तथा भारतीय भाषा के माध्यम से भाषण देते व लिखते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के भारतीय वैज्ञानिक जब विज्ञान पर हिन्दी में भाषण दे तभी हिन्दी की गरिमा बढ़ेगी। ❑

साहित्यिक अनुवाद एवं तकनीकी अनुवाद में अन्तर

प्रश्न 30. साहित्यिक अनुवाद एवं तकनीकी अनुवाद में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

अथवा

साहित्यिक अनुवाद बनाम् तकनीकी अनुवाद को समझाइए।

उत्तर- साहित्यिक अनुवाद एवं तकनीकी अनुवाद में अन्तर

साहित्यिक अनुवाद अनुवाद का दूसरा रूप है, जो पूरी तरह से अलग है। यह एक प्रकार का अनुवाद है, जिसका उपयोग कविताओं और नाटकों जैसी चीजों के लिए किया जाता है। इस अनुवाद को सही स्वर और अर्थ के साथ ठीक से प्रस्तुत करना महत्वपूर्ण है। इसके लिए न केवल दोनों भाषाओं को अच्छी तरह से जानने में थोड़ा तकनीकी कौशल की आवश्यकता है, बल्कि साहित्यिक स्वर और दृष्टिकोण को भी समझना होगा।

कई अलग-अलग प्रकार के अनुवादक हैं। कुछ अनुवादक केवल एक से अधिक भाषा समझते हैं और बोल सकते हैं। अन्य अनुवादक विभिन्न भाषाओं में लिखने के साथ-साथ उन्हें बोल भी सकते हैं। तकनीकी अनुवादक तकनीकी स्तर पर लिखते, बोलते और समझते हैं और साहित्यिक अनुवादक अंतर्निहित स्वरों को लिखते, बोलते और सही मायने में समझते हैं। दूसरी भाषा सीखते समय स्वरों को समझना वास्तव में कठिन बात हो सकती है। सही स्वर में लिखना और उसी संदेश को मूल लेख के रूप में बताना मुश्किल हो सकता है। एक साहित्यिक लेखक के रूप में, व्यक्तिगत विश्वासों या भावनाओं के किसी भी भाव को लेखन से बाहर रखने की कोशिश करना महत्वपूर्ण है।

साहित्यिक लेखन लेखन की व्याख्या नहीं कर रहा है, यह उसका अनुवाद कर रहा है। इस कारण से साहित्यिक लेखकों को साहित्यिक अनुवाद करते समय सावधान रहना चाहिए। मूल संदेश को मूल लेखक की तरह ही पहुँचाने के लिए निष्पक्ष स्वर में लिखना महत्वपूर्ण है।

तकनीकी अनुवाद तकनीकी दस्तावेजों का अनुवाद है। यह आमतौर पर इंजीनियरिंग और जैव प्रौद्योगिकी जैसे विज्ञान और गणित के क्षेत्रों में होता है। हालाँकि, एक साहित्यिक अनुवाद भाषा क्षेत्र का ही होता है। इसके लिए अधिक साहित्यिक कौशल के साथ-साथ दोनों भाषाओं को बहुत गहरे स्तर पर समझने की आवश्यकता होगी। साहित्य कला का एक काम है और हमें दुनिया को दूसरे व्यक्ति के दृष्टिकोण से देखने की अनुमति देता है। यह हमें

अन्य संस्कृतियों और समय का पता लगाने की अनुमति देता है। इस अँनूठी कला स्पिन के कारण, अनुवादक को वास्तव में उस अंश में शामिल होने की आवश्यकता होती है, जिसका वे अनुवाद कर रहे हैं और वास्तव में समझते हैं कि मूल लेखक क्या चित्रित करने की कोशिश कर रहा था।

उन सभी महान् उपन्यासों के बारे में सोचें जिनका वर्षों से अनुवाद किया गया है। विलियम शेक्सपियर, मार्क ट्वेन और मार्सेल प्राउस्ट की कृतियाँ उनमें से कुछ ही हैं। अधिकांश कृतियों का अनेक भाषाओं में अनुवाद किया गया है, जिन्हें सभी ने पहचाना है। लेकिन दुनिया भर में कुछ ही एशियाई, भारतीय या दक्षिण अमेरिकी महान् उपन्यासकार जाने जाते हैं। यह उन भाषाओं के अन्य भाषाओं में साहित्यिक अनुवादकों की कमी के कारण हैं। बहुत से लोग पश्चिमी विरासत की भाषा बोलते हैं, जो लेटिन वर्णमाला का उपयोग करते हैं।

साहित्यिक अनुवादकों के कारण विश्व भर में प्रसिद्ध कृतियों को साझा किया गया है। हालाँकि, दुनिया के अन्य हिस्सों में एक्सपोजर नहीं हुआ है। यह एक्सपोजर है जो साहित्यिक अनुवाद की आवश्यकता पैदा करता है। साहित्यिक अनुवादकों के बिना, कई महान् नाटक, कविताएँ और उपन्यास खो जाते।

एक नई भाषा सीखना हमेशा मजेदार और रोमांचक होता है। लेकिन उस कौशल को उस दूसरी भाषा में एक क्षेत्र को पूरी तरह से समझने के लिए अगले स्तर तक ले जाना महारत् है। दूसरी भाषा में अच्छा होना कुछ लोगों के लिए आसान होता है, लेकिन एक साहित्यिक या तकनीकी अनुवाद लेखक होना एक और स्तर है, जो भाषा कौशल को किसी व्यक्ति के लेखन कौशल और ज्ञान के साथ जोड़ता है। ❑

जनसंचार माध्यम एवं विज्ञापन का अनुवाद

प्रश्न 31. जनसंचार माध्यमों के अनुवाद पर प्रकाश डालिए।

अथवा

जनसंचार के माध्यमों के अनुवाद का परिचय दीजिए।

उत्तर- विविध सूचनाओं, समाचारों और विचारों को अनेक माध्यमों से जन-साधारण तक पहुँचाना ही 'जन-संचार' तक पहुंचाना ही 'जनसंचार' है । सामान्य रूप से जनसंचार शब्द का तात्पर्य है— रेडियो, टेलीविजन, सिनेमा, कम्प्यूटर और प्रकाशन माध्यम जिनके द्वारा बड़ी तेजी से और व्यापक विस्तार के साथ-साथ जनता जनार्दन में संदेश पहुँचाते हैं। पर केवल इन्हीं माध्यमों से ही संदेश प्रेषण होता है, ऐसा नहीं है । भारत में संदेश प्रेषण के अन्य साधन भी हैं— कथा-संकीर्तन, रासलीला, लोकसंगीत, नाटक, रंगमंच एवं स्थापत्य कला आदि। जन संचार के माध्यमों को हम तीन रूप में विभक्त कर सकते हैं—

1. विद्युतीय या इलेक्ट्रॉनिक माध्यम-जो इस प्रकार हैं—
   (1) आकाशवाणी, (2) दूरदर्शन, (3) दूरभाष या टेलीफोन, (4) फैक्स, (5) तार या टेलीग्राफ।
2. अन्य माध्यम जो इस प्रकार हैं—
   (1) समाचार-पत्र, (2) पत्र सूचना कार्यालय, (3) प्रकाशन विभाग, (4) सिनेमा या चलचित्र, (5) डाक प्रणाली।
3. अंतरिक्ष विज्ञान—
   (1) कम्प्यूटर, (2) ई-मेल, (3) अंतरिक्ष में छोड़े गए यान या उपग्रह।

इन सभी माध्यमों में अनुवाद की प्रक्रिया निरन्तर चल रही है, जो इस प्रकार है—

1. आकाशवाणी—आकाशवाणी के कार्यक्रम हिन्दी, अंग्रेजी ही नहीं भारत की अनेक भाषाओं एवं विदेशों की अनेक भाषाओं जैसे—फ्रेंच, पोर्चगीज, जर्मनी इत्यादि सभी विदेशों की भाषा में प्रसारित होते हैं। इन कार्यक्रमों के अनुवाद निरन्तर हो रहे हैं एवं इनका प्रसारण हिन्दी में धड़ल्ले से हो रहा है। इनकी पटकथा, कहानियाँ, गीत, समाचार, इत्यादि समस्त विधाओं का अनुवाद हो रहा है।

2. दूरदर्शन—दूरदर्शन एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा समाचार, चलचित्र, गीत, नाटक, इत्यादि लाखों प्रकार के कार्यक्रमों का प्रसारण होता है। विश्व की सभी चैनलों, जैसे—स्टार प्लस, बी.बी.सी., जी टी.वी., सी टी.वी., ओ.टी.जी., दिल्ली दूरदर्शन इत्यादि चैनलें अपना प्रसारण कर रही हैं। इंटरनेट एवं केबल के द्वारा सब एक साथ मिल गए हैं। दूरदर्शन के कार्यक्रम विश्व की अनेक भाषाओं में प्रसारित होते हैं एवं उनका अनुवाद एवं रूपांतर हिन्दी में सतत् हो रहा है। अनेक भाषाओं के कार्यक्रम अब हिन्दी में अनुदित होते रहते हैं। यह अनुवाद प्रक्रिया बड़े वृहद रूप में चल रही हैं।

3. दूरभाष—टेलीफोन की डायरेक्ट्री हिन्दी एवं अंग्रेजी में उपलब्ध है। इससे सम्बन्धित सभी प्रकाशनों का अनुवाद हिन्दी में हो गया है एवं दिनों दिन हो रहा है।

4. फैक्स—फैक्स मशीन द्वारा अनुवाद भी दिया जाता है एवं इसके साहित्य का अनुवाद हिन्दी में हो गया है।

5. तार—अब तार हिन्दी में भेजे जाने लगे हैं एवं इसके साहित्य का अनुवाद हिन्दी में हो रहा है।

6. समाचार-पत्र—ये सभी भाषाओं में होते हैं। समाचारों के अनुवाद हिन्दी में होते हैं। अन्य साहित्य का अनुवाद भी हिन्दी में हो रहा है।

7. पत्र सूचना कार्यालय—केन्द्रीय एजेंसी द्वारा अनुदित होकर पत्र भेजे जाते हैं। इनका प्रयोग बहुलता से हो रहा है। ये सूचनाएँ देशी-विदेशी, दैनिक समाचार पत्रों, समाचार पत्रिकाओं, समाचार एजेंसियों, रेडियो और दूरदर्शन संगठनों को भेजी जाती है। भारत में चार समाचार एजेंसियाँ हैं—1. प्रेस ट्रस्ट आफ इण्डिया, 2. यूनाइटेड न्यूज ऑफ इण्डिया, 3. समाचार भारती, 4. हिन्दुस्तान समाचार। ये एजेन्सियाँ भी अपने कार्यालयों में हिन्दी का अनुवाद करती रहती हैं।

8. प्रकाशन विभाग—इस विभाग द्वारा राष्ट्रीय महत्व के विषयों पर हिन्दी-अंग्रेजी और अन्य भाषाओं में पुस्तकें एवं पत्रिकाएँ प्रकाशित करता है। उनका विक्रय देश विदेशों में होता है। इस विभाग द्वारा अनेक भाषाओं का अनुवाद हिन्दी में होता रहता है।

9. सिनेमा या चलचित्र—देश-विदेश के अनेक चलचित्रों का अनुवाद हिन्दी में हो रहा है। **उदाहरणार्थ**—अंगूर नामक चलचित्र का अनुवाद शेक्सपियर के अंग्रेजी उपन्यास से किया गया। हजारों चलचित्रों का अनुवाद विभिन्न भाषाओं से हिन्दी में हो रहा है एवं कभी-कभी वे अत्यन्त लोकप्रिय हो रहे हैं।

10. डाक प्रणाली—डाक प्रणाली में भी डाक से सम्बन्धित अधिकांश कार्य अब हिन्दी भाषा में हो रहे हैं एवं अनुवाद द्वारा ही यह सम्पन्न हो रहा है।

11. अंतरिक्ष विज्ञान—इसमें कम्प्यूटर अब हिन्दी में कार्य करने लगे हैं। कम्प्यूटर के माध्यम से हिन्दी में अनुवाद किया जाने लगा है। इतना ही नहीं कम्प्यूटर के माध्यम से ई-मेल कनेक्शन द्वारा विश्व के अनेक कार्यक्रम हिन्दी में हो रहे हैं। अब उसके लिए हिन्दी

में फ्लापी बन रही है। कम्प्यूटर सम्बन्धी जानकारी के लिए हिन्दी में अनेक पुस्तकें अनुदित की गई हैं।

12. केबल और ई-मेल द्वारा कई भाषाओं के कार्यक्रम—सिनेमा, नाटक, कविता, कहानी, उपयोगी जानकारियाँ, व्यापार, खेलकूद की गतिविधियों की सूचना अनुदित होकर हिन्दी में प्रयुक्त हो रही हैं। ई-मेल ने समस्त विश्व को हिन्दी से जोड़ दिया है। अब ई-मेल की कुछ वेब एवं वेबसाइटें हिन्दी में उपलब्ध हैं। ❑

प्रश्न 32. जनसंचार माध्यमों में अनुवाद की समस्याओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर- **जनसंचार माध्यमों में अनुवाद की समस्याएँ**

1. भाषा में क्लिष्टता की समस्या—जनसंचार माध्यमों में अनुवाद करते समय पहली समस्या आती है भाषा को सहज और बोधगम्य बनाने की। अनुद्य सामग्री की भाषा आम आदमी की समझ में आने वाली होनी चाहिए, परन्तु ऐसा अनेक कारणों से हो नहीं पाता, कभी यह शब्दानुवाद के पूर्वग्रह के कारण तो कभी अनुवादक की भाषा-दक्षता के अभाव के कारण दुरुह बन जाती है।

2. वर्तनी की अशुद्धियों की समस्या—जनसंचार माध्यमों में अनुवाद करते समय भाषा की वर्तनी की समस्या भी देखने में आती है। इसके लिए अनुवादक को सावधानी से काम लेना चाहिए। वर्तनी की अशुद्धियों के कारण अनुवाद की भाषा कृत्रिम और कभी-कभी अर्थ हीन भी हो जाती है। 'हम सोचते ही रह गए और प्यार हो गया', पंक्ति में एक बिन्दी की गलती क्याय गुल खिला सकती हैं- 'हम सोंचते ही रह गए और प्यार हो गया।'

3. अनुवाद में अर्थ के अनर्थ की समस्या—जनसंचार माध्यमों के क्षेत्र में अनुवाद बहुत शीघ्र करना होता है, समयाभाव के कारण अत: कभी-कभी अनुवादक स्त्रोत भाषा के अर्थ की गहराई को समझे बिना या फिर शब्दानुवाद के कारण अर्थ का अनर्थ कर बैठता है और मूल संदेश का अनुवाद न होकर वह भाषा का अनुवाद कर देता है, इससे अनुवाद के मूलभूत उद्देश्य की पूर्ति सम्भव नहीं हो पाती है।

4. शीर्षकों के अनुवाद की समस्या—प्रिन्ट मीडिया में शीर्षकों का अपना अलग ही महत्व होता है। शीर्षक रचना करने में रोचकता, आकर्षण और संदेश का सार आदि बातों का ध्यान रखना होता है। उसमें मुहावरों और शब्दों के उलट-पुलट क्रम का भी प्रयोग किया जाता है। अत: शीर्षकों का अनुवाद करते समय ध्यान रखना चाहिए कि अनुदित शीर्षक इतने रोचक होने चाहिए कि वे पाठकों की जिज्ञासा को जगाने में समक्ष हों। शीर्षकों को आकर्षक, अर्थपूर्ण एवं प्रभावशाली बनाना आवश्यक होता है। शीर्षक रचना का लक्ष्य होता है पाठक का ध्यान आकर्षित करना और उसे समाचार पढ़ने के लिए विवश करना। अनुवादक को इस लक्ष्य की पूर्ति का ध्यान रखना होता है।

5. अनुवाद में संक्षिप्तियों के प्रयोग की समस्या—प्रिन्ट पत्रकारिता और संचार के क्षेत्र में संक्षिप्तियों का अपना अलग ही महत्व होता है। यद्यपि हिन्दी में संक्षिप्तियों की परम्परा नहीं रही, परन्तु अंग्रेजी के प्रभाव और प्रयोग से इसको अपना लिया गया है। अत: उनका अनुवाद बहुत सावधानी से करना होता है। वर्तमान में संक्षिप्तियों का प्रयोग निरन्तर बढ़ता जा रहा है। इनके पर्यायों के निर्धारण तथा तत्सम्बन्धी नियम बनाने के सन्दर्भ में कोई ठोस कार्य न हो पाने के कारण अनुवादक को समस्या का सामना करना पड़ता है। भाजपा, रामो-वामो, इंका, दक्षेस, डी.टी.सी., आदि अंग्रेजी की तर्ज पर ही निर्मित हैं। कभी-कभी संक्षिप्तियों के साथ-साथ उनका पूर्ण रूप भी लिखा जाता है। ❑

प्रश्न 33. विज्ञापन के अनुवाद से आप क्या समझते हैं? विज्ञापन में अनुवाद की समस्याओं पर प्रकाश डालिए।

अथवा

विज्ञापन में अनुवाद का स्थान निर्धारित कीजिए।

अथवा

विज्ञापन अनुवाद पर संक्षिप्त लेख लिखिए।

उत्तर-

विज्ञापन का अनुवाद

विज्ञापन और पूँजीवाद का सम्बन्ध अन्योन्याभावी है अर्थात् विज्ञापन के अभाव में आज का पूँजीवाद अपना अस्तित्व बनाए रखने में समर्थ नहीं हो सकता। विज्ञापन स्वयं एक बहुत विशाल उद्योग के रूप में विकसित हो चुका है। विश्व की बड़ी विज्ञापन कम्पनियों के वार्षिक टर्नओवर भारत जैसे कई देशों के सालाना बजट से अधिक है। ये कम्पनियाँ एक विशालकाय रूप में सम्पूर्ण विश्व में फैली हुई हैं। इनमें अमेरिका और जापान की कम्पनियाँ सर्वाधिक बड़ी हैं। इससे विज्ञापन की दुनिया के मूल विज्ञापन के संदेश को स्पष्ट करने तक ही सीमित है। दरअसल, अनुवाद विज्ञापन का अनुवाद करते हुए सृजन करता है, लेकिन सृजन होते हुए भी यह अनुवाद ही कर रहा होता है। इसी कारण विज्ञापन का अनुवाद करना एक कठिन और विशिष्ट कार्य है। अत: एक सामान्य अनुवादक विज्ञापन का सक्षम अनुवाद नहीं कर सकता। इसके लिए अनुवाद-कला में सिद्धहस्त और अनुवाद की सीमाओं के भीतर सृजन कार्य करने में निष्णात होना पड़ता है।''

विज्ञापन का यह स्वरूप उसके अनुवाद में आने वाली कठिनाइयों और सावधानियों की ओर ध्यान आकर्षित करता है। विज्ञापन का लक्ष्य होता है-

(1) उत्पाद के मूल संदेश (उसको क्रय करने की उपयोगिता) को उपभोक्ता तक पहुँचाना।

(2) विज्ञापित वस्तु उपभोक्ता के लिए अनिवार्य है, इस बात को अपने तरीके से उस तक पहुँचाना।

(3) अनेक विकल्पों में से यही चुना जाए इसके लिए उपभोक्ता को विवश करना।

(4) उत्पाद की सांस्कृतिक और वैयक्तिक विशिष्टता को उपभोक्ता के दिलो-दिमाग तक उतारना।

इन लक्ष्यों को उपभोक्ता तक पहुँचाने के लिए विज्ञापन के अनुवादक को जिन तरीकों का इस्तेमाल करना होता है, वे हैं-

(1) विज्ञापन की भाषा अपनी लोचपरक प्रकृति के कारण क्षेत्र विशेष की आवश्यकताओं के अनुसार अपना रूप बदल लेती है।

(2) भाषा के प्रयोक्ता को विभिन्न क्षेत्रों एवं स्थितियों के अनुसार भाषिक प्रयुक्तियों का चयन करना पड़ता है। विज्ञापन-लेखक यदि भाषा का आवश्यकता अनुसार प्रयोग नहीं करता है तो वह अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो सकता।

(3) विज्ञापन का चुटीलापन, पैनापन एवं आकर्षण बनाए रखना होता है और विज्ञापन नीरस एवं शिथिल न बन जाए, इसका भी ध्यान रखना होता है।

(4) विज्ञापन की भाषा का मन-भावन, चित्ताकर्षक, पठनीय, लच्छेदार आदि होना अति आवश्यक होता है।

(5) विज्ञापन में अनुदित बात या कथन को उसी लय, माधुर्य, रोचकता और विशिष्टता के साथ कहा जाना अनिवार्य होता है।

(6) विज्ञापनों के अनुवाद में भाषिक एवं व्याकरणिक नियमों का पालन करना आवश्यक नहीं होता।

(7) जो गुण विज्ञापन की भाषा में विद्यमान होते हैं, वे उनके अनुवाद में विद्यमान रहने चाहिए।

(8) इस बात का भी ध्यान रखा जाना चाहिए कि विज्ञापन किस प्रकार का है, उसकी सामग्री कैसी है, उसकी भाषा के तेवर कैसे हैं, क्योंकि उसी के अनुसार अनुवाद में भी वैसी ही भाषा का प्रयोग करना आवश्यक होता है।

(9) विज्ञापनों के अनुवाद में सबसे अधिक महत्व भाषा के विविध प्रयोग करने का है। भाषा की विविधता उत्पन्न करने के लिए उसका लोचपरक प्रयोग करना होता है, अर्थात् अनुवाद जैसे चाहे भाषा को विज्ञापन के मूल संदेश के सम्प्रेषण हेतु अपने ढंग से मौलिकता प्रदान करते हुए प्रयोग करता है।

विज्ञापन में अनुवाद की समस्याएँ

विज्ञापन अपने कार्य क्षेत्र के विस्तार के अनुरूप अलग-अलग भाषाओं में प्रस्तुतीकरण की माँग करता है। चूँकि वर्तमान समय भूमण्डलीकरण और विश्वग्राम के बनने की प्रक्रिया का है, अत: विज्ञापन अनुवाद की माँग विश्व स्तर पर बनी हुई है। एक विज्ञापन अनुवादक को अनुवाद करते समय बहुत सी समस्याओं का सामना करना होता है। इनमें से कुछ इस प्रकार हैं-

1. विज्ञापन के मूल संदेश का सम्प्रेषण—विज्ञापन के अनुवादक को पहली समस्या जो सामने आती है वह उस विज्ञापन के मूल संदेश को उपभोक्ता तक पहुँचाने की होती है, क्योंकि अनुदित विज्ञापनों की सफ़लता मूल भाषा के विज्ञापन के मूल संदेश (यानी विज्ञापित वस्तु को क्रय करने के लिए प्रेरित करने की क्षमता) और उसकी भावना को स्वाभाविक एवं रोचक ढंग से सम्प्रेषित करने और उपभोक्ता के मानस में गहराई तक उतार देने की क्षमता में है।

2. विज्ञापन के सांस्कृतिक सन्दर्भ—जैसा कि हमने ऊपर कहा है कि विज्ञापन एक सांस्कृतिक आन्दोलन भी है। अत: विज्ञापन का लक्ष्य सामाजिक-सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में पाठक या दर्शक को सूचना देकर बाजार में विज्ञापित उत्पादन की माँग को बढ़ाना होता है। अत: लक्ष्य भाषा के उपभोक्ताओं के सांस्कृतिक संदर्भों में स्त्रोत भाषा के सन्दर्भों का अनुवाद किया जाना एक बड़ी समस्या होती है। इसलिए अनुवादक से अपेक्षित होता है कि वह वर्ग-विशेष के सांस्कृतिक सन्दर्भों को ध्यान में रखते हुए ही अनुवाद करे।

3. भाषा की स्मरणीयता—स्त्रोत भाषा की स्मरणीयता को अनुवादक को भी लक्ष्य भाषा में बनाए रखना एक समस्या होती है। चूँकि विज्ञापनों की भाषा का यह एक महत्वपूर्ण गुण होता है, अत: अनुवादक को इसका ध्यान रखना आवश्यक होता है। इसके लिए ऐसी भाषा का प्रयोग करना होता है, जिसमें लयबद्धता, तुकबन्दी, रोचकता आदि गुण विद्यमान हों।

4. भाषा की विक्रय-शक्ति—विज्ञापन के अनुवाद में भाषा की विक्रय शक्ति भी एक बड़ी समस्या के रूप में उभरकर सामने आती है।

5. भाषा की ध्यानाकर्षण शक्ति—विज्ञापित वस्तु के प्रति उपभोक्ता का ध्यान आकृष्ट करना विज्ञापन का लक्ष्य होता है, अत: विज्ञापन के अनुवाद में ऐसी भाषा का प्रयोग किया जाता है, जो उपभोक्ता का ध्यान आकर्षित करने में सक्षम हो और उसे वह उत्पाद विशेष को खरीदने के लिए विवश कर दें।

6. भाषा के प्रतीकों का अनुवाद करने की समस्या—विज्ञापन के अनुवाद के सामने एक समस्या यह भी होती है कि वह स्त्रोत भाषा के प्रतीकों को जो कि उस उत्पाद के उपभोग के प्रतीकों से संबद्ध होते हैं, लक्ष्य भाषा में कैसे अभिव्यक्त करें।

7. भाषा की विशिष्ट लय और टोन का अनुवाद करने की समस्या—प्रत्येक भाषा की अपनी विशिष्ट लय और संवाद को सम्प्रेषित करने की टोन होती है। विज्ञांपन में भाषा के विस्तार का स्थान नहीं होता, अत: लक्ष्य भाषा में सीमित दायरे में लय और टोन का अनुवाद करना एक श्रम साध्य कार्य होता है। ❑

5 अनुवाद का सम्पादन, मूल्यांकन और समीक्षा

प्रश्न 34. पुनरीक्षण से आप क्या समझते हैं? पुनरीक्षण की प्रक्रिया का वर्णन कीजिए।

अथवा

अनुवादक अनुवाद का सम्पादन कैसे करता है? स्पष्ट कीजिए।

अथवा

"पुनरीक्षक अनुवाद की जाँच, सुधार और सम्पादन करता है।" स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-

पुनरीक्षण से आशय

पुनरीक्षण अनुवाद की जाँच और सुधार की प्रक्रिया है, जो अनुवाद पूरा हो जाने के बाद की जाती है। अंग्रेजी में इसके लिए Vetting शब्द इस्तेमाल होता है। पुनरीक्षण करने वाला व्यक्ति **पुनरीक्षक** कहलाता है। जैसा कि पुनरीक्षण नाम से ही स्पष्ट है यह अनुवाद को फिर से देखने, मूलपाठ से मिलाने, दोनों की परस्पर तुलना करने और अनुवाद में अपेक्षित सुधार संशोधन का कार्य है। इसमें अनुवाद की विभिन्न स्तरों पर और कोशों से जाँच की जाती है तथा जहाँ भी आवश्यक हो, उसमें सुधार किया जाता है। इस दृष्टि से इसे अनुवाद को संवारना और उसका सम्पादन करना भी कहा जा सकता है। मूल और अनुवाद की तुलना तथा अनुवाद की उपयुक्तता-अनुपयुक्तता की जाँच परख करने के कारण इसे अनुवाद की समीक्षा करना भी कहा जाता है। समीक्षा की बजाए पुनरीक्षण शब्द अधिक उपयुक्त है, क्योंकि किसी पाठ अथवा कृति की समीक्षा करते समय उसकी गुणवत्ता का मूल्यांकन किया जाता है। उसकी सीमाओं और सम्भावनाओं पर समीक्षक अपनी राय देता है। लेकिन पुनरीक्षण की प्रक्रिया में पुनरीक्षक अपनी राय या टिप्पणी नहीं देता, अनुवाद में ही सुधार संशोधन-सम्पादन करता है और उसे बेहतर बनाने का प्रयास करता है।

अंग्रेजी का Revision शब्द भी दोबारा अवलोकन और जाँच के सन्दर्भ में उपयुक्त होता है। इस दृष्टि से Vetting और Revision काफी निकट अर्थ रखते हैं। लेकिन अनुवाद

के सन्दर्भ में Vetting शब्द ही उपयुक्त होता है। वह अनुवाद प्रक्रिया का तकनीकी पारिभाषिक शब्द है, जो सूचनात्मक साहित्य के अनुवाद से विशेष रूप से संम्बन्ध है। वैज्ञानिक, तकनीकी, प्रशासनिक, वाणिज्यिक, विधिक तथा अन्य सूचना प्रधान विषयों के अनुवाद में इसका विशिष्ट महत्व है। साहित्यिक अनुवाद के सन्दर्भ में पुनरीक्षण शब्द अकसर नहीं चलता है। कारण, साहित्यिक अनुवाद प्राय: स्वप्रेरणा से और सर्जनात्मक इच्छा की पूर्ति के लिए किया जाता है। इसमें अनुवादक भाव-विधान तथा शिल्प सम्बन्धी छूट लेने का अधिकारी होता है, अत: ऐसे अनुवादों के पुनरीक्षण की अपेक्षा नहीं होती। उनकी तो समीक्षा या मूल्यांकन होता है।

हाँ संस्थागत स्तर पर जब साहित्यिक अनुवाद कराया जाता है- साहित्य अकादमी, नेशनल बुक ट्रस्ट या ऐसी ही अन्य संस्थाएँ जब किसी कृति का अनुवाद कराती हैं, तो उस अनुवाद की जाँच क्षेत्र-विशेष के किसी विद्वान द्वारा कराती है, लेकिन यह जाँच भी मूल्यांकनपरक ही होती है।

पुनरीक्षण की प्रक्रिया

पुनरीक्षण की प्रक्रिया में निम्नलिखित कार्य शामिल हैं-

1. मूल पाठ और अनुवाद को पढ़ना—पुनरीक्षण अनुवाद और मूल पाठ को पंक्ति-दर-पंक्ति पढ़ता है। इसमें ऐसा नहीं होता है कि हर बार मूल पाठ को पूरा पढ़ लिया जाए, फिर अनुवाद को पूरा पढ़ा जाए। ऐसा करने से तो केवल यह पता लगाया जाएगा कि मूल कृति/पाठ में निहित समस्त भाव अनुदित पाठ में आ पाया है अथवा नहीं। पुनरीक्षण में मूल पाठ की प्रत्येक पंक्ति को अनुदित पाठ की प्रत्येक पंक्ति के साथ पढ़ा जाता है। इससे यह पता लग जाता है कि कोई अंश अनुवाद किए बगैर छूटा तो नहीं है। यदि छूटा है तो क्यों छूटा है? भूलवश अथवा जानबूझकर। यदि जानबूझकर छूटा है तो छोड़ने का कारण भी पता लग जाता है। यह भी पता लगाया जाता है कि वह अंश छोड़ने लायक है या नहीं। यदि भूलवश छूटा है तो पुनरीक्षण उस अंश का अनुवाद करता/कराता है। सूचनापरक साहित्य में अक्सर कथ्य का कोई अंश छोड़ा नहीं जाता, क्योंकि वहाँ भावानुवाद नहीं होता। लेकिन यदि किसी अंश को अनुवाद में प्रस्तुत किए बगैर भी बात पूरी हो गई हो या कोई अंश लक्ष्य भाषा के मुहावरे के प्रतिकूल हो तो उसे रखना अनिवार्य नहीं होता।

2. अनुवाद और मूल पाठ का मिलान/तुलना—मूल पाठ और अनुवाद को पंक्ति-दर-पंक्ति पढ़ते हुए दोनों की तुलना की जाती है। यह तुलना कथ्य और भाषा शैली दोनों के स्तर पर होती है। तुलना की इस प्रक्रिया में पुनरीक्षक जाँच करता है कि अनुवाद में कोई भूल तो नहीं रह गई। उसमें वही कहा गया है जो स्त्रोत भाषा पाठ में निहित है। कहीं दोनों का आशय अथवा निहितार्थ अलग-अलग तो नहीं जा पड़ा है। दोनों के कथन के ढंग से कोई ऐसा अन्तर तो नहीं है कि दोनों की भिन्न-भिन्न ध्वनि निकलती हो। इस प्रक्रिया में पुनरीक्षक अनुवाद की गलतियों का पता लगाता है।

3. कथ्यगत गलतियों का सुधार—मूल पाठ और अनुवाद की तुलना करने पर पुनरीक्षक को अनुवाद में जो भी कथ्यगत भूलें अथवा अशुद्धियाँ मिलती हैं उनका सुधार करता है। वह देखता है कि अनुवाद का वही अर्थ निकल रहा है, जो मूल पाठ का निकलता है। जहाँ कहीं भी दोनों के अर्थ में भेद होता है, वहीं वह अनुदित पाठ में सुधार करके उसे मूल पाठ के निकट लाने का प्रयास करता है। उदाहरण के लिए, एक अंग्रेजी पंक्ति और उसका अनुवाद है।

"I have no reservation about this point".

"मेरे पास इस मुद्दे पर कोई आरक्षण नहीं है।"

ऐसी स्थिति में पुनरीक्षक मूल वक्ता के कथन का निहितार्थ प्रस्तुत करके अनुवाद को सुधारता है।

इस अनुवाद में मूल वक्ता का आशय बिल्कुल भी नहीं आया है।

मूल वक्ता कहना चाह रहा है कि, "इस विषय पर मेरा कोई मतभेद/असहमति नहीं है।"

4. भाषागत गलतियों का सुधार—कथ्यगत और अर्थगत गलतियों के सुधार के पश्चात् पुनरीक्षक अनुवाद की भाषा सम्बन्धी भूलों का पता लगाता है। वह देखता है कि अनुवाद की भाषा कथ्य के अनुरूप है कि नहीं यानी मूल पाठ के विषय के अनुकूल शब्दावली का प्रयोग लक्ष्य भाषा में किया गया है अथवा नहीं। आप जानते होंगे कि विभिन्न विषयों की अपनी-अपनी शब्दावली होती है। जैसे विज्ञान, विधि और साहित्य के क्षेत्र की शब्दावली में पर्याप्त अन्तर होता है। अनुवादक स्वयं ध्यान रखता है कि विषयानुकूल शब्दावली प्रयुक्त हो। फिर भी पुनरीक्षक को जाँचना होता है कि कहीं अनुवाद की शब्दावली अनुद्य विषय से दूर तो नहीं जा पड़ी। उदाहरण के लिए Plant के मायने 'पौधा' और 'संयंत्र' दोनों हैं। उद्योग सम्बन्धी अनुवाद में उसे देखना है कि आशय किस 'प्लांट' से है किसी औद्योगिक इकाई से अथवा उन पौधों से जिनसे उद्योग के लिए कच्चा माल मिलता है। उदाहरण के लिए, दो वाक्यों को देखिए। इसमें रेखांकित शब्दों पर ध्यान दीजिए, पहले वाक्य में Plant आशय संयंत्र से है और दूसरे में पेड़-पौधे से-

(a) Mother dairy plant has been installed.

(b) Eucalyptus plants have been provided to the villagers.

इसके अलावा पुनरीक्षक को यह भी देखना होता है कि कहीं अटपटी भाषा तो नहीं प्रयुक्त हुई है। वाक्य विन्यास सहज है कि नहीं। अनुवाद की भाषा लक्ष्य भाषा की प्रवृत्ति और मुहावरे के अनुकूल है कि नहीं। निम्नलिखित उदाहरण भारत सरकार के मंत्रालय द्वारा जारी विज्ञापन से है। आप इसे पढ़ते ही समझ जाएँगे कि यह मूल भाषा में न लिखा होकर अनुवाद है और कैसा हू-ब-हू शब्दानुवाद है।

"एक प्रदूषित आकाश आपके जीवन को कम बना देता है

मोटर वाहनों के प्रदूषण पर नियंत्रण कीजिए"

अंग्रेजी में कहा गया होगा-

"A polluted sky reduces your life.

Control motor vehicle pollution."

अब हिन्दी में यह जरूरी नहीं है कि आप 'a' के स्थान पर 'एक' अवश्य लिखें। फिर आसमान दो चार नहीं होता इसलिए भी एक लिखना बेमाने है। इसी तरह आपके जीवन को कम बना देता है हिन्दी मुहावरे के अनुकूल नहीं। इसकी जगह लिखना चाहिए- प्रदूषित आकाश आपकी उम्र घटाता अथवा प्रदूषित आकाश से आपकी आयु क्षीण होती है। इसी तरह 'मोटर वाहनों का प्रदूषण' नहीं 'मोटर वाहनों से होने वाला प्रदूषण' लिखा जाना चाहिए।

इस प्रकार अनुवाद की भाषा सम्बन्धी भूलों का पता लगाकर पुनरीक्षक उपयुक्त शब्दावली प्रयोग करता है तथा वाक्य विन्यास में अपेक्षित संशोधन और सुधार करता है। साथ

ही देखता है कि भाषा वाक्य के स्वभाव के अनुकूल तो है। कहने का तात्पर्य है कि गद्य सरल, हास्यप्रधान आदि विषयों के अनुकूल भाषा का प्रयोग हुआ है या नहीं, यह देखना पुनरीक्षक का दायित्व है।

5. शैलीगत सुधार—हर विषय और स्थिति के अनुरूप लेखन की विशिष्ट शैली होती है, जिससे भाषा में प्राजंलता और सौष्ठव आता है। अनुवाद में विषयानुकूल शैली का प्रयोग हुआ है अथवा नहीं इसकी जाँच पुनरीक्षक करता है और जहाँ कहीं आवश्यकता होती है, वहाँ सुधार करता है। उदाहरण के लिए निम्नलिखित अनुवादों को देखिए-

उदाहरण-1. The Municipal Committee will supply eggs to the schools.
म्यूनिसिपल कमेटी स्कूल को अंडे देगी।

उदाहरण-2. Free treatment for the eyes.
मुक्त आँखों का इलाज।

उदाहरण-3. Jai Prakash Narayan has gone again into a state of unconsciouness.
जय प्रकाश नारायण फिर वेहोशी की हालत में चले गए।

उदाहरण के अनुवाद से ऐसा प्रतीत होता है कि नगर पालिका एक मुर्गी है और वह स्कूलों को अण्डे देगी। दूसरे उदाहरण में, अनुवाद से ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे आँखें मुफ्त है न कि इलाज। इसी प्रकार तीसरे उदाहरण से यह प्रतीत होता है कि जय प्रकाश नारायण अपनी इच्छा से वेहोश हो गए हैं।

जवकि ऊपर दिए गए तीनों उदाहरणों का सही अनुवाद निम्न प्रकार होना चाहिए-

1. नगरपालिका स्कूलों में अण्डों की आपूर्ति करेगी।
2. आँखों का मुफ्त इलाज।
3. जयप्रकाश नारायण फिर से वेहोश हो गए।

पुनरीक्षक यह भी देखता है कि कहीं गम्भीर अथवा पांडित्यपूर्ण विषय को वहुत अधिक सरलीकृत शैली में तो नहीं कहा गया अथवा अत्यन्त सरल विषय को जटिल शैली में तो प्रस्तुत नहीं किया गया तथा मूल कथ्य के मनोभावों एवं स्थितियों के अनुकूल शैली अपनाई गई है अथवा नहीं।

इसी प्रकार पुनरीक्षक देखता है कि अनुद्य सामग्री किन लोगों द्वारा पढ़ी जानी है उन लोगों की अपेक्षाओं के अनुरूप सुधार और संशोधन भी वह अनुवाद में करता है। मान लीजिए कोई अनुदित सामग्री विदेशी लोगों द्वारा पढ़ी जानी है तो पुनरीक्षक को देखना होगा कि अनुवाद कुछ ऐसा तो नहीं है जो विदेशियों को संस्कार अथवा परिवेश की भिन्नता के कारण समझ में न आ सकें।

6. अनुदित पाठ की लक्ष्य भाषा संस्कृति की दृष्टि से जाँच—प्रत्येक भाषा किसी संस्कृति विशेष से जुड़ी होती है। जिस समाज और संस्कृति को यह भाषा अभिव्यक्त करती है, उस समाज और संस्कृति का अपने में वहन भी करती है।

स्त्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा दो भिन्न-भिन्न भाषा भाषी समाजों का प्रतिनिधित्व करती है। कभी-कभी यह भिन्नता वहुत अधिक होती है और कभी-कभी वहुत कम। उदाहरण के लिए, विभिन्न भारतीय भाषाओं में काफी सांस्कृतिक एकता है, लेकिन विदेशी भाषाओं से उनकी वैसी सांस्कृतिक समानता नहीं है। अनुवाद की प्रक्रिया में किया जाने वाला भाषान्तरण

एक हद तक सांस्कृतिक अन्तरण भी होता है। कथ्य की स्त्रोत भाषा की संस्कृति से लक्ष्य भाषा की संस्कृति में अन्तरित किया जाता है।

पुनरीक्षक करते समय पुनरीक्षण को यह तो देखना ही पड़ता है कि अनुवाद में वही कहा गया है जो स्त्रोत भाषा में मौजूद है। लेकिन इसके साथ ही यह भी देखना पड़ता है कि लक्ष्य भाषा संस्कृति में वह बात ग्राह्य है अथवा नहीं। कुछ बातें कुछ समाजों में स्वीकार्य होती हैं, लेकिन दूसरे समाजों में नहीं। उदाहरण के लिए अंग्रेजी का वाक्य है। "He is as humble as a sheep."

अब यदि हिन्दी में अनुवाद कर दिया गया है, "वह भेड़ की तरह विनम्र भला है।" तो यह सर्वथा अनुपयुक्त है। पुनरीक्षण को विनम्रता की ऐसी उपमा देनी होगी जो हिन्दी भाषा संस्कृति में मान्य है। उदाहरण के लिए वह लिख सकता है "वह तो बिल्कुल गऊ है।"

7. अनुवाद का सम्पादन—अन्य सब तरह के भूल सुधार और संशोधन के पश्चात् अनुवादक अनुवाद के मूल पाठ के फार्मेट के अनुरूप सम्पादन करता है। प्रत्येक पाठ्य सामग्री का एक बाहरी ढाँचा होता है, जिसमें पाठ के विभिन्न अध्यायों-अनुच्छेदों के विभाजन, पैराग्राफ विभाजन, अंकन, विभिन्न खण्डों के लिए अलग-अलग अंकों अथवा वर्णक्षरों का प्रयोग, चित्र आलेख आदि के निर्धारित स्थान आदि की जाँच करता है और उनमें अपेक्षित सुधार करता है। ऐसा करते समय वह स्त्रोत भाषा पाठ का अनुपालन करते हुए भी आवश्यकतानुसार लक्ष्य भाषा की प्रकृति का अनुसरण करता है। उदाहरण के लिए, विभिन्न खण्डों के लिए वर्णांकित संख्याओं a, b, c, d, e, f, g, h, i, j आदि के लिए यदि हिन्दी में अ, ब, स, द, ... संख्याएँ प्रयुक्त की जाएँ तो उपयुक्त नहीं रहतीं। न ही अ, आ, इ, ई ..... स्वरों का वर्णानुक्रम इस उद्देश्य के लिए स्वीकार्य हैं। हिन्दी वर्ण का गिनती के लिए प्रयोग करना क, ख, ग, घ, के क्रम में चलता हैं। चूँकि वह हिन्दी में मान्य पद्धति है, अतः अनुवाद में इसी को अपनाना अपेक्षित होता है।

पुनरीक्षक को देखना यह होता है कि जहाँ मूल में संख्यांक 1, 2, 3, 4 हैं वहाँ अनुवाद में संख्यांक ही रहें, जहाँ रोमन अंक हैं वहाँ उन्हीं को रखा जाए यानी i, ii, iii, iv । ❑

प्रश्न 35. अनुवाद मूल्यांकन से आप क्या समझते हैं? अनुवाद मूल्यांकन की पद्धतियाँ लिखिए। अथवा
अनुवाद मूल्यांकन क्या है? अनुवाद मूल्यांकन की विधियाँ बनाइए।

उत्तर-

अनुवाद मूल्यांकन का अर्थ

मूल्यांकन शब्द मूल्य + अंकन से निर्मित समस्त पद है जिसका कोशगत अर्थ है- किसी वस्तु की उपयोगिता, गुण, महत्व आदि का होने वाला अंकन। पुनरीक्षण और मूल्यांकन दोनों ही अनुवाद के बाद की प्रक्रियाएँ हैं और दोनों में ही अनुवाद की जाँच की जाती है। पुनरीक्षण में जहाँ जाँच के साथ सुधार, संशोधन और सम्पादन भी किया जाता है, वहाँ मूल्यांकन में केवल जाँच की जाती है। जाँच के बाद अनुवाद की गुणवत्ता, उसकी उपलब्धियों एवं अनुपलब्धियों पर टिप्पणी की जाती है।

अनुवाद मूल्यांकन की पद्धतियाँ

मूल्यांकन के सन्दर्भ में अनेक पद्धतियों का विकास हुआ है। इसका मुख्य कारण था अनुदित पाठ को विभिन्न प्रक्रियाओं से गुजार कर उसके गुणात्मक एवं उपलब्धिपरक पहलुओं

का परीक्षण। विभिन्न पद्धतियों में परस्पर भिन्नता अधिक नहीं थी। इसी से अनुवाद मूल्यांकन की मुख्य पद्धतियों का विवरण इस प्रकार है-

1. पुनरनुवाद आधारित मूल्यांकन

पुनरुनुवाद आधारित मूल्यांकन पद्धति के अन्तर्गत किसी मूल पाठ के अनुवाद का स्रोत भाषा में पुनः अनुवाद किया जाता है। इसमें अनुवादक और पुनरुनुवादक अलग-अलग व्यक्ति होते हैं। पुनरुनुवादित पाठ की तुलना मूल पाठ से की जाती है। इसमें त्रुटियों को पहचाना जाता है और उनका संशोधन किया जाता है। इस पद्धति से अनुवाद की शुद्धता और यथातथ्यता की जाँचकर अनुवाद की सफलता को मापा जा सकता है। यह पद्धति भाषापरक त्रुटियों के लिए उपयोगी तो हैं, किन्तु सामाजिक-सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों के परिप्रेक्ष्य में अधिक कारगर सिद्ध नहीं होती। मूल पाठ में जो सांस्कृतिक अभिव्यक्ति है, यह आवश्यक नहीं कि वह अनुदित पाठ में बोधगम्य और सम्प्रेषणीय बन सके।

उदाहरण के लिए, अंग्रेजी वाक्य 'No Smoking' का हिन्दी अनुवाद 'धूम्रपान निषेध' हुआ और इसी का अंग्रेजी में पुनरनुवाद 'Smoking is Prohibited' हो जाता है। इसी प्रकार हिन्दी वाक्य 'अन्दर आना मना है' का अंग्रेजी अनुवाद 'No admission' हुआ और इसी का हिन्दी में पुनरुनुवाद 'प्रवेश वर्जित' होता है तो इससे हमारा उद्देश्य सफल नहीं हो पाता। 'Strictly speaking', 'Truly speaking', 'to be honest' आदि के लिए हिन्दी में अक्सर 'सच-सच कहें' आदि का प्रयोग होता है, अतः अनुवाद करते समय वाक्य में इनका शाब्दिक अनुवाद उपयुक्त नहीं होगा। दूसरी ओर, हिन्दी में 'चरणामृत' और 'पंचामृत' शब्द भारतीय सांस्कृतिक और धार्मिक रीति-रिवाजों तथा अन्य संस्कारों से अपरिचित यूरोपीय समाज के लिए अपरिचित हैं, अतः इसका अनुवाद सटीक अर्थ नहीं दे पाएगा। इस प्रकार आप देखते हैं कि पुनरुनुवाद आधारित मूल्यांकन पद्धति पूर्णतया सफल मूल्यांकन पद्धति सिद्ध नहीं हो पाती।

2. अनुक्रिया आधारित मूल्यांकन

20वीं शताब्दी के छठे दशक तक पहुँचते-पहुँचते पाठ प्रकार्य को मूल्यांकन का सबसे महत्वपूर्ण आधार माना जाने लगा। इसके केन्द्र में थी पाठ की अनुक्रिया। फॉर्स्टर, नाइडा और टेबर ने इन्हीं आधारों को अनुवाद मूल्यांकन के लिए आवश्यक माना। इस संकल्पना की मूल धारणा यह थी कि जिस प्रकार मूल पाठ अपने वास्तविक सन्दर्भ के पाठकों पर प्रभाव छोड़ता है, अनुदित पाठ भी अपनी भाषा के सन्दर्भ में वैसा ही प्रभाव अपने पाठकों पर डालें। सैद्धान्तिक दृष्टि से यह धारणा काफी तर्कसंगत प्रतीत होती है, किन्तु व्यवहार में यह उतनी ही असफल और दुस्साध्य साबित होती है। पहले तो किसी भी पाठक अथवा पाठक वर्ग की अनुक्रिया को मापने का कोई निश्चित साधन नहीं है, क्योंकि अनुवाद की अनुक्रिया प्रत्येक भाषा-भाषी की समसामयिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक पारिस्थितियों पर निर्भर करती है। भाषाई दृष्टि से अनुवादक समतुल्यता के आधार पर सही चयन करने में तो सफल हो सकता है, किन्तु भूमिका निर्वाह की पूर्ण समतुल्यता लाना सम्भव नहीं है।

दूसरे ऐसे पाठक (वर्ग) का चयन किस आधार पर किया जाए। इतना ही नहीं दो भाषाओं के पाठक वर्गों की असमान स्थिति भी ऐसी तुलना में बाधा बन सकती है। अतः तार्किक दृष्टिकोण से सन्तुष्ट होते हुए भी यह प्रविधि अनुवाद का मूल्यांकन करने में कारगर सिद्ध नहीं हुई। भारतीय नाटकों में जो विशिष्ट सामाजिक एवं सांस्कृतिक सन्दर्भों का जो रूप मिलता है, वह अंग्रेजों में अनुदित कृतियों में सम्भव नहीं है। यही कारण है 'अभिज्ञान

शाकुन्तलम' तथा 'मनुस्मृति' आदि के अनुवादों में कई भ्रम उत्पन्न हुए देखे गए हैं। ठीक नाटकों के साथ भी यह स्थिति पाई जाती है। नाइडा के अनुवाद सिद्धान्त के परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन के लिए सम्प्रेषण प्रक्रिया में सहजता, कथ्य का बोधन तथा अनुक्रिया अर्थात् पाठक वर्ग में उत्पन्न प्रभाव की समतुल्यता महत्वपूर्ण कारक है।

प्रश्न 36. अनुवाद मूल्यांकन के प्रमुख आधारों का वर्णन कीजिए।

अथवा

अनुवाद मूल्यांकन के प्रकारों पर प्रकाश डालिए।

अनुवाद मूल्यांकन के आधार

उत्तर-

पिछले पाठ्यक्रमों के अध्ययन से आपने यह अनुभव किया होगा कि अनुवाद मूल्यांकन का मुद्दा एक बड़ा ही जटिल, विवादास्पद तथा संवेदनशील मुद्दा है। अभी तक किसी ऐसे सुनिश्चित एवं संपुष्ट आधार की खोज अन्तिम रूप से नहीं हो पाई है, जिसके प्रयोग से असंदिग्ध और विभ्रान्ति रूप से किसी अनुवाद का मूल्यांकन किया जा सके। तथापि, कुछ विद्वानों द्वारा वर्णित आधार यहाँ प्रस्तुत किए जा रहे हैं। नाइडा और टेबर ने अनुवाद मूल्यांकन के तीन आधार बताए हैं- (1) संदेश का सहज संप्रेषण, (2) पठनीयता द्वारा बोधन और (3) अनुवाद की पर्याप्तता से पाठक की अभिरुचि। ये आधार अच्छे अनुवाद की बात तो करते हैं, किन्तु मूल्यांकन द्वारा अच्छे-बुरे अनुवाद में स्पष्ट भेद नहीं कर पाते, क्योंकि इन आधारों में वैज्ञानिकता और वस्तुनिष्ठता नहीं मिलती। इसके बाद इन दोनों विद्वानों ने अनुवाद मूल्यांकन के निम्नलिखित आधार प्रस्तावित किए हैं, जो अनुक्रिया सम्बन्धी प्रभाव को मापने के लिए प्रायोगिक प्रतीत होते हैं। इनके प्रकार इस तरह बताए गए हैं-

(क) क्लोज परीक्षण
(ख) बोधन परीक्षण
(ग) सस्वर पठन
(घ) उत्तम अनुवाद से तुलना।

(क) क्लोज परीक्षण—अनुवाद मूल्यांकन के आधार के रूप में इसका प्रयोग तो 1953 से ही टेबर ने करना आरम्भ कर दिया था। गेस्टॉल्ट मनोविज्ञान 'क्लोजर' सिद्धान्त के अनुसार यदि इसमें एक निश्चित संख्या के बाद जैसे पाँचवें, सातवें, नौवें आदि शब्दों को अनुदित पाठ में से निकालकर पाठक को दे दिया जाता है और उनसे रिक्त स्थानों की पूर्ति करने के लिए कहा जाता है। पाठक उस रिक्त स्थान पर जिस शब्द को उपयुक्त एवं सटीक समझता है उसकी पूर्ति कर देता है। इसके बाद पूर्तियों से मिलान करके देखा जाता है कि पाठक के अनुमान कितने सही हैं। इस परीक्षण के पीछे दार्शनिक आधार यह है कि यदि पाठक को सम्पूर्णता का आभास है तो वह उसमें पाई जाने वाली रिक्तियों को यथासम्भव समीपस्थ शब्दों द्वारा स्वत: ही भर लेगा, परन्तु एक अच्छी मूल्यांकन पद्धति होने के बावजूद रिक्त स्थानों की पूर्ति करते समय सही विकल्पों के चयन के अभाव तथा पाठक का मूल पाठ से सम्पर्क न होने के कारण यह मूल्यांकन एक पक्षीय रह जाता है। इस पद्धति से एक प्रकार की चयन अराजकता की भी आशंका हो जाती है।

(ख) बोधन परीक्षण—बोधन परीक्षण के अन्तर्गत किसी अनुदित पाठ पर आधारित ऐसे प्रश्न बनाए जाते थे, जिनसे उसमें निहित सूचना तत्वों की पकड़ (समझ) का आकलन हो सके। यदि मूल पाठ में प्रयुक्त सामाजिक, सांस्कृतिक और सौन्दर्यवर्धक तथ्यों का अनुदित

पाठ के माध्यम से बोध सहज रूप से होता है तो उसे अच्छा अनुवाद माना जाता है। यहाँ यह महत्वपूर्ण है कि प्रश्नकर्ता कौन है तथा क्या वह लक्षित पाठ का सही-सही आशय जान पाया है, या नहीं।

(ग) सस्वर पठन अथवा वाचन परीक्षण—पाठ की उपयुक्तता एवं सम्पूर्णता का यह आधार प्राचीन संस्कृत ग्रन्थों के सस्वर वाचक जैसी ही है। नाइडा और टेबर ने किसी अनुदित पाठ के सस्वर पठन अथवा वाचन को भी एक आवश्यक आधार माना, क्योंकि इसमें तीन-चार लोगों से अनुवाद का सस्वर वाचन करने के लिए कहा जाता है और यह देखा जाता है कि वाचन करते समय वाचनकर्ता कहाँ-कहाँ भटकता है, हिचकता है या त्रुटियाँ करता है, इससे भाषा की लय और सम्प्रेषणीयता अधिक सहज हो सकती है। इसमें पाठ का सस्वर पाठ, तत्पश्चात् उसमें निहित संदेश का संवाहन तथा उच्च स्वर से पाठन वास्तव में अनुदित पाठ की सम्प्रेषणीयता हेतु परखने के चरण हैं।

वाचन-परीक्षण की यह पद्धति सिद्धान्त रूप में अच्छी लगती है, किन्तु व्यावहारिक रूप में लम्बी प्रक्रिया है। इसमें एक व्यक्ति की राय पर निर्भर न रहकर अनेक व्यक्तियों की राय उभर आती है और उसमें भिन्नता की सम्भावना रहती है। इसमें विभिन्न व्यक्तियों के अपने ज्ञान और उनकी अभिव्यक्ति क्षमता का पता तो चल सकता है, किन्तु अनुवाद की कमियों की जानकारी नहीं मिल पाएगी और न ही अनुवाद के विभिन्न शैलीगत रूपों का पता चल पाएगा।

(घ) उत्तम अनुवाद से तुलना अर्थात् तुलनात्मक परीक्षण—किसी उत्तम अनुवाद से तुलना करते हुए अनुवाद का मूल्यांकन करना भी एक निर्णायक आधार मान लिया गया, जिसके चयन के लिए कुछ सक्षम निर्णायकों की राय ले ली जाती है और इसी के आधार पर विशिष्ट पाठक वर्ग से अनुदित पाठ से सम्बद्ध प्रश्न भी पूछे जाते हैं। उत्तम अनुवाद का चयन तथा अनुदित पाठ के साथ उसकी साम्यता का प्रश्न यहाँ महत्वपूर्ण माना जाता है।

ये सभी पद्धतियाँ उपयोगी होते हुए भी व्यावहारिक दृष्टि से अनुवाद का मूल्यांकन करने में पूरी तरह सक्षम नहीं थी, क्योंकि इस सम्बन्ध में जो भी प्रयोग किए गए, वे या तो बहुत सीमित थे या बहुत कृत्रिम और जटिल। उदाहरण के लिए, किसी उत्तम अनुवाद का चयन सक्षम निर्णायकों की राय से ही हो सकता है, किन्तु इन सक्षम निर्णायकों की वास्तविक क्षमता का निर्णय अपने में संदेहास्पद बन जाता है। इसके अतिरिक्त ये सभी मूल्यांकन पद्धतियाँ वस्तुनिष्ठ होने की अपेक्षा व्यक्तिनिष्ठ अधिक हैं और दूसरे, मूल पाठ से इसका कोई सम्बन्ध नहीं रखा गया, जिससे जाँच करने पर सही एवं सटीक को खोज निकालने में सुविधा हो। इन पद्धतियों में बोधगम्यता की मात्रा को ध्यान में रखकर मूल्यांकन किया जाता है, लेकिन अच्छे अनुवाद का मूल्यांकन मूल पाठ को बिना ध्यान में रखे सही नहीं हो सकता। इन परीक्षणों से पाठ की बोधगम्यता, प्रवाहशीलता, स्वाभाविकता आदि की जाँच तो की जा सकती है, किन्तु गुणवत्ता को नहीं मापा जा सकता। ❑

प्रश्न 37. अनुवाद मूल्यांकन के मुख्य आयामों पर प्रकाश डालिए।

अथवा

अनुवाद मूल्यांकन की दृष्टि से अच्छे अनुवाद के प्रमुख गुणों को लिखिए।

उत्तर-

अनुवाद मूल्यांकन के मुख्य आयाम

अनुवाद मूल्यांकन हेतु अनेक मनोवैज्ञानिक परीक्षाओं में, अनुवाद का सुयोग्य (जी.ए. मिल्लर तथा वी.जे. सेटर आदि) विद्वानों द्वारा मूल्यांकन, सांख्यिकीय सूचकों द्वारा आदर्श

अनुवाद से तुलना तथा अनुदित पाठ के पाठकों की राय भी महत्वपूर्ण मानी गई है। इसके अतिरिक्त अनुवाद में अन्य व्यावहारिक पक्षों को भी जैसे जे.बी. कैरोल अनेक विद्वानों ने महत्वपूर्ण माना है ताकि अनुवाद अपने मूल उद्देश्य की पूर्ति कर सकें।

अनुवाद मूल्यांकन की दृष्टि से अच्छे अनुवाद में चार गुणों का होना अनिवार्य माना गया है- (1) मूल निष्ठता, (2) पठनीयता, (3) बोधगम्यता, (4) प्रयोजन सिद्धि।

1. मूलनिष्ठता—अनुदित पाठ में उन सभी सूचना तत्वों का आना आवश्यक है, जो मूल पाठ में अभिप्रेत हैं। यही मूलनिष्ठता है। मूल पाठ के कथ्य या विषय-वस्तु का अंतरण करते हुए उसकी विधा या शैली को भी ध्यान में रखना आवश्यक है। प्रयुक्ति के क्षेत्र में प्रशासन, विधि, विज्ञान की अपनी शब्दावली, शैली और मुहावरा होता है। अत: उसी के अनुरूप अन्तरण की अपेक्षा रहती है। शब्द या वाक्य या प्रोक्ति के स्तर पर यदि मूल पाठ को पृष्ठभूमि में रखा जाता है तो सफल अनुवाद की सम्भावना अधिक रहती है।

2. पठनीयता—पठनीयता की सबसे बड़ी कसौटी यह है कि अनुवाद अनुवाद न लगे, मूल लेखन जैसा प्रतीत हो। अच्छे अनुवाद की सबसे बड़ी पहचान यही है। पठनीयता का सम्बन्ध अभिव्यक्ति से है। एक कथ्य को अभिव्यक्त करने के लिए अनुवादक के पास कई विकल्प हो सकते हैं, किन्तु अनुवादक की सर्जनात्मक शक्ति मूलपाठ की सीमाओं से बंधी है, इसलिए वह अपनी शिक्षा, अभिरुचि और ज्ञान के कारण उनमें से किसी एक विकल्प को चुनेगा। यहाँ ध्यान देने की बात यह है कि उसने जिस विकल्प का चयन किया है उसका सामान्यत: लक्ष्यभाषा का विकल्प होना आवश्यक है अन्यथा वह बोधगम्य नहीं होगा। हालाँकि यह स्थिति कठिन है। यदि यह अनुवाद स्वाभाविक हो जाता है तो उसमें काफी मात्रा में बोधगम्यता और सम्प्रेषणीयता भी होगी।

3. बोधगम्यता—पठनीयता और बोधगम्यता एक-दूसरे से जुड़े आयाम है। पठनीयता का सम्बन्ध जहाँ अभिव्यक्ति से है, वहीं बोधगम्यता का संदेश से। यदि अनुवाद पठनीय होगा तो उसमें सहजता एवं स्वाभाविकता होने के साथ-साथ बोधगम्यता और सम्प्रेषणीयता भी होगी।

4. प्रयोजन सिद्धि—यह तो आपने अनुवाद सम्बन्धी चर्चा में अब तक जान लिया है कि अनुवाद कार्य एक सोद्देश्य व्यापार है। अत: अनुवादक ने जिस प्रयोजन के लिए अनुवाद कार्य किया, अगर वह उसमें सफल हो जाता है तो अनुवाद भी सफल हो जाता है। लक्ष्य भाषा का पाठक अगर मूल संदेश को भली-भाँति समझ एवं आत्मसात कर लेता है तो इसका अभिप्राय यह है कि वह उसका प्रयोजन भी सिद्ध समझ जाएगा। इस दृष्टि से यह अनुवाद लक्ष्य भाषा में स्वीकार्य होने पर अपने प्रयोजन को सिद्ध कर लेता है। इस प्रकार मूलनिष्ठता, पठनीयता, बोधगम्यता और प्रयोजनसिद्धि अनुवाद मूल्यांकन के मुख्य आयाम हैं।

इन सभी आयामों पर चर्चा के क्रम में यह भी बताना आवश्यक है कि मूल पाठ की शैली की रक्षा करना अनुवादक के लिए कठिन कार्य है। अनुवादक का व्यक्तित्व, उसकी भाषा-शैली, उसकी सोच अनुदित पाठ में कहीं न कहीं आ ही जाती है, विशेषकर सर्जनात्मक साहित्य में। अत: अनुवाद कभी-कभी अनुवादक सापेक्ष हो जाता है, किन्तु अनुवादक मूल्यांकन में आत्मपरकता और सापेक्ष तत्वों को स्थान न देना ही उचित होगा। दूसरे, मूल पाठ के भाव को लक्ष्य भाषा की प्रकृति के अनुरूप संजोना कोई सरल कार्य नहीं है। यदि अनुवादक भाषा अथवा संरचना पर ध्यान केन्द्रित करता है तो भावों में व्याघात उत्पन्न होता है और भावों की अविकल पुनर्रचना करता है तो व्याकरण उसका साथ नहीं देता। ऐसी स्थिति

में मूल्यांकनकर्ता का दायित्व बढ़ जाता है। इस स्थिति में मूल्यांकन की प्रविधि या पद्धति का विकास ऐसा होना चाहिए कि उसमें उपर्युक्त सभी लक्षण, आयाम, पक्ष और पहलू समाविष्ट हों, जिससे कृति का समग्र मूल्यांकन वस्तुनिष्ठ और प्रयोजनसिद्ध हों।

प्रश्न 38. अनुवाद समीक्षा क्या है? अनुवाद समीक्षा की प्रकृति, उद्देश्य, प्रविधि एवं प्रारूप बताइए।

अथवा

अनुवाद समीक्षा के स्वरूप पर विस्तार से चर्चा कीजिए।

अथवा

अनुवाद समीक्षा विशिष्ट मूल्यांकन प्रविधि है। समझाइए।

अनुवाद समीक्षा

उत्तर-

अनुवाद समीक्षा, अनुवाद सिद्धान्त का अनुप्रयोगात्मक पक्ष है। अनुवाद समीक्षा का तात्पर्य है, मूल भाषा पाठ की तुलना में अनुदित पाठ के गुण-दोष का विवेचन। यह विवेचन समीक्षक के स्वेच्छाचार से नहीं, अपितु अनुवाद सिद्धानत की मान्यताओं से अनुशासित होता है। यह अनुवाद-कार्य के स्थितिशील आगम को विज्ञापित करता है- अनुवाद कार्य की निष्पत्ति से सम्बन्धित है। अनुवाद समीक्षा ही वह स्थिति है, जिसमें 'अनुवाद एक सम्बन्ध है' इस मान्यता का अनुप्रयोग होता है। अनुवाद उस सम्बन्ध का नाम है जो दो सममूल्य पाठों (समभाषिक या द्विभाषिक) के बीच होता है, दूसरे शब्दों में, दो सममूल्य पाठों के बीच समानता के सम्बन्ध को 'अनुवाद' कहते हैं। इस सम्बन्ध में उद्घाटन से अनुवाद प्रक्रिया के स्पष्टीकरण में सहायता मिलती है। यह अनुवाद कार्य का वैकल्पिक पक्ष है- अनुवाद कार्य एक कौशल है जिसकी निष्पत्ति का अध्ययन, अनुवाद समीक्षा, एक ज्ञानात्मक विधा है और ये दोनों अनुवाद प्रक्रिया के दो समस्तरीय पहलू हैं। इन दोनों में अन्योन्यात्मकता का सम्बन्ध है- कार्य से समीक्षा की स्थिति का अस्तित्व बनता है और समीक्षा से कार्य की गुणवत्ता में वृद्धि के संकेत प्राप्त होते हैं।

अपनी प्रकृति और महत्व के कारण अनुवाद समीक्षा का अपेक्षाकृत स्वतन्त्र स्थान है। जिस प्रकार साहित्य समीक्षक के लिए साहित्य सर्जक होना अनिवार्य नहीं, उसी प्रकार अनुवाद समीक्षक अनुवादक होना अनिवार्य नहीं। ये दोनों 'रोल' परिपूरक वितरण में हैं, अतः प्रायः अनुवादक और अनुवाद समीक्षक अलग-अलग व्यक्ति होते हैं। यदि ये दोनों 'रोल' एक ही व्यक्ति को करने हों तो दोनों स्थितियों के बीच का समय इतना अवश्य हो कि एक का दूसरे पर विपरीत प्रभाव न पड़े।

अनुवाद समीक्षा जहाँ एक ओर अनुवाद के कौशल का मूल्यांकन है, वहाँ लक्ष्य भाषा के अभिव्यक्ति संसाधनों का भी उस सीमा तक मूल्यांकन है, जिस सीमा तक उनके द्वारा मूल भाषा पाठ के विभिन्न पक्षों की लक्ष्य भाषा में शुद्ध तथा उपयुक्त रीति से आवृत्ति हुई है। इस प्रकार अनुवाद समीक्षा में अनुवाद के व्यक्तिपरक और निर्वेयक्तिक (भाषापरक) पक्षों के बीच सन्तुलन रहता है।

अनुवाद समीक्षा के उद्देश्य—अनुवाद समीक्षा से निम्नलिखित उद्देश्यों की पूर्ति होती है-

1. इससे अनुवाद कार्य के स्तर को ऊँचा उठाने में सहायता मिलती है। अनुदित पाठ के गुण-दोष विवेचन से अनुवाद कार्य की त्रुटियों का ज्ञान होता है, जिन्हें दूर करने का प्रयत्न किया जाता है। इसके फलस्वरूप अनुवाद कार्य के स्तर में सुधार होता है।

2. इससे अनुवादकों के सामने श्रेष्ठ अनुवाद का मानक उपस्थित होता है। गुण-दोष विवेचन के उपरान्त सुधरे हुए अनुवाद को अनुवादक अपना आदर्श मानकर अपने कार्य में प्रवृत्त होता है।

3. अनुवाद समीक्षा से विशिष्ट कालखण्ड में और विशिष्ट ज्ञान क्षेत्र में अनुवाद सम्बन्धी विचारों पर प्रकाश पड़ता है। उदाहरण के लिए, बीसवीं शताब्दी के प्रथम चरण में जगन्नाथदास 'रत्नाकर' ने एलेग्जेंडर पोप की पद्यबद्ध रचना 'ऐसे ऑन क्रिटिसिज्म' का 'समालोचनादर्श' (1919) शीर्षक से रोला छन्द में पद्यबद्ध अनुवाद किया। उसकी आज हम समीक्षा करें तो हमें अनुवाद चिन्तन सम्बन्धी तत्कालीन प्रवृत्तियों का ज्ञान होगा। इस उदाहरण के आधार पर कहा जा सकता है कि बीसवीं शताब्दी के आरम्भिक चरण में साहित्य-समीक्षा सम्बन्धी लेखन के पद्यबन्ध अनुवाद भी स्वीकार्य होते थे, यद्यपि समीक्षा जैसे विषय की प्रकृति को देखते हुए मूल पाठ के पद्यात्मक होते हुए भी, उसका गद्यानुवाद उपयुक्त रहता है। यह भी कहा जा सकता है कि उस समय अनुवाद के सन्दर्भ में मूल पाठ की विधा के अनुरक्षण को अधिक महत्व मिलता था, प्रतिपाद्य की प्रकृति को कम।

प्रतिपाद्य की प्रकृति के अनुसार लक्ष्य भाषा में विधा का निर्धारण करने की प्रवृत्ति तत्कालीन अनुवादकों में नहीं थी। दूसरी बात यह कही जा सकती है कि पद्यात्मक होने के कारण तत्कालीन रूढ़ि के अनुसार साहित्य-समीक्षा जैसे विषय के लिए भी बृजभाषा (जो विशेषतया काव्य-सर्जना के लिए विशेष उपयुक्त मानी जाती थी) का प्रयोग होता था, मानक हिन्दी का नहीं, यद्यपि आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी के प्रभाव से उस समय ज्ञान के साहित्य के लिए मानक हिन्दी का व्यवहार स्थिर हो गया था। इसके अतिरिक्त शाब्दिकता तथा प्रकार्यात्मकता के आधार पर समीक्षा के कुछ बिन्दु निर्धारित होंगे।

4. अनुवाद समीक्षा के द्वारा हमें महत्वपूर्ण लेखकों की रचनाओं तथा महत्वपूर्ण अनुवादकों के अनुवाद कार्य के विवेचन और मूल्यांकन में सहायता मिलती है। 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के राजा लक्ष्मणसिंह कृत अनुवाद 'शकुन्तला नाटक' (1863) की समीक्षा से मूलकृति के विषय में हमारी समझ में वृद्धि होती है। इसी के साथ हम राजा लक्ष्मणसिंह का एक प्रतिष्ठित अनुवादक के रूप में मूल्यांकन कर सकते हैं, जिससे आनुषंगिक रूप में तत्कालीन अनुवाद-कार्य सम्बन्धी आदर्शों का भी हमें ज्ञान होता है।

5. अनुवाद समीक्षा के द्वारा हम मूल भाषा और लक्ष्यभाषा के शब्दकोश तथा व्याकरण का तथा भाषा शैली एवं पाठ्य प्रारूप सम्बन्धी असमानताओं का समीक्षात्मक विवेचन कर सकते हैं तथा इस प्रकार दोनों भाषाओं के व्यतिरेकात्मक सम्बन्ध के विषय में अपनी जानकारी बढ़ा सकते हैं।

6. अनुवाद समीक्षा का शिक्षणात्मक आयाम भी है। अनुवाद समीक्षा को सिखाकर हम अनुवाद शिक्षार्थी की अनुवाद सिद्धान्त सम्बन्धी चेतना को व्यावहारिक स्तर पर पुष्ट करते हैं।

अनुवाद समीक्षा की प्रविधि और प्रारूप—अनुवाद समीक्षा के निम्नलिखित सोपान होते हैं-

(1) अनुवाद समीक्षा के लिए पाठयुगल—मूलभाषा तथा उसके अनुवाद का चयन।

(2) निम्नलिखित पक्षों की दृष्टि से मूल भाषा पाठ का विश्लेषण- मूल अभिप्राय, प्रमुखतम भाषा प्रकार्य, अर्थ-व्यंजना, प्रतिपाद्य या भाषा शैली (वाक्य रचना और शब्दकोश पर आधारित), साहित्यिक गुण, सांस्कृतिक विशेषताएँ, उद्दिष्ट पाठक वर्ग तथा सामान्य परिवेश।

(3) उपर्युक्त पक्षों की दृष्टि से मूल पाठ तथा अनुवाद की विस्तृत तुलना- अन्तर्भाव बिन्दुओं पर विशेष बल देते हुए।

(4) (क) दोनों पाठों के समग्र प्रभावों के बीच का अन्तर का आंकलन, तथा (ख) अनुवादक द्वारा प्रयुक्त अनुवाद प्रणाली का संकेत और अनुवाद का मूल्यांकन। अन्तर का आकलन करते हुए अनुवाद के दोषों का भी विवेचन किया जाएगा।

अनुवाद समीक्षा के लिए समीक्षा में प्रतिभा और कल्पना के गुण आवश्यक है, जिससे वह अनुवाद सिद्धान्त के प्रासंगिक पक्षों का अनुवाद समीक्षा के लिए उचित अनुप्रयोग कर सकें। यह दृष्टव्य है कि इसमें समीक्षक की व्यक्तिनिष्ठता की प्रधानता रहना स्वाभाविक है। तथापि अनुवाद सिद्धान्त से अनुशासित होने के कारण समीक्षक की व्यक्तिनिष्ठता नियन्त्रित रहती है और इसी दृष्टि से अनुवाद समीक्षा में वस्तुनिष्ठता का अवकाश है।

अनुवाद समीक्षा के दो आयाम है- वर्णनात्मक और तुलनात्मक। वर्णनात्मक आयाम में मूल पाठ के एक अनुवाद की समीक्षा की जाती है, यह द्विपक्षीय प्रक्रिया है। तुलनात्मक आयाम में मूल पाठ के न्यूनतम दो अनुवादों की समीक्षा होती है, यह त्रिपक्षीय प्रक्रिया है- एक ओर मूलपाठ से तुलना और दूसरी ओर दूसरे अनुवाद से तुलना। आरेख से इस स्थिति को इस प्रकार प्रदर्शित किया जा सकता है-

वर्णनात्मक आयाम

मूल पाठ.....अनुदित पाठ

.....

तुलनात्मक आयाम

मूल पाठ.....अनुदित पाठ 1

अनुदित पाठ 2

अनुवाद समीक्षा के लिए यथोचित रूप से अनुवाद परीक्षण की विधियों का उपयोग किया जाता है। अनुवाद की सफलता की जाँच करना तथा उसे मापना अनुवाद समीक्षा के अन्तर्गत है जिसका उपयोग अनुवाद समीक्षा की गुणवत्ता के मूल्यांकन मे होता है।

अनुवाद समीक्षा के नमूने—हम अनुवाद समीक्षा के दो नमूने प्रस्तुत कर रहे हैं, जिनमें अनुवाद समीक्षा की प्रविधि और प्रारूप का व्यावहारिक रूप प्रदर्शित किया गया है। पहले पाठ की विशेषताएँ हैं- शास्त्रीय प्रयुक्ति, सूचनात्मक प्रकार्य की प्रधानता, निर्वैयक्तिकता, औपचारिक अतएव संयत और गम्भीर लेखन। दूसरे पाठ की विशेषताएँ हैं- पत्रकारिता की प्रयुक्ति, प्रभावपरक-अभिव्यंजक प्रकार्य की प्रधानता, व्यक्तिनिष्ठता, अर्ध-औपचारिक अतएव शीघ्रता मे प्रस्तुत हल्का-फुल्का लेखन। उपर्युक्त व्यतिरेक के अतिरिक्त अन्य व्यतिरेक गुणवत्ता के स्तर पर है, जो आनुषंगिक न होकर सोद्देश्य चयन का परिणाम है। वह यह कि पहला अनुवाद सफल अनुवाद का उदाहरण है, दूसरा सदोष अनुवाद का। हम यह भी दिखाना चाहते हैं कि सफल अनुवाद की सफलता का विशदीकरण कैसे किया जाता है और सदोष अनुवाद के दोष को कैसे स्पष्ट किया जाता है? इससे मूल्यांकन के स्तर पर अनुवाद समीक्षा का स्वरूप स्पष्ट हो जाएगा।

(3) उपर्युक्त पक्षों की दृष्टि से मूल पाठ तथा अनुवाद की विस्तृत तुलना- असमान बिन्दुओं पर विशेष बल देते हुए।

(4) (क) दोनों पाठों के समग्र प्रभावों के बीच का अन्तर का आंकलन, तथा (ख) अनुवादक द्वारा प्रयुक्त अनुवाद प्रणाली का संकेत और अनुवाद का मूल्यांकन। अन्तर का आकलन करते हुए अनुवाद के दोषों का भी विवेचन किया जाएगा।

अनुवाद समीक्षा के लिए समीक्षा में प्रतिभा और कल्पना के गुण आवश्यक हैं, जिससे वह अनुवाद सिद्धान्त के प्रासंगिक पक्षों का अनुवाद समीक्षा के लिए उचित अनुप्रयोग कर सकें। यह दृष्टव्य है कि इसमें समीक्षक की व्यक्तिनिष्ठता की प्रधानता रहना स्वाभाविक है। तथापि अनुवाद सिद्धान्त से अनुशासित होने के कारण समीक्षक की व्यक्तिनिष्ठता नियन्त्रित रहती है और इसी दृष्टि से अनुवाद समीक्षा में वस्तुनिष्ठता का अवकाश है।

अनुवाद समीक्षा के दो आयाम है- वर्णनात्मक और तुलनात्मक। वर्णनात्मक आयाम में मूल पाठ के एक अनुवाद की समीक्षा की जाती है, यह द्विपक्षीय प्रक्रिया है। तुलनात्मक आयाम में मूल पाठ के न्यूनतम दो अनुवादों की समीक्षा होती है, यह त्रिपक्षीय प्रक्रिया है- एक ओर मूलपाठ से तुलना और दूसरी ओर दूसरे अनुवाद से तुलना। आरेख से इस स्थिति को इस प्रकार प्रदर्शित किया जा सकता है-

वर्णनात्मक आयाम

मूल पाठ.....अनुदित पाठ

.....

तुलनात्मक आयाम

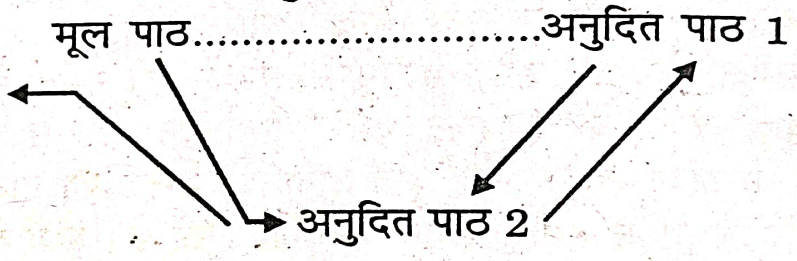

अनुवाद समीक्षा के लिए यथोचित रूप से अनुवाद परीक्षण की विधियों का उपयोग किया जाता है। अनुवाद की सफलता की जाँच करना तथा उसे मापना अनुवाद समीक्षा के अन्तर्गत है जिसका उपयोग अनुवाद समीक्षा की गुणवत्ता के मूल्यांकन मे होता है।

अनुवाद समीक्षा के नमूने—हम अनुवाद समीक्षा के दो नमूने प्रस्तुत कर रहे हैं, जिनमें अनुवाद समीक्षा की प्रविधि और प्रारूप का व्यावहारिक रूप प्रदर्शित किया गया है। पहले पाठ की विशेषताएँ हैं- शास्त्रीय प्रयुक्ति, सूचनात्मक प्रकार्य की प्रधानता, निर्वैयक्तिकता, औपचारिक अतएव संयत और गम्भीर लेखन। दूसरे पाठ की विशेषताएँ हैं- पत्रकारिता की प्रयुक्ति, प्रभावपरक-अभिव्यंजक प्रकार्य की प्रधानता, व्यक्तिनिष्ठता, अर्ध-औपचारिक अतएव शीघ्रता मे प्रस्तुत हल्का-फुल्का लेखन। उपर्युक्त व्यतिरेक के अतिरिक्त अन्य व्यतिरेक गुणवत्ता के स्तर पर है, जो आनुषंगिक न होकर सोद्देश्य चयन का परिणाम है। वह यह कि पहला अनुवाद सफल अनुवाद का उदाहरण है, दूसरा सदोष अनुवाद का। हम यह भी दिखाना चाहते हैं कि सफल अनुवाद की सफलता का विशदीकरण कैसे किया जाता है और सदोष अनुवाद के दोष को कैसे स्पष्ट किया जाता है? इससे मूल्यांकन के स्तर पर अनुवाद समीक्षा का स्वरूप स्पष्ट हो जाएगा।

1

"Linguists sometime talk of the 'double articulation' (or 'double structure') of language; and this phrase is frequently understood, mistakenly, to refer to the correlation of the two planes of expression and content. What is meant is that the units on the 'lower' level of phonology (the sounds of a language) have no function other than that of combining with one another to form the 'higher' units of grammar (words). It is by virtue of the double structure of the expression-plane that languages are able to represent economically many thousands of different words" (John Lyons : 'Introduction to Theoretical Linguistics', 1971, P. 54).

"भाषाविद् बहुधा भाषा के द्विगुण संधान या उसकी 'दोहरी संरचना' की चर्चा करते हैं। प्राय: भ्रमवशात् इस संज्ञा का अर्थ अभिव्यक्ति और वस्तु के दो धरातलों के सहसम्बन्ध से लिया जाता है, किन्तु इसका अभिप्राय यह है कि ध्वनि प्रक्रिया के निम्न स्तर की इकाइयों- भाषा की ध्वनियों- का इसके अतिरिक्त अन्य कोई कार्य नहीं है कि वे एक-दूसरे से संयुक्त होकर व्याकरण की उच्चतर कोटि की इकाइयों- शब्दों- का निर्माण करें। अभिव्यक्ति के तल की इस दोहरी संरचना के कारण ही यह सम्भव हो पाता है कि भाषाएँ बड़ी मितव्ययिता से ही सहस्त्रों भिन्न-भिन्न शब्दों के निर्माण में समर्थ हो पाती हैं" (जोन लियोन्स : सैद्धान्तिक भाषाविज्ञान, 1971, पृष्ठ 54)।

मूल पाठ, विचारात्मक पाठ प्रारूप में शास्त्रीय प्रयुक्ति का पाठ है जिसकी विषयवस्तु आधुनिक भाषाविज्ञान से सम्बन्धित है। इसमें सूचनात्मक भाषा प्रकार्य की प्रधानता है। यह वाच्यार्थ प्रधान पाठ है जिसमें भाषा की दोहरी संरचना के विषय में एक भ्रान्ति का निवारण करते हुए वस्तुस्थिति को स्पष्ट किया गया है। विषय-वस्तु के अनुरूप पारिभाषिक शब्दों articulation, structure, phonology, grammar का तथा इस प्रकार के लेखन के उपयुक्त, संयुक्त और जटिल वाक्यों का प्रयोग किया जाता है। इसके उद्दिष्ट पाठक हैं आधुनिक भाषा विज्ञान के प्रगत स्तर के छात्र तथा विशेषज्ञ हैं। इसका परिवेश औपचारिक हैं तथा यह पाश्चात्य शास्त्रीय चिन्तन की बौद्धिक संस्कृति की परम्परा के अन्तर्गत है।

अनुदित पाठ में असमानता के बिन्दु केवल व्याकरण तथा शब्दकोश के स्तरों पर मिलते हैं तथा वे काफी सीमित संख्या में हैं। शेष पक्षों की दृष्टि से दोनों पाठ समान हैं। पाठों की अन्तर्वाक्ययोजक अभिव्यक्तियाँ "What is meant is ....." = 'किन्तु इसका अभिप्राय यह है' विप्रतिषेधक प्रकार्य की दृष्टि से समान हैं। दूसरी अभिव्यक्ति 'It is .....' की बलात्मकता की तुल्यबल अभिव्यक्ति 'ही' अनुदित पाठ के वाक्य के आरम्भ में न आकर कुछ पीछे आई हैं, जो हिन्दी वाक्य रचना के नियम के अनुसार है। दोनों ही सन्दर्भों में अन्तर्वाक्ययोजकों के प्रकार्य-क्रमश: विप्रतिषेधकता तथा बलात्मकता सुरक्षित हैं। शब्दकोष के खण्ड में पारिभाषिक शब्दों के मानक अनुवाद पर्याय दिए गए हैं, 'represent' = 'निर्माण' की पर्याप्तता सन्दर्भनिष्ठ है। 'वस्तु' के स्थान पर कष्टसाध्य का चयन बेहतर होता है, क्योंकि 'वस्तु' के स्थान पर हिन्दी में 'कथ्य' अधिक प्रचलित है। दोनों पाठकों विराम चिन्ह योजना का अन्तर केवल सतही है।

समग्र प्रभाव की दृष्टि से दोनों पाठों में समानता है। अनुवादक ने शाब्दिकता प्रधान और अर्थकेन्द्रित अनुवाद प्रणाली का सहारा लिया है। यही कारण है कि वाक्य रचना कभी-

कभी असहज प्रतीत होती है तथा अनुवादाभास का-सा प्रसंग उपस्थित करती है। मूल उद्धरण तथा प्रस्तावित संशोधन क्रमशः इस प्रकार हैं- (1) 'अभिव्यक्ति और वस्तु के दो धरातलों के सहसम्बन्ध' = "अभिव्यक्ति और वस्तु, इन दो धरातलों के बीच सहसम्बन्ध।" (2) 'इसके अतिरिक्त .... निर्माण करें' = 'केवल एक ही कार्य है कि वे एक-दूसरे के साथ इस प्रकार संयुक्त हों कि उनसे व्याकरण की उच्चतर कोटि की इकाइयों- शब्दों-शब्दों का निर्माण हो।' इसी सन्दर्भ में यह स्पष्टीकरण अपेक्षित है कि 'निम्नतर', 'उच्चतर' आदि शब्दानुगामी अनुवाद-पर्याय इस तथ्य के द्योतक हैं कि यह आधुनिक भाषाविज्ञान से सम्बन्धित लेखन है, जिसमें ऐसी नवीन संकल्पनाओं का होना स्वाभाविक है, जिनके लिए सममूल्य शब्दों का स्वदेशी परम्परा में अभाव है।

इस समीक्षा के आधार पर कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि अनुवाद सफल है तथा विषयवस्तु की अपेक्षाकृत नवीनता को ध्यान में रखते हुए सम्प्रेषणीय तथा स्वीकार्य कहा जा सकता है। मूल पाठ का सुगठन अनुदित पाठ में भी संक्रान्त हो गया है।

A couple of years ago a very dear friend was operated upon for a slipped disc and had to spend several weeks at the All India Institute of Medical Science, I went to see her every afternoon for the five or six weeks that she was in hospital. For the first few days she was alone in a private room which overlooked other wards. The atmosphere was most gloomy. Then she was shifted to the general ward and shared a room with six other ladies. It die not take them long to become friends and share the fruits and other delicacies their relatives and friends brought them. What appeared to me to be the most interesting part of their otherwise drab routine of bedpans, visits by nurses and doctors was the unending stream of monkeys scampering along the ledge and flattening their faces against glas panes to beg for bananas and 'laddoos' from the patients. I was told that at times they got so excited at the sight of food that they hammered at the glass and broke it. There was some talk of exterminating them. I am glad this was not done because I felt that their presence contributed to the splendid recovery of patients (Khushwant Singh : With malice towards one and all : The Hindustan times' 25 August 1984).

"कुछ वर्ष पूर्व बहुत प्रिय मित्र का ऑल इंडिया इंस्टीट्यूट ऑफ मेडीकल साइंसेज में कूल्हा उतर जाने के लिए ऑपरेशन हुआ था। वह पाँच-छह सप्ताह तक अस्पताल में रही, प्रत्येक दोपहर मैं उसे देखने जाता था। पहले कुछ दिनों वह एक प्राइवेट कमरे में अकेली थी, जहाँ से दूसरे वार्ड नहीं दिखते थे। वातावरण बहुत अधिक अवसादपूर्ण था। फिर उसे जनरल वार्ड में भेजा गया जहाँ कमरे में 6 अन्य महिलाएँ भी थीं। उन्हें आपस में मित्र बनने में देर नहीं लगी और अपने सम्बन्धियों तथा मित्रों द्वारा लाए गए फल और खाने-पीने की चीजें आपस में बाँटने लगीं। मुझे वहाँ और दैनिक बातों के अलावा जो सबसे अधिक दिलचस्प बात लगी, वह थी खिड़की के ऊपर शीशे से अपना मुँह रगड़ते बन्दरों की लम्बी कतार जो मरीजों से केले और लड्डू माँगते थे। मुझे बताया गया कि कभी-कभी वे खाने को देखकर इतने उत्तेजित हो जाते थे कि शीशे पर टकराकर उसे तोड़ देते थे। उन्हें भगा देने की बात भी

सुनने में आई। मुझे खुशी है कि ऐसा नहीं किया गया, क्योंकि मैंने सोचा कि उनकी उपस्थिति का मरीजों के जल्दी अच्छा होने में योगदान है।'' (खुशवन्त सिंह : न काहू से दोस्ती न काहू से बैर ....' अमर उजाला, 25 अगस्त, 1984)।

इस वर्णनात्मक-विवरणात्मक पाठप्रारूप में पत्रकारिता की प्रयुक्ति का पाठ है जिसकी विषय-वस्तु जीवन का एक सामान्य अनुभव है, जिसे लेखक ने एक संस्मरण के रूप में प्रस्तुत किया है। इसमें अभिव्यंजक-प्रभावपरक भाषा प्रकार्य की प्रधानता है। यह एक व्यावसायिक स्तम्भ लेखक का वाच्यार्थ-प्रधान पाठ है जिसमें उसने अस्पताल के चारों ओर बन्दरों की उपस्थिति को रोगियों के स्वस्थ होने में सहायक बताया है। विषय-वस्तु के अनुरूप सामान्य शब्दों का ही इसमें प्रयोग है, परन्तु यह लेखक की शैली की विशेषता है कि वह जटिल तथा संयुक्त वाक्यों का प्रधानता से प्रयोग करता है। इसके उद्दिष्ट पाठक हैं विभिन्न व्यवसायों में लगे शिक्षित लोग जो समाचार-पत्रों में प्रकाशित विशिष्ट लेखकों के स्तम्भों को रुचि से पढ़ते हैं। इसका परिवेश अर्थ-औपचारिक है तथा समाचार-पत्रों के माध्यम से व्यक्त जनसम्पर्कीय संस्कृति की परम्परा के अन्तर्गत है।

अनुदित पाठ को पढ़कर पहला प्रभाव जो पाठक के मन पर पड़ता है, वह अनुपयुक्तता का है। पाठ का समय प्रभाव बिखरा हुआ तथा शिथिल है। जनसम्पर्क माध्यम का लेखन होने के नाते पाठक यह आशा करता है कि उसे अनुवाद में स्वाभाविक हिन्दी पढ़ने को मिलेगी। इसके अनुसार इस पाठ का अनुवाद सम्प्रेषण केन्द्रित प्रणाली द्वारा होना उपयुक्त था जिससे यह स्वतन्त्र अनुवाद का उदाहरण बनता, परन्तु यह शाब्दिक अनुवाद हो गया है जो अनावश्यक रूप से कहीं-कहीं दुर्बोध तथा प्रायः समग्र रूप से असहज प्रतीत होने से अनुवादाभास का उदाहरण बन गया है। जनसम्पर्कीय प्रकृति के कारण अनुवाद में लेखकीय शैली का सर्वांश में संरक्षण आवश्यक नहीं। इसमें लक्ष्य भाषा की प्रयुक्ति विशेष से सम्बद्ध प्रकृति का संरक्षण होना अधिक वांछनीय है। हिन्दी के पाठक के लिए लेखक की विशिष्टता का महत्व इसलिए नहीं है, क्योंकि वह हिन्दी का लेख नहीं है (इस दृष्टि से 'सुनो भई साधो' स्तम्भ के लेखक हरिशंकर परसाई से तुलना वांछनीय है, जो हिन्दी के लेखक हैं)। वे केवल स्तम्भ को प्रधान रूप से विषयवस्तु के चयन की मनोरंजकता की दृष्टि से पढ़ते हैं।

कुल मिलाकर इसकी समीक्षा नकारात्मक है, जिसके मुख्य बिन्दु हैं- शब्दानुगामिता, कुछ अंशों का गलत तथा अपर्याप्त अनुवाद तथा प्रभाव में समग्रता का अभाव। शब्दानुगामिता के उदाहरण तथा प्रस्तावित न्यूनतम संशोधन निम्न प्रकार हैं-

(क) 'कुछ वर्ष पूर्व एक बहुत प्रिय मित्र का' ..... = मेरी बहुत प्रिय मित्र हैं जिनका कुछ वर्ष पूर्व .....।' (ख) 'वह पाँच-छह सप्ताह तक अस्पताल में रहीं प्रत्येक दोपहर मैं उसे देखने जाता था' = 'वह पाँच-छह सप्ताह अस्पताल में रहीं और प्रतिदिन दोपहर बाद मैं उन्हें देखने जाता था।' (ग) 'उन्हें आपस में मित्र बनने में देर नहीं लगी' = 'वे जल्दी ही मित्र बन गई।' (घ) 'मुझे बताया गया' = 'लोगों ने बताया'। (ङ) 'मैंने सोचा कि ..... योगदान है' = 'मेरा विचार है कि उनके वहाँ होने से मरीजों को जल्दी अच्छा होने में मदद मिलती है।'

जिन अंशों का अनुवाद गलत तथा अपर्याप्त हुआ है, वे निम्नलिखित हैं (उन्हें इस क्रम में रखा गया है- मूल अंश, उपलब्ध अनुवाद, प्रस्तावित अनुवाद)।

(क) for a slipped disc = 'कूल्हा उतर जाने के लिए' = 'कूल्हा उतर जाने के कारण।'

(ख) otherwise drab routine of bed-pans, visits by nurses and doctors = 'और दैनिक बातों के अलावा' = '(मुझे वहाँ) की ढर्रेदार जिन्दगी में।'

(ग) exterminating = 'भगा देना' = 'खत्म कर देना (मार देना)।'

प्रभाव में समग्रता के अभाव का मुख्य कारण है– हिन्दी की प्रकृति के अनुरूप अन्तर्वाक्य योजकों के प्रयोग का अभाव। मूल पाठ में उनका न होना लेखक की शैली का वैशिष्ट्य है, परन्तु जैसा कि पहले भी संकेत किया जा चुका है, हिन्दी अनुवाद में लेखक की शैली के वैशिष्ट्य का सर्वांश में संरक्षण आवश्यक नहीं। उदाहरण के लिए, 'वातावरण बहुत अधिक अवसादपूर्ण था' के आरम्भ में 'इसलिए कमरे का' यह अंश जोड़ देने से वाक्यों का पूर्वापर सम्बन्ध विशद् हो जाता है तथा हिन्दी पाठ स्वाभाविक प्रतीत होता है। हिन्दी का पाठक पत्रकारिता के सन्दर्भ में स्वाभाविक हिन्दी के प्रयोग की आशा करता है, उसके लिए मूल भाषा के स्तम्भ–लेखक का व्यक्तिवैशिष्ट्य प्रासंगिक नहीं।

शिक्षक और विद्यार्थी से—अनुवाद समीक्षा के ये नमूने केवल उदाहरण के तौर पर हैं, तथा समीक्षा का एकमात्र प्रारूप नहीं। विद्यार्थी का स्तर, अनुदित पाठों की प्रकृति, अनुवाद समीक्षा का विशिष्ट उद्देश्य आदि के आधार पर अनुवाद समीक्षा के इससे भिन्न प्रारूप भी निश्चित किए जा सकते हैं। वांछनीय शर्त यह है कि जिन प्रारूपों का भी व्यवहार किया जाए, उनमें अनुवाद सिद्धान्त से संगति का गुण हो। इससे समीक्षक की व्यक्तिनिष्ठता यथासम्भव सीमा तक नियन्त्रित हो सकेगी। ❑

6 ट्यूटोरियल

हिन्दी से अंग्रेजी, अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद

गद्यानुवाद : किसी अनुच्छेद का अनुवाद

प्रश्न 39. निम्नलिखित गद्यांशों का हिन्दी से अंग्रेजी में अनुवाद कीजिए।

1. भारतवर्ष ने कभी भी भौतिक वस्तुओं के संग्रह को बहुत अधिक महत्व नहीं दिया है, उसकी दृष्टि से मनुष्य के भीतर जो महान आंतरिक गुण स्थिर भाव से बैठा हुआ है, वही चरम और परम है। लोभ–मोह, काम–क्रोध आदि विचार मनुष्य में स्वाभाविक रूप से विद्यमान रहते हैं, पर उन्हें प्रधान शक्ति मान लेना और अपने मन तथा बुद्धि को उन्हीं के इशारे पर छोड़ देना बहुत बुरा आचरण है। भारतवर्ष ने कभी भी उन्हें उचित नहीं माना, उन्हें सदा संयम के बंधन से बाँधकर रखने का प्रयत्न किया है। परंतु भूख, बीमारी और गुमराह को ठीक रास्ते पर ले जाने के उपायों की उपेक्षा नहीं की जा सकती।

Translation : India, as a nation, never gave much importance to the habit of accumulating things of material value. Instead, it has always valued the qualities that are inherent to a human being. Characteristics like greed, desire, lust and anger are present in every individual but to consider these qualities as the main source of energy and to give in to them gives rise to bad behavior. India, as a whole, has always considered such negative forces as improper and endeavoured to suppress them.

But, to ignore hunger, disease or treatment of an individual who has fallen prey to bad habits is highly objectionable.

2. उन जैसा 'बर्ड वाचर' शायद ही कोई हुआ हो। लेकिन एकांत क्षणों में सलीम अली बिना दूरबीन भी देखे गए हैं। दूर क्षितिज तक फैली जमीन और झुके आसमान को छूने वाली उनकी नजरों में कुछ-कुछ वैसा ही जादू था, जो प्रकृति को अपने घेरे में बाँध लेता है। सलीम अली उन लोगों में थे जो प्रकृति के प्रभाव में आने की बजाए प्रकृति को अपने प्रभाव में लाने के कायल होते हैं। उनके लिए प्रकृति में हर तरफ एक हँसती-खेलती रहस्य भरी दुनिया पसरी थी। यह दुनिया उन्होंने बड़ी मेहनत से अपने लिए गढ़ी थी।

Translation : Perhaps there has never been a 'bird watcher' like him. But Salim Ali had also been seen without his binoculars in his leisure. There was a strange magic in those eyes of his that glanced at the plains that stretched up to the horizon and touched the sky; a magic that was capable of capturing nature in its bonds. Salim Ali was one of those people who influenced nature instead of being influenced by it. He always felt the presence of a mysterious world in nature, a world that was full of fun and frolic. He created this beautiful mysterious world for himself with great perseverance.

3. दुख जीवन को माँजता है, उसे आगे बढ़ने का हुनर सिखाता है। वह हमारे जीवन में ग्रहण लाता है, ताकि हम पूरे प्रकाश की अहमियत जान सकें और रोशनी को बचाए रखने के लिए जतन करें। इस जतन से सभ्यता और संस्कृति का निर्माण होता है। सुनामी के कारण दक्षिण भारत और विश्व के अन्य देशों में जो पीड़ा हम देख रहे हैं, उसे निराशा के चश्मे से न देखें। ऐसे समय में भी मेघना और अरुण जैसे बच्चे हमारे जीवन में जोश, उत्साह और शक्ति भर देते हैं। 13 वर्षीय मेघना और अरुण दो दिन अकेले खारे समुद्र में तैरते हुए जीव-जंतुओं में मुकाबला करते हुए किनारे आ लगे।

Translation : Sorrow polishes life and teaches the tact of progress. Sorrow functions as an eclipse in one's life and makes him understand the significance of total light and brightness. Consequently man learns true value of preserving this brightness. Culture and civilization are born out of such preservation of light. One must not view the destruction caused by Tsunami in a pessimistic way. Even at such crucial times, children like Meghana and Arun fill our lives with zeal, enthusiasm and energy. Thirteen year old Meghana and Arun braced the angry sea on their own for two days and reached safely on the shore after facing various types of aquatic animals and creatures.

4. पत्रों की दुनिया भी अजीबों-गरीब है और उसकी उपयोगिता हमेशा से बनी रही है। पत्र जो काम कर सकते हैं, वह संचार का आधुनिकतम साधन नहीं कर सकता है। पत्र जैसा संतोष फोन या एसएमएस का संदेश कहाँ दे सकता है। दुनिया का तमाम साहित्य पत्रों पर केन्द्रित है और मानव सभ्यता के विकास में इन पत्रों ने अनूठी भूमिका निभाई है। दुनिया भर में रोज करोड़ों पत्र एक-दूसरे को तलाशते तमाम ठिकानों तक पहुँचते हैं। भारत में ही रोज साढ़े चार करोड़ चिट्ठियाँ डाक में डाली जाती हैं जो साबित करती हैं कि पत्र कितनी अहमियत रखते हैं।

Translation : The world of letters is a strange one but it has also proved its usefulness from time immemorial. Latest Information Technology cannot do what letters can do. A phone call or an SMS is no substitute for a letter because they are not as satisfying as a letter. Literature, world over, is centred around letters and they have played an important role in the development of human culture. Millions of letters move from one place to another in search of their destinations. Speaking solely of India, approximately four million letters are posted every day, a fact that proves, on its own, the importance and significance of letters.

5. गाँधीजी की शिक्षा का मर्म केवल उनके देश भारत या यहाँ की जनता के लिए ही सीमित नहीं था। वह सारी मानव-जाति के लिए था, और वह केवल वर्तमान काल के लिए ही नहीं, परन्तु त्रिकाल के लिए सत्य है। वे चाहते थे कि सारे मानव स्वतंत्र हों जिससे वे अपना अबाधित मनुष्य द्वारा होने वाला सभी प्रकार का शोषण मिटा देना चाहते थे, क्योंकि शोषण करना और शोषण का शिकार होना दोनों ही पाप है- न केवल समाज के प्रति बल्कि नैतिक नियम के प्रति भी, हमारे जीवन के नियम के प्रति भी इसलिए उनका कहना था कि इस उद्देश्य के अनुरूप ही साधन भी सर्वथा नैतिक अर्थात् विशुद्ध सत्य और अहिंसा पर आधारित होने चाहिये। अनेक विदेशियों ने अपने देशों में गाँधीजी को बुलाया था, ताकि वे अपना संदेश उन्हें स्वयं दे सकें। परन्तु गाँधीजी ने ये निमन्त्रण स्वीकार नहीं किये। उन्होंने कहा कि सत्य और अहिंसा के विषय में उनका जो दावा है उसे पहले उन्हें अपने ही देश में पूरा करना चाहिये, उसके बाद ही वे संसार का हृदय जीतने या उसके विचार बदलने का भगीरथ कार्य हाथ में ले सकते हैं। सीमित रूप में ही सही और पालन में अनेक अपूर्णताएँ रहने के बावजूद भी उनकी अहिंसक कार्य-पद्धति का अनुसरण करके जब भारत ने स्वतंत्रता प्राप्त कर ली, तब किसी हद तक दूसरे देशों में उनका संदेश ले जाने की वह पूर्व शर्त पूरी हो गई और यद्यपि देश के विभाजन के कारण ऐसे आघात लगे और ऐसी समस्याएँ पैदा हुई जिन पर उन्हें अपना सारा समय और सारी शक्ति लगानी पड़ी, फिर भी वे अपनी व्यस्तताओं के बीच भी इस विशाल और व्यापक प्रश्न की और ध्यान देने की क्षमता रखते थे। परन्तु विधाता को कुछ और ही स्वीकार था। भगवान करे कोई व्यक्ति या राष्ट्र ऐसा आगे आये, जो गाँधीजी के आरंभ किये हुए प्रयास को उस समय तक जारी रखे जब तक उनका प्रयोग पूरा न हो जाये, कार्य समाप्त न हो जाय और उद्देश्य सिद्ध न हो जाय!

Translation : The central core of Gandhiji's teaching was meant not for his country or his people alone but for all mankind and is valid not only for today but for all time. He wanted all men to be free so that they could grow unhampered into full self realisation. He wanted to abolish the exploitation of man by man in any shape or form because both exploitation and submission to it are a sin not only against society but against the moral law, the law of out being. The means to be compatible with this end therefore, he said, have to be purely moral, namely, unadulterated truth and non-violence. He had been invited by many foreigners to visit their countries and deliver his message to them directly but he declined to accept such invitations as, he said, he must

make good what he claimed for Truth and Ahinsa in his own country before he could launcch on the gigantic task of winning or rather converting the world. With the attainment of freedom by India, by following his method, though in a limited way and in spite of all the immperfections in its practice, the condition precedent for taking his message to other countries was to a certain extent fulfilled. and although the partition had caused wounds and raised problems which claimed all his time and energy, he might have been able to turn his attention to this larger question even in the midst of his distractions. But Providence had ordained otherwise. May some individual or nation arise and carry forward the effort launched by him till the experiment is completed the work finished and the objective achieved !

6. आदर्शवादियों को आम तौर पर गगन-विहारी, अव्यावहारिक समझा जाता है। पर गाँधीजी का आदर्शवाद गगन-विहार करने जैसा नहीं था। उनका यह दावा था और उसे उन्होंने सिद्ध कर दिखाया था कि वे व्यावहारिक आदर्शवादी थे। उन्होंने दिखा दिया कि भलाई को परिणामकारी कैसे बनाया जा सकता है। अपने सत्य के आग्रह और पूर्ण पालन से उन्हें वास्तविकता पर पूरा नियंत्रण प्राप्त हो गया था और मानव-स्वभाव का अद्वितीय ज्ञान प्राप्त हो गया था। उसकी शक्तियों और उसकी दुर्बलताओं को जानने के कारण वे अचूक अंतर्ज्ञान से अपने अस्त्र चुन सकते थे और मिट्टी से शूरवीरों को जन्म दे सकते थे। शायद हमारी जानकारी में अन्य कोई व्यक्ति गाँधीजी की तरह इतने विभिन्न प्रकार के मनुष्यों और प्रतिभाशाली व्यक्तियों को अपने चारों तरफ इकट्ठा करने या उन्हें एक साथ रखने में समर्थन नहीं हुआ। पंडित नेहरू ने अपनी अनोखी शैली में लिखा है, "हमारा एक-दूसरे से सर्वथा भिन्न लोगों का जमघट था। हमारी पृष्ठभूमियाँ, हमारी जीवन-प्रणालियाँ और हमारी विचारधाराएँ सब कुछ भिन्न थीं। परन्तु हमने एक सामान्य उद्देश्य की पूर्ति के लिए ऐसे नेता के साथ अपना विकास किया, जिसे (हम) अपने विभिन्न दृष्टिकोणों से एक महान् और भव्य विभूति समझते थे।

Translation : Idealists are generally classed as visionaries, unpractical people. Gandhiji's idealism was not Utopian. He was no "ineffectual angel beating his luminous wings in the void". He claimed and proved himsilf to be a practical idealist. He showed how goodness could be made effective. His insistence on truth and full practice there of gave him a firm hold of reality and endowed him with an unrivalled knowledge of human nature-its potentialities as well as its weaknesses-which enabled him to choose his instruments with an unerring instinct and make heroes out ot clay. Perhaps no other person we know, was able to draw round him men and talents of such diverse types as Gandhiji, or to hold them together as a team. "We were on odd assortment," Pandit Nehru has recorded in his inimitable style, "very different from each other, different in our back-ground, ways of life and ways of thinking, but.... we..... frw in the service of a common cause, with a leader to whom ..... (we) lokked up.....from our different viewpoints, as a great and magnificent personality."

7. यहाँ समाजवाद के बारे में चर्चा करने का मेरा कोई इरादा नहीं है न तो व्यवहारिक तौर पर और न ही सैद्धांतिक तौर पर। हालांकि मैं एहसानमंद हुआ कि यह धरती समाजवाद की तरफ अपना रास्ता खुद ढूँढ लेती है और इस प्रकार कोई भी समाजवाद सोवियत समाजवाद या उसी के प्रकार का समाजवाद नहीं बनेगा।

Translation : It is not my intension here to discuss socialism, either practically or theoretically, although I fell obliged, this earth will find their way to socialism in their own way, no socialism thus created will be Soviet Socialism or particularly like it.

8. विद्युत मार (चार्ज) को सर्वप्रथम परीक्षण विज्ञान में पुद्गल के ऐसे गुण में देखा गया जिसमें दो विपरीत पदार्थों को रगड़ों तो उनमें खिंचाव पैदा होता है। जैसे, यदि ठोस रबर को रोएंदार चीज से रगड़ें तो रबर एवं रोएदार चीज आपस में आकर्षित होंगे और दोनों को ही धूल के कणों को खींचने की शक्ति होती है।

Translation : Electric charge was first observed in experimental science as a property of matter producing force actions between unlike substances which has been rubbed together. If, For example, hard rubber is rubbed with fur, then the rubber and the fur are found to attract each other. and both have the power to attract dust particles.

9. किसी भी औद्योगिक संगठन की कामयाबी जो लोग इस संगठन का प्रबन्धन कर रहे हैं उनके अनुशासन पर निर्भर करती है। वह सब जो कि संगठन के कानून मानने की ओर प्रेरित करता है, अनुशासन के सार को बनाता है। इन कानूनों को पालने करने की इच्छा अपने अंदर से होनी चाहिए, हालांकि इसे जबरन लागू भी किया जा सकता है।

Translation : The success of an industrial organisation depends upon the degree of discipline with which all those who manage the organisation work. All that motivates to give willing observance of rules of the organisation constitutes the essence of discipline. This conformity to rules has to come from with in, though it can be enforced from without.

10. हम उस महान् देश के निवासी हैं जो मात्र भौतिक शक्ति में नहीं वरन् उससे भी अधिक महत्वपूर्ण बातों में महान् है। यदि हम अपने देश के लिए सुयोग्य हैं तो हमें विशाल हृदय एवं मस्तिष्क रखना चाहिए क्योंकि ओछे व्यक्ति बड़े-बड़े कार्यों को सम्पन्न करने तथा उनका सामना करने में कुछ नहीं कर सकते। हम प्रत्येक को अपना कर्तव्य करना चाहिए और दूसरे के कर्तव्यों के बारे में ही विचार नहीं करते रहना चाहिए।

Translation : We are the residents of that great nation which is great not only in physical power bet is great in even more important things. If we are well Qualified for our nation then we should have broad mind and heart, became people with narrow thinking can not face or finish big-big projucts. Each of us should full fill our duties & should not keep thinking about others duties.

11. शरीर की जैविक क्रिया-विधि में जब किसी प्रकार का अवरोध पैदा हो जाता है तो शारीरिक व्यवस्था में असंतुलन आ जाता है। यह असंतुलन अल्पकालिक अथवा स्थाई हो सकता है। इस प्रकार की अव्यवस्था ही रोग का लक्षण लेकर उभरती है। तपेदिक तथा अन्य

गई बीमारियाँ पहले स्थाई एवं प्राणघातक मानी जाती थीं पर आयुर्विज्ञान की बढ़ती सीमाओं के साथ असाध्य रोगों की सूची सिमटते-सिमटते आज कैंसर तक पहुँच गई है।

Translation : When some block developes in the biological activity of body, it leads to unstability in body metabolism. This imbalance may be shartermed or permanent. This type of imbolance only comes up with the sign of disease. Tubercalists and many other disceases were canitered permanent and lifetaking earlier but the increasing limits of the medicine have reduced the list of impossible disceases to cancar today.

12. राजनेताओं, सरकारी कर्मचारियों और प्रशासकों के स्वार्थ, उनके अधिकार, प्रतिष्ठा और पद के साथ-साथ ऐसे आर्थिक लाभ में भी निहित हो सकते हैं जो विशेष समाज के हितों से बहुत भिन्न हों। इसके साथ-साथ, अल्प-विकसित देशों में उनकी गतिविधियों को नियंत्रित करने तथा उन पर रोक लगाने में, अधिक उन्नत देशों की अपेक्षा जनमत कम प्रभावशाली हो सकता है।

Translation : The selfishness of politicians, government servents and administars, with their powers, fame and post can go to such financial gain which are very different from the special favours of special society. Along with this public openion may be less effective in developing countries with respect to the adeveloped countries in controlling the activities of these people.

13. प्राचीन काल में रूस के लोग जिन शक्तियों की पूजा करते थे, उन्हें तथाकथित विद्वान लोग अब प्रकृति-पूजा कहकर पुकारते हैं। प्रकृति पूजकों के लिए तो सूरज भी ईश्वर था और वायु भी ईश्वर थी और प्रकृति में होने वाला हर परिवर्तन, प्रकृति की हर ताकत को वे ईश्वर की हरकत ही समझते थे। वे अग्नि, सूर्य, पर्वत, वायु या पवित्र पेड़ों की पूजा किया करते थे जैसा कि आज भारत में हिन्दू करता है। हालांकि वे प्रकृति को सम्मान देने के अलावा यह भी मानते थे कि कोई एक ईश्वर है जिसके कारण संपूर्ण संसार संचालित हो रहा है।

Translation : The powers which the Russian people of ancient times worshiped, are now being called as Nature-worship by the so-called scholars. The sun was a God to those nature-worshippers and the wind was also God and every changes which happened in the nature, every power of the nature was considered as an action of God. They used to worship fire, sun, mountains, wind and sacred trees the way with which the Hindu in India does. Although apart from paying respect to nature they considered that there is a God because of whom the whole universe is being directed.

14. सबसे प्रमुख देवता थे- विद्युत देवता या बिजली देवता। आसमान में चमकने वाले वज्रङ्कदेवता का नाम पेरून था। कोई भी संधि या समझौता करते हुए इन पेरून देवता की कसमें खाई जाती थीं और उन्हीं की पूजा मानी जाती थी। विद्वानों का कहना है कि प्राचीन काल में रूसियों द्वारा की जाने वाली प्रकृति की यह पूजा बहुत कुछ हिन्दू धर्म के रीति-रिवाजों और रस्मों से मिलती-जुलती थी।

Translation : The most important God was- Lightning God or the God of Power. The name of this shining God of blade in the sky was

Perun. In whatever pacts and agreements which were done, an oath of this Perun God was taken and his worship was considered to be the main worship. The scholars happen to say that this nature worship, done by the ancient Russians, is very much similar to the customs and beliefs of the Hindu religion.

15. माया सभ्यता मैक्सिको की एक महत्वपूर्ण सभ्यता थी। इस सभ्यता की शुरुआत 1500 ई. पू. में हुई। यह 300 ई. से 800 ई. तक काफी प्रगतिशील रही, फिर धीरे-धीरे इसका अंत हो गया। माया सभ्यता के लोग कला, गणित, वास्तुशास्त्र, ज्योतिष और लेखन आदि के क्षेत्र में काफी अव्वल थे। इसे कलात्मक विकास का स्वर्ण युग भी कहा जाता है। इस दौरान खेती और शहर का विकास हुआ। इस सभ्यता की सबसे उल्लेखनीय इमारतें पिरामिड हैं जो उन्होंने धार्मिक केंद्रों के रूप में बनाए थे। दावा किया जाता है कि 900 ई. के बाद माया सभ्यता के इन नगरों का ह्रास होने लगा और नगर खाली होने लगे।

Translation : Mayan civilization was an important civili-zation of Mexico. This civilization began in 1500 B.C. This civilization flourished very much between 300 A.D. to 800 A.D. and then it declined slowly. The people of Mayan civilization were very forward in the streams of Arts, Mathematics, Vaastu, Astrology and Accounts. This era is called as the golden age of the development of Arts. Agriculture and cities also developed during this era. The remarkable buildings of this civilization were the Pyramids which were constructed as the religious centre of learning. Assertions have been made that after 900 A.D., the towns of Mayan civilization declined and became unpopulated.

16. आर्यभट्ट प्राचीन समय के सबसे महान खगोलशास्त्रियों और गणितज्ञों में से एक थे। विज्ञान और गणित के क्षेत्र में उनके कार्य आज भी वैज्ञानिकों को प्रेरणा देते हैं। आर्यभट्ट उन पहले व्यक्तियों में से थे जिन्होंने बीजगणित (एलजेबरा) का प्रयोग किया। आपको यह जानकर हैरानी होगी कि उन्होंने अपनी प्रसिद्ध रचना 'आर्यभट्टिका' (गणित की पुस्तक) को कविता के रूप में लिखा। यह प्राचीन भारत की बहुचर्चित पुस्तकों में से एक है। इस पुस्तक में दी गयी ज्यादातर जानकारी खगोलशास्त्र और त्रिकोणमिति में सम्बन्ध रखती है। 'आर्यभट्टिका' में अंकगणित, बीजगणित और त्रिकोणमिति के 33 नियम भी दिए गए हैं।

Translation : Aryabhatta was one of the greatest Astronomers and Mathematicians of ancient times. His works in the field of science and Mathematics inspire the scientists even today. Aryabhatta was one of those first individuals who used Algebra. You may be surprised to know that he wrote his famous 'Aryabhattika' in the form of a poem. This is one of the most referred books of ancient India. Most of the information provided in this book is related to Astronomy and Trigonometry. Thirty three rules related to Arithmetics, Algebra and Trigonometry has been given in 'Aryabhattika'.

17. मैंने तो आपसे मजाक किया है। मैंने आपको एक सबक सिखाया है। मैं आपका एक-एक पैसा दे दूंगा। ये देखिए, यह लिफाफे में आपकी पूरी तनख्वाह रखी हुई है। आप गलत

बात का विरोध क्यों नहीं करतीं। आप चुप कैसे रह जाती हैं? क्या आपकी इच्छा शक्ति इतनी कमजोर है? वह उदासी से मुस्कुराई और मैंने उसके चेहरे पर पढ़ा 'हां', यह सम्भव है।

मैंने अपने क्रूर व्यवहार के लिए उससे माफी मांगी और उसे पूरी तनख्वाह दी। वह बेहद संकोच के साथ मेरा आभार प्रकट करने लगी। फिर वो कमरे से बाहर चली गई और मैं सोचने लगा कि इस दुनिया में ताकतवर बनना बहुत आसान बात है।

Translation : I have only joked with you. I have made you learn a lesson. I will give back each and every paisa to you. This envelope contains your whole salary. Why don't you oppose the wrong thing? How do you remain silent? Is your will power so weak? She smiled sadly and I read on her face 'yes, this is possible'.

18. मोयान को मिला नोबल क्या वाकई चीन से नजदीकी बढ़ाने का पश्चिमी हथकंडा है, क्योंकि अब तक तो उन्हीं चीनी पर नोबल समिति ने कृपा दृष्टि दिखाई है, जो कम्युनिस्ट तानाशाही के आलोचक रहे हैं। मोयान की उपलब्धि यह है कि सत्ता-व्यवस्था से सीधा टकराव मोल लिए बगैर उन्होंने सांस्कृतिक क्रांति की असलियत, ग्रामीण चीन की बदहाली और विकास की विसंगतियों के प्रामाणिक चित्र खींचे। इसके लिए उन्होंने जो जटिल शैली चुनी, वह उनकी लेखकीय प्रतिबद्धता का ही सुबूत है। उनके उपन्यास समकालीन जीवन की बात करते हुए अचानक इतिहास की अलग गहराइयों में उतर जाते हैं।

Translation : Is it really a western gimmick to develop closeness with china that Moyaan is being awarded a noble, because till now only those Chinese have been favoured by the noble committee who have criticized the communist dictatorship. The achievement of Moyaan has been that without directly coming in conflict with the power-machinery, he has clicked authentic pictures of the reality of Cultural Revolution, the plight of the rural china and the anomaly of the development. The complex style which he chose for this is a proof of his literary commitment. His novels suddenly delve deep into history while talking about the contemporary life.

19. भारत के मध्यप्रदेश के विदिशा में जन्में कैलाश सत्यार्थी 'बचपन बचाओ आंदोलन' चलाते हैं। वे पेशे से वैद्युत इंजीनियर हैं किन्तु उन्होने 26 वर्ष की उम्र में ही करियर छोड़कर बच्चों के लिए काम करना शुरू कर दिया था। उनके कार्यों को विभिन्न राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय सम्मानों व पुरस्कारों द्वारा सम्मानित किया गया है। इन पुरस्कारों में वर्ष 2014 का नोबेल शान्ति पुरस्कार भी शामिल है जो उन्हें पाकिस्तान की नारी शिक्षा कार्यकर्ता मलाला युसुफ़जुई के साथ सम्मिलित रूप से प्रदान किया गया है। उन्होंने 1980 में बचपन बचाओ आन्दोलन की स्थापना की जिसके बाद से वे विश्व भर के 144 देशों के 83,000 से अधिक बच्चों के अधिकारों की रक्षा के लिए कार्य कर चुके हैं।

Translation : "Save the childhood movement" is run by Kailash Satyarthi who is born in Vidhisha district of Madhya Pradesh in India. He is an electrical engineer by profession but he left his career when he was 26 years of age and started working for the children. His works have been praised by various national and international awards. These

awards also include the Nobel peace prize of 2014 which he jointly shared with the Pakistani women Education worker Malala Yusufazai. He started the 'save children movement' in 1980 after which he has worked for the safety of rights of more than 83,000 children of 144 countries of the world.

20. प्राचीन काल में शांति के समय ओलंपिक खेल का शुभारंभ 776 ईसा पूर्व एथेंस में हुआ। बताया जाता है कि यह खेल तब राजा-रजवाड़ों के बीच आयोजित होता था। उस समय सिर्फ एथलेटिक्स ही खेलों में शामिल था, लेकिन समय की मांग को देखते हुए इसमें धीरे-धीरे अन्य खेलों जैसे बॉक्सिंग, कुश्ती, घुड़सवारी भी शामिल किए गए। इस खेल में एथलीट पूरी ईमानदारी के साथ अपना सब कुछ झोंकते थे। मगर ओलंपिक पर ग्रहण लग गया जब रोमवासियों ने ग्रीस पर कब्जा कर लिया। आखिरी बार ओलंपिक का आयोजन 394 ईस्वी में हुआ।

Translation : During the ancient peaceful times, the Olympic Games were started in 776 B.C. at Athens. It is said that these games were held between the princely states. Only Athletics was included in the games during those times, but due to the demand from time to time, other games like Boxing, Wrestling, Horse riding were also included. The athletes used to participate in these games with full honesty. But when the Romans captured Greece, the Olympics were eclipsed. The last Olympics were held in 394 B.C.

21. भारत ही नहीं विश्व के अन्य अनेक देशों में भी होली अथवा होली से मिलते-जुलते त्योहार मनाने की परंपराएँ हैं। प्रवासी भारतीय जहाँ-जहाँ जाकर बसे हैं वहाँ-वहाँ होली की परंपरा पाई जाती है। कैरिबियाई देशों में बड़े धूमधाम और मौज-मस्ती के साथ होली का त्यौहार मनाया जाता है। स्पेन में तो लोग एक-दूसरे पर टनों भर टमाटर फेंककर होली मनाते हैं। तेरह अप्रैल को ही थाईलैंड में नववर्ष प्रारंभ होता है इसमें वृद्धजनों के हाथों इत्र मिश्रित जल डलवाकर आशीर्वाद लिया जाता है। लाओस में यह पर्व नववर्ष की खुशी के रूप में मनाया जाता है। लोग एक-दूसरे पर पानी डालते हैं। म्यांमार में इसे जलपर्व के नाम से जाना जाता है।

Translation : Not only in India but in many countries of the world, Holi or festivals similar to Holi are traditionally celebrated. Wherever the immigrant Indians have settled, there we find the tradition of holi. Holi is celebrated with full enthusiasm and fun in the Caribbean countries. Even in Spain holi is celebrated by throwing tons of tomatoes on each other. The new year in Thailand is celebrated on 13th of April in which blessings are saught from the elderly by making them pour incensed water. In Loaus this festival is celebrated as a new year day. People throw water on each other. In Myanmar, it is also known as the water festival.

22. 20वीं सदी में भारतीय सिनेमा, संयुक्त राज्य अमरीका का सिनेमा हॉलीवुड तथा चीनी फिल्म उद्योग के साथ एक वैश्विक उद्योग बन गया। 2013 में भारत वार्षिक निर्माण

में पहले स्थान पर था। वर्ष 2012 में भारत में 1602 फिल्मों का निर्माण हुआ जिसमें तमिल सिनेमा अग्रणी रहा जिसके बाद तेलुगु और बॉलीवुड का स्थान आता है। बढ़ती हुई तकनीक और ग्लोबल प्रभाव ने भारतीय सिनेमा का चेहरा बदला है। अब सुपर हीरो तथा विज्ञानकल्प जैसी फिल्में न केवल बन रही हैं बल्कि ऐसी कई फिल्में ब्लॉकबस्टर फिल्मों के रूप में सफल हुई है। भारतीय सिनेमा ने 90 से ज्यादा देशों में बाजार पाया है जहाँ भारतीय फिल्में प्रदर्शित होती हैं।

Translation : Indian cinema, together with Hollywood, the cinema of the U.S.A. and the Chinese film industry became a global industry in the 20th century. India stood first in yearly film making in 2013. In 2012, 1602 films were made in India of which Tamil cinema was the leader, after which Telugu and Hindi cinema stood in ranking. The progress in technology and global influence has changed the face of Indian Cinema. Movies with super hero and science fiction are not only being made but many films have been successful blockbusters. Indian cinema has market in more than 90 countries where they are released. ❑

प्रश्न 40. निम्नलिखित गद्यांशों का अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद कीजिए।

गद्यांश 1. "Mahatma Gandhi was the greatest man of his age. He was born on October 2, 1869 at Porbandar in Gujarat. His father was a minister of a state and his mother was an ideal lady. Having finished his education in India, he went to England to prosecute his study of a lawyer. Having secured the diploma of Bar-at-laws, he returned to India. He started his practice in South Africa, but soon after he started Satyagrah Movement for improving the condition of the Indians there. After Gandhi Smuts Compromise, he came back."

हिन्दी में अनुवाद—महात्मा गाँधी अपने युग की एक महानतम् विभूति थे। उनका जन्म 2 अक्टूबर सन् 1869 में गुजरात के पोरबन्दर में हुआ था। उनके पिताजी एक रियासत के दीवान थे और उनकी माताजी एक आदर्श महिला थी। भारत में अपना अध्ययन समाप्त करने के बाद वे कानून का अध्ययन करने के लिए इंग्लैण्ड गये। कानून की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद वे भारत लौटे। उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में वकालत शुरू की, किन्तु बहुत ही शीघ्र उन्होंने वहाँ पर भारतीयों की दशा को सुधारने के लिये सत्याग्रह आन्दोलन शुरू कर दिया। 'गाँधी-स्मुत्स समझौते' के बाद वे भारत लौटे।

गद्यांश 2. "Upon the death of my father. I was resolved to travel into foreign countries and therefore left the university, with the character of an odd un-countable fellow that had a great deal of learning. A insatiable thirst after knowledge carried me into all countries of Europe in which there was anything new or strange to be seen."

हिन्दी में अनुवाद—अपने पिता की मृत्यु के पश्चात् मैंने विदेशों में यात्रा करने का निश्चय किया और इसीलिये एक ऐसे विचित्र प्राणी के रूप में विश्वविद्यालय छोड़ा, जिसके

पास ज्ञान का अथाह भण्डार था। ज्ञान की एक अतृप्त प्यास मुझे यूरोप में उन समस्त देशों में ले गई, जहाँ पर कुछ नया और विचित्र देखने के लिए था।

गद्यांश 3. Among the fundamental qualities of a good citizen of democracy must have is a deep concern for the good life of his fellows. He must have a sense of social responsibility and the will to sink his own immediate interests and the interests of class in the common good to do his full share in working for the community.

The citizen of democracy must also be a man of independent judgement. He must respect the individualities of others and therefore be tolerent of opinions in conflict with his own. He must prefer methods of discussion and persuasion to method of force.

हिन्दी में अनुवाद—प्रजातंत्र के एक अच्छे नागरिक की प्रमुख विशेषताओं में से एक है अपने साथियों के जीवन को अच्छा बनाने की चिन्ता होना। उसमें सामाजिक उत्तरदायित्व का ज्ञान, अपने तात्कालिक स्वार्थों को भूल जाने की भावना, अपने वर्गों के स्वार्थों को सार्वजनिक भलाई के लिये त्याग देने की प्रवृत्ति, समुदाय के प्रति अपने कर्त्तव्य का पूर्णतः निर्वाह करने की भावना होनी चाहिए।

प्रजातंत्र का नागरिक स्वतन्त्र निर्णय वाला होना चाहिए। उसे अन्य व्यक्तियों के व्यक्तिगत हितों का सम्मान करने वाला होना चाहिए और इसलिए अपने मंतव्य के विरोधमूलक मत के प्रति सहिष्णु होना चाहिए। उसे बल प्रयोग की अपेक्षा चर्चा और समझाने-बुझाने की विधियों को प्राथमिकता देनी चाहिए।

गद्यांश 4. Curiosity is the natural tendency of man and bliss his instinctive desire. Both these tendencies are innate and inborn even in a diehard materialist. If they are not sublimated satisfactorily, they became a cause of dis-belief in the man on one hand and on the other hand produce in him a sense of fear, disppointment and depression. This may be called an aberrant state of man.

हिन्दी में अनुवाद—जिज्ञासा मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति है और आनन्द प्राप्ति उसकी स्वाभाविक कामना। घोर से घोर भौतिकवादी मनुष्य में भी ये दोनों प्रवृत्तियाँ स्वाभाविक और जन्मजात हैं। उनका सन्तोषजनक शमन न होने पर मनुष्य में एक ओर तो अनास्था उत्पन्न होती है और दूसरी ओर भय, निराशा और अवसाद। यह मानव की विकृत अवस्था कही जा सकती है।

गद्यांश 5. Almost all the seers, thinkers and intellectuals of the world have accepted the fact that the genius of a man can be fully expressed only through his own language. This state is very disappointing and deplorable for the country. The basic question is not the removal of English nor is English going to be removed. It is also not desirable. What is desirable to adopt the Indian languages and to develop, strengthen and to initiate them as worthy languages of a sovereign country. The question of national language Hindi is also bound up with the Indian Languages.

हिन्दी में अनुवाद—विश्व के प्राय: सभी चिन्तकों, विचारकों एवं मनीषियों ने इस बात को स्वीकार किया है कि मनुष्य की प्रतिभा उसकी भाषा के द्वारा ही पूर्ण रूप से अभिव्यक्त हो सकती है। यह स्थिति देश के लिये बड़ी निराशाजनक एवं चिन्तनीय है। मूल प्रश्न अंग्रेजी को हटाने का नहीं है और न इस देश से अंग्रेजी हटाई ही जाएगी। यह अभीष्ट भी नहीं है। अभीष्ट है भारतीय भाषाओं को अपनाना, उन्हें विकसित, सक्षम तथा प्रभुता-सम्पन्न देश की भाषाओं के रूप में प्रतिष्ठित करना। राष्ट्र-भाषा हिन्दी का प्रश्न भी भारतीय भाषाओं के साथ जुड़ा हुआ है।

गद्यांश 6. Another peculiarity of the modern world is essential unity of all nations of the world. The world is to-day one. Its peace and prosperity are one and indivisible. The great fact of the modern world is the conquest of time which man has achieved One year of his life is equal to ten of his ancestors in point of achievement. But what a cruel irony of fate it is that man with all his power of God has neither peace of spirit nor a security of his life. It appears as if this very power has become his great enemy and destroyer.

हिन्दी में अनुवाद—आधुनिक जगत् की एक विशेषता संसार के सब राष्ट्रों की अनिवार्य एकता भी है। संसार आज एक है। इसकी शान्ति और समृद्धि एक और अविभाज्य है। आधुनिक संसार का महान् गुण है समय पर विजय प्राप्ति और उसे मनुष्य ने प्राप्त कर लिया है। विजय प्राप्ति की दृष्टि से आज के मनुष्य के जीवन का एक वर्ष इसके पूर्वजों के दस वर्ष के बराबर है, लेकिन भाग्य की कितना क्रूर विडम्बना है कि मनुष्य को ईश्वर की इस सम्पूर्ण शक्ति के मिल जाने पर भी उसे आत्मा में न तो शान्ति है और न जीवन की सुरक्षा है। ऐसा लगता है, मानो उसकी यह बड़ी शक्ति ही उसकी घोर शत्रु और विनाशकारी बन गई है।

गद्यांश 7. "Ramdas, the spiritual teacher of Shivaji, was one of the great saints of Maharashtra. There is a pleasant story that Shivaji was at a loss to understand why Ramdas went out daily for beffing, though he had made him wealthy. The next day he placed a deed of gift on the feet of his teacher in which he best-owed his whole empire to him. Ramdas accepted it and appointed Shivaji his representative and ordered him to rule over the empire as the public servant. From the very day, Shivaji began to put on saffron coloured clothes as a mark of respect for his teacher.

हिन्दी में अनुवाद—शिवाजी के आध्यात्मिक गुरु सन्त रामदास महाराष्ट्र के महान् सन्तों में से एक थे। उनके सम्बन्ध में एक सुन्दर कहानी कही जाती है कि शिवाजी नहीं समझ पाते थे कि रामदास क्यों प्रतिदिन अपनी भिक्षावृत्ति के लिये निकल जाया करते थे, जबकि शिवाजी ने उन्हें काफी धनवान बना दिया था। अगले दिन उन्होंने अपने गुरु के चरणों में एक दान-पत्र रख दिया, जिसमें अपने समस्त राज्य का दान कर दिया। रामदास ने इसे स्वीकार कर लिया, शिवाजी को अपना प्रतिनिधि नियुक्त किया और जनता के सेवक के रूप में राज्य का शासन करने की आज्ञा दी। उसी दिन से शिवाजी ने अपने राजगुरु के सम्मान में केशरिया वस्त्र पहनना आरम्भ कर दिया।

गद्यांश 8. India's fundamental unity rests upon her peculiar type of culture. There is no single character or aspect that can be defined as culture. It is expressed through language, literature, religion, philosophy, customs, traditions and architecture. India has achieved cultural unity by fusion of many cultures. She has assimilated the good qualities from all cultures. Various cultural groups live side by side in India. This has made Indian society a multicultural society.

हिन्दी में अनुवाद—भारत की मूल एकता उसकी विशिष्ट प्रकार की संस्कृति पर निर्भर है। संस्कृति को परिभाषित करने के लिए कोई भी एक चरित्र या पहलू नहीं है। यह भाषा, साहित्य, धर्म, दर्शनशास्त्र, रीति-रिवाज, परम्परा एवं वास्तुकला से व्यक्त होता है। भारत ने कई प्रकार की संस्कृतियों के मिलान से सांस्कृतिक एकता प्राप्त की है। उसने सभी संस्कृतियों से अच्छे गुणों को सम्मिलित किया है। भारत में कई सांस्कृतिक समूह साथ-साथ रहते हैं। इसने भारतीय समाज को बहु-सांस्कृतिक समाज बना दिया है।

गद्यांश 9. The Indian civilization has always been based on religious and moral values. Herein lays its unity and strength. Indian culture has remained alive and dynamic because it has always been tolerant of different cultures. It imbibed the good qualities other cultures and constantly upgraded itself. Influence of various cultures has made it rich and vibrant. Significant contributions have been made to it by the Dravidians, Aryans, Greeks, Persians, Arabs, Mughals and Europeans.

हिन्दी में अनुवाद—भारतीय सभ्यता हमेशा से ही धार्मिक एवं नैतिक मूल्यों पर आधारित रही है। इसी में इसकी एकता एवं अखण्डता है। भारतीय संस्कृति जीवित एवं गतिशील रही है, क्योंकि वह विभिन्न संस्कृतियों के प्रति हमेशा से ही उदार रही है। उसने दूसरी संस्कृतियों से अच्छे गुणों को आत्मसात किया है और हमेशा अपने आपको उन्नत बनाया है। दूसरी संस्कृतियों के प्रभाव ने उसे सम्पन्न एवं जीवन्त बनाये रखा है। उसमें बहुत महत्वपूर्ण योगदान द्रविड़ों, आर्यों, यूनानी, पारसी, अरब, मुगल एवं यूरोप से मिले हैं।

गद्यांश 10. The regional dances of India, such as the Bhangra of Punjab, the Dandiya of Gujarat, the Bihu of Assam, etc, project the cultural heritage of those regions. These folk dances are performed by people to express their exhilaration on every possible event or occasion, such as the arrival of seasons, the birth of a child, weddings, festivals, etc. The government of India, as well as other societies and associations, have therefore made all efforts to promote such art forms, which have become an intrinsic part of India's cultural identity.

हिन्दी में अनुवाद—भारत के प्रान्तीय नृत्यों जैसे पंजाब का भांगड़ा, गुजरात का डांडिया, असम का बीहु इत्यादि इनके प्रान्तों के संस्कृतिक विरासत को परियोजित करते हैं। यह लोक नृत्य लोगों द्वारा अपनी जिन्दादिली को हर मुमकिन घटना एवं अवसर जैसे कि ऋतुओं के आगमन पर, बच्चों के जन्म पर, शादियों, त्योहार, इत्यादि को दर्शाने के लिए किया जाता है। भारतीय संस्कार के साथ-साथ दूसरे समाज एवं संघों ने इन कला

...को प्रोत्साहित करने के लिए सभी प्रयास किए हैं, जो भारतीय संस्कृति की पहचान का एक स्वाभाविक रूप बन चुके हैं।

गद्यांश 11. Thousands of people from the Indian diaspora converged in the heart of New York, in their traditional finery, to celebrate India's 71st Independence day. On Aug. 9, the annual India Day Parade was held. The 37th India Day Parade ran through several streets in Madison Avenue in Manhattan. Approximately 38,000 people participated in it. Attending the post-parade grand celebration alongwith a 1,000 guests was an experience. The enthusiastic community displayed its pride in its Indian heritage and its aspirations as Americans.

हिन्दी में अनुवाद—हजारों भारतीय प्रवासी न्यूयार्क के हृदय स्थल पर अपने पारंपरिक परिधान में भारत का इकत्तरवाँ स्वतंत्रता दिवस मनाने एकत्रित हुए। तारीख अगस्त नौ को वार्षिक भारतीय दिवस जुलूस रखा गया था। सैंतीसवाँ भारतीय दिवस जुलूस, मेडिसन अवेन्यू में कुछ सड़कों से होकर निकला। मेनहेटन के अनुमानित 38,000 लोगों ने इसमें हिस्सा लिया। लगभग एक हजार अतिथियों के साथ जुलूस के बाद भव्य उत्सव में सम्मिलित होना एक अनुभव था। अमेरिकी होते हुए भी उत्साहित समूह ने भारतीय विरासत पर अपना गर्व दर्शाया।

गद्यांश 12. Yoga fever gripped China on Sunday ahead of the third International Day of Yoga. Thousands of enthusiasts performed 'asanas'. Several events were organised for the second biggest celebrations of the day in the world after India. Beijing's iconic Great Wall as well as numerous parks, lakes and resorts across China have become venues for the both official and unofficial yoga events being held with active support of the Chinese government.

हिन्दी में अनुवाद—योग के ज्वर ने चाइना को तीसरे अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के पहले ही रविवार को अपने गिरफ्त में ले लिया। हजारों उत्साहितों ने आसन किए। भारत के बाद दुनिया के दूसरे सबसे बड़े उत्सव में कुछ आयोजन रखे गए। चीनी सरकार की मदद से बीजिंग के ऐतिहासिक महान् दीवार के साथ-साथ अनेक बगान, झील एवं सैरगाह पूरे चाईना मे आधिकारिक और अनाधिकारिक स्थल योगा उत्साह के लिए आयोजन स्थल बन गए हैं।

गद्यांश 13. "Indian soldiers were the bravest of the brave. It was an honour to command them," says Major Tom Conway (retd), 98, one of the last surviving British officers who had commanded Indian soldiers. Major Conway was in Amritsar on Sunday for the inaugural ceremony of War Memorial. He had come to India after 80 years. "The state government wanted other officers around as well, but probably, I am the only one surviving," he says. A World War-II veteran, he had commanded the Dogras, Sikhs and Pathans.

हिन्दी में अनुवाद—"भारतीय सैनिक साहसियों से भी साहसी थे। उन्हें आदेश देना एक गर्व की बात थी।" यह कथन रिटायर्ड मेजर टॉम कोनवे का है जो अट्ठानवे वर्ष के हैं,

जो आखिरी ब्रिटिश अफसर है जो आज भी जीवित हैं, जिन्होंने भारतीय सैनिकों को आदेश दिया था। मेजर कोनवे रविवार को अमृतसर में युद्ध शहीद स्मारक के उद्घाटन समारोह में थे। वे भारत अस्सी सालों बाद आए थे। वे कहते है कि, "राज्य सरकार चाहती थी अन्य अफसर भी यहाँ आये, परन्तु मैं ही एक जिन्दा हूँ।" द्वितीय विश्व युद्ध के अनुभवी, उन्होंने डोगरा, सिख एवं पठानों को आदेशित किया था।

गद्यांश 14. Jhumpa Lahiri is an American author of Indian origin. Lahiri's first short story collection won the 2000 Pulitzer Prize for Fiction, and her first novel was adapted into a film. She writes mostly about first-generation Indian American immigrants and their struggle to raise a family in a country very different from theirs. Her stories describe their efforts to keep their children acquainted with Indian culture and traditions. They also describe their efforts to keep them close, even after they have grown up to the Indian tradition of a joint family, in which the parents, their children and the children's families live under the same roof.

हिन्दी में अनुवाद—झुम्पा लहीरी भारतीय मूल की अमेरिकी लेखिका हैं। लहीरी की प्रथम कहानियों के संग्रह ने उन्हें फिक्शन के लिए सन् 2000 का पुलित्जर पुरस्कार दिलाया और उनका पहला उपन्यास चलचित्र के लिए लिया गया। वह अधिकतर प्रथम पीढ़ी के भारतीय प्रवासियों के बारे में लिखती हैं, जो अमेरिका में अपने परिवार की परवरिश के लिए संघर्ष करते हैं, जो उनके देश से बिल्कुल भिन्न हैं। उनकी कहानियों में उन प्रयासों को उल्लेखित करती हैं, जहाँ बच्चों को भारतीय संस्कृति एवं परम्पराओं से परिचित कराया जाता है। वे उन प्रयासों के बारे में भी बताती हैं, जो उन्हें एक दूसरे के बाँधे रखने में लगते हैं जब वे बड़े हो गए हों तो भी संयुक्त परिवार में भारतीय परम्परा अनुसार, जिसमें पालक अपने बच्चों एवं उनके बच्चों के साथ एक ही छत के नीचे रहते हैं।

गद्यांश 15. A House for Mr Biswas is a 1961 novel by V. S. Naipaul, significant as Naipaul's first work to achieve acclaim worldwide. It is the story of Mohun Biswas, an Indo-Trinidadian who continually strives for success and mostly fails. He sets the goal of owning his own house. Taking some elements from the life of his father, Naipaul has portrayed a vanished colonial world. In 1998, the Modern Library ranked A House for Mr Biswas number 72 on its list of the 100 best English-language novels of the 20th century. Time magazine included the novel in its "TIME 100 Best English-language Novels from 1923 to 2005".

हिन्दी में अनुवाद—'डॉ. बिस्वास के लिए घर' वी.एस. नॉयपोल द्वारा 1961 में लिखा गया एक उपन्यास है। यह कथा मोहन बिस्वास की है, जो कि भारतीय मूल का ट्रिनिडेड में रहने वाला है, जो हमेशा सफलता के लिए प्रयास करता है, परन्तु विफल रहता है। वह अपने घर के मालिक बनने का निर्धारण करता है। नॉयपोल अपने पिता के जीवन से कुछ तत्व लेकर गायब हो गए, उपनिवेशक दुनिया के बारे में है। द मार्डन लाइब्रेरी ने 'डॉ. बिस्वास के लिए घर' को बीसवीं सदी के अंग्रेजी भाषा के सौ महान् उपन्यासों में बहत्तरवाँ स्थान दिया।

टाईम मैगजीन ने सन् 1923 से 2005 तक के उसके "टाईम" अंग्रेजी भाषा के सौ बेहतरीन उपन्यासों में इसे स्थान दिया है।

गद्यांश 16. Mauritius is 2,000 km off the southeast coast of Africa. The people of Mauritius are multi-ethnic, multi-religious, multicultural and multilingual. Mauritius is known for its varied flora and fauna. The island is widely known as the only known home of the dodo, which, along with several other species, was made extinct by human activities relatively shortly after the island's settlement. Mauritius is the only country in Africa where Hinduism is the largest religion. The administration uses English as its main language.

हिन्दी में अनुवाद—मॉरीशस अफ्रीकी दक्षिणपूर्वी तक से 2,000 कि.मी. दूरी पर स्थित है। मॉरीशस के लोग बहुजातीय, बहुभाषीय, बहुधार्मिक, बहुसांस्कृतिक हैं। मॉरीशस को उसके भिन्न प्रकार के वनस्पति एवं पशुवर्ग के लिए जाना जाता है। इस द्वीप को मुख्यत: डोडो पक्षी के निवास स्थान के रूप में जाना जाता है, जिसे कुछ और प्रकार के प्राणी जातियों मनुष्य, जब इस द्वीप पर रहने आए, की गतिविधियों द्वारा लुप्त होने की कगार पर लाया गया था। मॉरीशस अफ्रीका का एक मात्र देश है जिसमें हिन्दु धर्म सबसे अधिक प्रचलित है। यहाँ का शासन प्रबन्ध अंग्रेजी भाषा को मुख्यत: प्रयोग में लाता है।

गद्यांश 17. Australian English is a major variety of the English language used throughout Australia. Although English has no official status in the Constitution, Australian English is the country's national and de facto official language as it is the first language of the majority of the population. Australian English began to diverge from British English after the First Settlers arrived in 1788. By 1820, their speech was recognised as being different from British English. Australian English arose from the intermingling of dialects of early settlers and quickly developed into a distinct variety of English.

हिन्दी में अनुवाद—ऑस्ट्रेलियाई अंग्रेजी पूरे ऑस्ट्रेलिया में अंग्रेजी भाषा की प्रमुख विविधता के रूप में बोली जाती है। हालाँकि, अंग्रेजी को संविधान में औपचारिक दर्जा नहीं मिला है, ऑस्ट्रेलियन अंग्रेजी देश की राष्ट्रीय एवं वास्तव में औपचारिक भाषा है, क्योंकि वह बहुमत जनसंख्या की प्रथम भाषा है। ऑस्ट्रेलियाई अंग्रेजी ब्रिटिश अंग्रेजी से प्रथम निवासियों के साथ ही भिन्न होती गयी, जो 1788 में आस्ट्रेलिया आए थे। सन् 1820 तक उनके बोल ब्रिटिश अंग्रेजी से भिन्न पाए गए। ऑस्ट्रेलियाई अंग्रेजी प्रथम निवासियों की आपसी घुली-मिली हुई बोलियों से उभरकर जल्द ही अंग्रेजी के भिन्न प्रकार में बदल गई। ❑

कार्यालयीन वाक्यों एवं पारिभाषिक शब्दावली का अनुवाद

प्रश्न 41. ज्ञान विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों की पारिभाषिक शब्दावली लिखिए।

अथवा

कार्यालयीन वाक्यों की पारिभाषिक शब्दावली लिखिए।

उत्तर- ज्ञान विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों की पारिभाषिक शब्दावली

प्रशासनिक शब्दावली

(A)

Annual	वार्षिक	Annual financial Statement	वार्षिक वित्त विवरण
Annuity	वार्षिकी	Annulment	रद्द करना
Arrest	बन्दी बनाना, गिरफ्तार करना	Award	पंचाज्ञा, पुरस्कार देना
Article	अनुच्छेद	Autonomy	स्वायत्तता
Assemble	सम्मिलित होना	Autonomous	स्वायत्तशासी
Assembly	सभा	Authority	प्राधिकारी, अधिकार
Assent	अनुमति	Authorize	प्राधिकृत
Assessment	तीव्र, निर्धारण	Authentication	प्रमापीकरण
Assignment	उत्तरदायित्व	Auditor General	महालेखा परीक्षक
Association	संस्था	Audit	गणना परीक्षा
Assurance of property	सम्पत्ति हस्तांतरण पत्र	Attorney	महान्यायवादी
		Attach	टाँच, कुर्की
		Appointment	नियुक्ति
As the case may be	यथा प्रसंग, यथास्थिति	Administrator	प्रशासक

(B)

Bill	विधेयक	Bill of langing	वहन पत्र
Body	निकाय	Boundary	सीमा
Bail	जामिन	Bye-law	उपविधि
Broadcasting	प्रसारण	Ballot	गूढ़ पत्र, शलाका पद्धति
Borrowing	उधार लेना		
Banking	महाजनी	Bye election	उपनिर्वाचन
Bankruptcy	दिवाला	Bone vacancia	स्वामीहीनत्व
Body corporate	निगम निकाय	Body governing	शासी निकाय
Bill of indemnity	क्षतिपूर्ति बिल परिहार विधेयक	Bar	रुकावट
		Bill of exchange	विनिमय पत्र

(C)

Conscience	अन्तःकरण	Consent	सम्मति
Consumption	उपभोग	Consent Previous	पूर्व सम्मति
Construe	अर्थ करना	Consequenial	आनुषंगिक
Consultation	परामर्श	Consideration	विचार

Consul	वाणिज्य दूत
Constitution	संविधान
Constituency Assembly	संविधान सभा
Dissent	विमति
District Board	जिला मण्डली
Disqualify	अनहर्रीकरण
Divorce	विवाह-विच्छेद
Duty succession	उत्तराधिकार शुल्क
Domicile	अधिवास
During good behaviour	सदाचार पर्यन्त
Duty-Stamp	मुद्रांक शुल्क
Duty Import	आयात शुल्क
Debentures	ऋणपत्र
Debit	विकलन
Debit	ऋण
Decision	विनिश्चय, फैसला
Declaration	घोषणा
Decree	डिक्री, आज्ञाप्ति
Enact	अधिनियम
Escheat	राजगामी
Equality	समता
Expenditure	व्यय
Executive	कार्यपालिका
Evidence	साक्ष्य
Extra territorial operations	राज्य क्षेत्रातीत प्रवर्तन
Extradition	प्रत्यर्पण
External	वैदेशिक कार्य
Election	निर्वाचन
Commissioner	आयुक्त
Election Direct	प्रत्यक्ष चुनाव
Election, General	साधारण निर्वाचन
Election, Indirect	परोक्ष निर्वाचन
Election-tribunal	निर्वाचन अधिकरण
Consolidated fund	संचित निधि
Constituency	निर्वाचन क्षेत्र
Constituency territorial	प्रादेशिक निर्वाचन क्षेत्र

(D)

Dissolution	विघटन
Distribution	विभाजन, वितरण
Decent	उद्भव
Dealing	लेन-देन, व्यवहार
Duty	कर्त्तव्य शुल्क
Dullness	नीरसता, मन्दबुद्धिता
Demand	अभियाचना माँग
District fund	जिला निधि
Duty, Export	निर्यात शुल्क
Duty, Excise	उत्पादन शुल्क
Duty, Estate	सम्पत्ति शुल्क
Duty, Death	मरण शुल्क
Duty, custom	सीमा शुल्क
During the pleasure of the president	राष्ट्रपति प्रसाद प्रसन्नता पर्यन्त

(E)

Enterprise	उद्यम
Estates	सम्पदा
Exempt	मुक्त
Explosives	विस्फोटक
Estimates	प्राक्कलन
Ex-officio	पदेन
Education	शिक्षा
Efficiency of administration	प्रशासन कार्यक्षमता
Elect	निर्वाचन
Executive power	कार्यपालिका शक्ति (अधिकार)
Exclusive jurisdiction	अनन्य क्षेत्राधिकार
Exclusion	अपवर्जन
Exclude	अपवर्जन करना
Excess profit	अतिरिक्त लाभ

Foreign affairs	विदेशी कार्य
Forbid	निषेध
Freights	वस्तु भाड़ा
Frontiers	सीमान्त
Function Administrative	प्रशासकीय कृत्य
Function	कृत्य
For the time being	फिलहाल
Form	फार्म, प्रपत्र
Forbidden	निषिद्ध
Fishery	मलय पण्य, मत्स्य क्षेत्र

Grant	अनुदान
Governor	राज्यपाल
Guidance	मार्गदर्शन
Guardian	संरक्षक
Guarantee	प्रत्याभूति
Gratuity	उपदान
Grant-in-aid	सहायक अनुदान

Honorarium	मानदेय
Habeas corpus	बन्दी प्रत्यक्षीकरण
Handicrafts	दस्तकारी, हस्तशिल्प
Hazardous	संकटमय

Inquiry	जाँच परिप्रश्न
Influence	प्रभाव
Invalid	अमान्य
Injury	क्षति, चोट
Initiate	उपक्रमण
Illegal	अवैध
Illegal practice	अवैध कर्म
Immunity	उन्मुक्ति
Investigation	अनुसन्धान
Invalidity pensions	असमर्थता विकृति वेतन

(F)

Formulated	सूत्रित
Foreign exchange	विदेशी विनिमय
Future market	वायदा बाजार
Fund sinking	निक्षेप निधि
Fare	किराया-भाड़ा
Federal court	फेडरल न्यायालय
Finance bill	वित्त विधेयक
Finance Commission	वित्त आयोग
Financial obligation	वित्तीय भार
Finance Statement	वित्तीय विवरण।

(G)

Governance	शासन
Government of India	भारत सरकार
Gambling	जुआ, द्यूत
Gazette	सूचना पत्र
General Election	साधारण निर्वाचन
Govern	शासन करना
Government of State	राज्य सरकार।

(H)

House or people	लोकसभा
House	सदन
High Court	उच्च न्यायालय

(I)

Inspection	पर्यवेक्षण
Infants	शिशु
Intercourse	समागम
Inland waterways	अन्तर्देशीय जलपथ
Issue	वाद, पद
Irregularity	अनियमित
Involved	अन्तर्ग्रस्त
Impeachment	महाभियोग
Implementing	परिपालन
Impose	लगाना, आरोपण
Introduce	पुन: स्थापन

(J)

Judicial power	न्यायिक अधिकार
Joining Mgt.	अतिरिक्त न्यायाधीश
Judge Extra	योगकाल
Joint family	अविभक्त परिवार
Judge Additional	अपर न्यायाधीश
Judgement	निर्णय
Judiciary	न्यायपालिका
Justice chief	मुख्य न्यायाधीश
Jurisdiction	क्षेत्राधिकार
Judicial stamp	न्यायिक मुद्रांक
Judicial proceeding	न्यायिक कार्यवाही, अदालती कार्यवाही

(L)

Levy	उगाहना, आरोपण, उद्ग्रहण
List Union	संघ सूची
Law of nations	राष्ट्रों की विधि
Local Self Government	स्थानीय स्वशासन
Lunacy	उन्माद
Lower house	प्रथम सदन
Lock up	बन्दी खाना
Libel	अपमान लेख
Local area	स्थानीय क्षेत्र
Liberty	स्वाधीनता
Lunatic	उन्मत्त
Labour union	श्रमिक संघ
Land records	भू-अभिलेख
Land revenue	भू-राजस्व
Land tenures	भू-धृति

(M)

Minor	अवयस्क
Misbehaviour	कदाचार
Mineral resources	खनिज सम्पत्
Mental weakness	मनोदौर्बल्य
Municipal tramways	नगर ट्राम्वे, नगर स्थान
Municipal corporation	नगर निगम
Minority	अल्पसंख्यक वर्ग
Mind unsound	विकृतिचित
Migration	प्रव्रजन
Morality	सदाचार
Memorial	स्मारक
Merchandise marine	वणिक-पोत
Maintenance	पोषण
Major	वयस्क

(N)

Navigation	नौ परिवहन
Naval	नौ सेना सम्बन्धी
National highways	राष्ट्रीय राजपथ
Naturalization	देशीयकरण
Newspaper	समाचार-पत्र
Notification	अधिसूचना
Notice in writing	लिखित सूचना
Nominate	नाम निर्देश, मनोनीत करना

(O)

Opinion	राय, अभिप्राय
Official residence	पदावास
Obligation	आभार
Occupation	धन्धा, उपजीविका
Order in council	परिषद् आदेश
Order Standing	स्थायी आदेश
Owner	स्वामी
Organization	संगठन
Ordinance	अध्यादेश

Permission	अनुज्ञा
Penalty	शास्ति
Piracy	जल दस्युता
Port quarantine	पतन निरोधा
Policy of insurance	बीमापत्र
Police Force	आरक्षक बल
Police	आरक्षक
Pecuniary	आर्थिक
Jurisdiction	क्षेत्राधिकार
Perpetual succession	शाश्वत उत्तराधिकार
Perquisite	परिलब्धि

(P)

Proclamation	उद्घोषणा
Personal law	स्वीयविध
Pension	निवृत्ति वेतन
Patents	एकस्व
Parliament	संसद
Partnership	भागिता
Pass	पारण
Plead	वकालत करना
Public notification	सार्वजनिक अधि-सूचना
Public health	लोक स्वास्थ्य

(Q)

Question of law	विधिपत्र
Quo warranto	अधिकार पृच्छा
Quorum	गणपूर्ति

(R)

Remuneration	पारिश्रमिक
Repugnancy	विरोध
Representation	प्रतिनिधित्व
Relexancy	सुसंगति
Remission	परिहार

(S)

Speaker	अध्यक्ष
Succession	उत्तराधिकार
Summon	आह्वान
State funds	राज्यनिधि
Subordinate Officer	अधीन अधिकारी
Stamp duties	मुद्रांक शुल्क
Staff	कर्मचारी-वृन्द
Sue	मुकदमा चलाना
Stock exchange	श्रेष्ठि चत्वर
Social custom	सामाजिक रूढ़ि
Sovereign	प्रभु
Suspend	निलम्बन

(T)

Tolls	पथकर
Trade union	कार्मिक संघ
Transition	संक्रमण मार्ग में
Territorial charges	प्रादेशिक भार
Tax callings	आजीविका-कर
Triennial	त्रैवार्षिक
Tribunal	न्यायाधिकरण
Territory	राज्यक्षेत्र
Term	निबन्धन
Tenure	पदावधि
Transportation	निर्वासन
Tax Income	आयकर
Tax capitation	प्रतिव्यक्ति-कर
Tax profession	वृत्तिकर

(U)

Union	संघ	Unity	एकता
Undischarged	अनमुक्त	Unsoundness of mind	चित्त विकृति
Unemployment	बेकारी		

(V)

Visas	वीसा, ट्रप्टांक	Village council	ग्राम परिषद्
Vote-casting	निर्णायक मत	Violation	अतिक्रमण
Vacancy	रिक्तता, रिक्ति	Votes of credit	प्रत्ययानुदान
Vargrancy	आवारागर्दी, आर्हिडन	Votes on account	गणनानुदान
Validity	मान्यता	Vocation	व्यवसाय
Vice President	उपराष्ट्रपति		

(W)

Warrant	अधिपत्र	Winding up	समासन
Wage	मजदूरी	Write	लेखे
Living wage	निर्वाह-मजदूरी	Will	इच्छा-पत्र, वसीयत

मानविकी विषयक पारिभाषिक शब्दावली

Aboriginal Welfare Officer	= आदिवासी कल्याण अधिकारी
Additional Director General	= अपर महानिदेशक
Additional Secretary	= अपर सचिव
Administrative Officer	= प्रशासन अधिकारी
Commonwealth Secretary	= राष्ट्रमण्डल सचिव
Complaint Officer	= शिकायत अधिकारी
Liquidation Inspector	= समझौता निरीक्षक
Litigation Officer	= मुकदमा अधिकारी
Maintenance Superintendent	= अनुरक्षण अधिकारी
Oath Commissioner	= शपथ आयुक्त
Octroi Inspector	= चुँगी निरीक्षक
Personal Assistant	= वैयक्तिक सहायक
Personnel Officer	= कार्मिक अधिकारी
Probationer	= परिवीक्षाधीन
Pro-chancellor	= समकुलाधिपति
Secretary General	= महासचिव
Tracer	= अनुरेखक
Trustee	= न्यासी/ट्रस्टी
Wireless Operator	= बेतार प्रचालक
Under Secretary	= अपर सचिव
Transportation Inspector	= परिवहन निरीक्षक
Yard Supervisor	= यार्ड सुपरवाइजर

विज्ञान विषयक पारिभाषिक शब्दावली

Acid Sensitive	= अम्ल संवेदी
Active immunity	= सक्रिय रोध क्षमता
Anesthesia	= संवेदना हरण
Basiscopic	= तलोन्मुख
Bio-deration	= जैव समीकरण
Chemomorphosis	= रसायन रूपांतर
Colour breaking	= वर्ण-विभंग
Dikary one	= केन्द्रक युग्म
Dimidiate	= अर्द्धावृत्त
Excipulum	= आशय
Extranuclear	= केन्द्रक बाह्य
Fibrillose	= तंतुकी
Fibrilla	= तंतुक
Ghost Particle	= 'भूत' कण
Giant Cell	= महाकोशिका
Heat Denatured	= उष्मविकृत
Hypnospore	= सुप्त बीजाणु
Interference	= बाधा
Laboratory Ware	= प्रयोगशाला पात्र
Lacrimal formen	= अश्रु रंध्र

वाणिज्य विषयक पारिभाषिक शब्दावली

Accountant	= लेखाकार
Accountant General	= महालेखाकार
Account Department	= लेखा विभाग
Accounts clerk	= लेखा लिपिक
Accounts Officer	= लेखा अधिकारी
Bill Clerk	= बिल क्लर्क
Baggage Inspector	= सामान निरीक्षक
Bibiographer	= संदर्भ सूचीकार
Binder	= जिल्दसाज
Booking Clerk	= टिकट बाबू
Calculator	= गणक
Cashier	= रोकड़िया
Caretaker	= रखवाला
Chartered Accountant	= सनदी (चार्टर्ड) लेखाकार
Chief Controller of Accounts	= मुख्य लेखा नियंत्रक

लघुउत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. **अनुवाद का अर्थ एवं परिभाषा लिखिए।**
उत्तर- इसके लिए प्रश्न क्रमांक 1 का उत्तर पढ़ें।

प्रश्न 2. **अनुवाद का स्वरूप बताइए।**
उत्तर- इसके लिए प्रश्न क्रमांक 1 का उत्तर पढ़ें।

प्रश्न 3. **अनुवाद का महत्व लिखिए।**
उत्तर- इसके लिए प्रश्न क्रमांक 2 का उत्तर पढ़ें।

प्रश्न 4. **शब्दानुवाद से आप क्या समझते हैं?**
उत्तर- इसके लिए प्रश्न क्रमांक 3 का उत्तर पढ़ें।

प्रश्न 5. **भावानुवाद पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।**
उत्तर- इसके लिए प्रश्न क्रमांक 3 का उत्तर पढ़ें।

प्रश्न 6. **आशु अनुवाद को संक्षिप्त में समझाइए।**
उत्तर- इसके लिए प्रश्न क्रमांक 4 का उत्तर पढ़ें।

प्रश्न 7. **द्विभाषी प्रविधि क्या है? स्पष्ट कीजिए।**
उत्तर- इसके लिए प्रश्न क्रमांक 5 का उत्तर पढ़ें।

प्रश्न 8. **एक अच्छे अनुवादक के प्रमुख गुण बताइए।**
उत्तर- इसके लिए प्रश्न क्रमांक 6 का उत्तर पढ़ें।

प्रश्न 9. **अच्छे अनुवाद की पाँच विशेषताएँ लिखिए।**
उत्तर- इसके लिए प्रश्न क्रमांक 7 का उत्तर पढ़ें।

प्रश्न 10. **अनुवाद के क्षेत्र बताइए।**
उत्तर- इसके लिए प्रश्न क्रमांक 8 का उत्तर पढ़ें।

प्रश्न 11. **अनुवाद में रोजगार की क्या सम्भावना है?**
उत्तर- इसके लिए प्रश्न क्रमांक 9 का उत्तर पढ़ें।

प्रश्न 12. **अनुवाद की प्रक्रिया संक्षिप्त में लिखिए।**
उत्तर- इसके लिए प्रश्न क्रमांक 10 का उत्तर पढ़ें।

प्रश्न 13. **स्त्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा के अर्थान्तरण की प्रक्रिया समझाइए।**
उत्तर- इसके लिए प्रश्न क्रमांक 11 का उत्तर पढ़ें।

प्रश्न 14. **अनुदित पाठ का पुनर्गठन समझाइए।**
उत्तर- इसके लिए प्रश्न क्रमांक 12 का उत्तर पढ़ें।

प्रश्न 15. **एकभाषी शब्दकोश से आप क्या समझते हैं?**
उत्तर- इसके लिए प्रश्न क्रमांक 14 का उत्तर पढ़ें।

प्रश्न 16. **द्विभाषी शब्दकोश पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।**
उत्तर- इसके लिए प्रश्न क्रमांक 14 का उत्तर पढ़ें।

प्रश्न 17. **'थिसॉरस' क्या है? स्पष्ट कीजिए।**
उत्तर- इसके लिए प्रश्न क्रमांक 15 का उत्तर पढ़ें।

प्रश्न 18. **पारिभाषिक कोश को समझाइए।**
उत्तर- इसके लिए प्रश्न क्रमांक 16 का उत्तर पढ़ें।

प्रश्न 19. विश्वकोश से आप क्या समझते हैं?
उत्तर- इसके लिए प्रश्न क्रमांक 17 का उत्तर पढ़ें।
प्रश्न 20. कम्प्यूटर पर अनुवाद कैसा होता है?
उत्तर- इसके लिए प्रश्न क्रमांक 18 का उत्तर पढ़ें।
प्रश्न 21. कार्यालयीन अनुवाद पर टिप्पणी लिखिए।
उत्तर- इसके लिए प्रश्न क्रमांक 20 का उत्तर पढ़ें।
प्रश्न 22. कार्यालयीन अनुवाद की प्रमुख समस्याएँ बताइए।
उत्तर- इसके लिए प्रश्न क्रमांक 20 का उत्तर पढ़ें।
प्रश्न 23. वाणिज्यिक अनुवाद से क्या तात्पर्य है?
उत्तर- इसके लिए प्रश्न क्रमांक 21 का उत्तर पढ़ें।
प्रश्न 24. वाणिज्यिक अनुवाद की समस्या एवं समाधान बताइए।
उत्तर- इसके लिए प्रश्न क्रमांक 22 का उत्तर पढ़ें।
प्रश्न 25. वैज्ञानिक एवं तकनीकी अनुवाद का अर्थ बताइए।
उत्तर- इसके लिए प्रश्न क्रमांक 23 का उत्तर पढ़ें।
प्रश्न 26. वैज्ञानिक एवं तकनीकी अनुवाद का क्षेत्र लिखिए।
उत्तर- इसके लिए प्रश्न क्रमांक 24 का उत्तर पढ़ें।
प्रश्न 27. वैज्ञानिक एवं तकनीकी अनुवाद की प्रमुख समस्याएँ लिखिए।
उत्तर- इसके लिए प्रश्न क्रमांक 28 का उत्तर पढ़ें।
प्रश्न 28. जनसंचार माध्यम के अनुवाद पर टिप्पणी लिखिए।
उत्तर- इसके लिए प्रश्न क्रमांक 31 का उत्तर पढ़ें।
प्रश्न 29. जनसंचार माध्यमों में अनुवाद की किन्हीं तीन समस्याओं का उल्लेख कीजिए।
उत्तर- इसके लिए प्रश्न क्रमांक 32 का उत्तर पढ़ें।
प्रश्न 30. विज्ञापन के अनुवाद का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
उत्तर- इसके लिए प्रश्न क्रमांक 33 का उत्तर पढ़ें।
प्रश्न 31. विज्ञापन में अनुवाद की क्या समस्याएँ हैं? कोई दो समस्या लिखिए।
उत्तर- इसके लिए प्रश्न क्रमांक 33 का उत्तर पढ़ें।
प्रश्न 32. अनुवादक अनुवाद का सम्पादन कैसे करता है?
उत्तर- इसके लिए प्रश्न क्रमांक 34 का उत्तर पढ़ें।
प्रश्न 33. अनुवाद मूल्यांकन की दो विधियाँ लिखिए।
उत्तर- इसके लिए प्रश्न क्रमांक 35 का उत्तर पढ़ें।
प्रश्न 34. अनुवाद मूल्यांकन के दो आधारों को समझाइए।
उत्तर- इसके लिए प्रश्न क्रमांक 36 का उत्तर पढ़ें।
प्रश्न 35. अनुवाद समीक्षा के प्रमुख उद्देश्य लिखिए।
उत्तर- इसके लिए प्रश्न क्रमांक 38 का उत्तर पढ़ें।
प्रश्न 36. अनुवाद समीक्षा के सोपान बताइए।
उत्तर- इसके लिए प्रश्न क्रमांक 38 का उत्तर पढ़ें। ❑

वस्तुनिष्ठ प्रश्न (उत्तर सहित)

अनुवाद का मूल अर्थ क्या है-
(अ) पुनःकथन (ब) अनुवर्तिता
(स) अनुवाद (द) अनुवचन। उत्तर-(अ)

1. 'शब्दार्थ चिंतामणि' कोश के अनुसार अनुवाद का अर्थ क्या है-
(अ) अन्वेको वदति यद्यादाति (ब) अधिः पंचमयर्थानुवादी
(स) ज्ञानार्थस्य प्रतिपादने (द) रोचनादधि। उत्तर-(स)

2. अनुवाद विज्ञान किसकी रचना है-
(अ) भोलानाथ तिवारी (ब) विश्वनाथ अय्यर
(स) जी. गोपीनाथन (द) डॉ. लोकेश बाली। उत्तर-(अ)

3. अनुवाद के कितने प्रकार होते हैं-
(अ) दो (ब) तीन
(स) चार (द) कई। उत्तर-(द)

4. भोलानाथ तिवारी के अनुसार अनुवाद है-
(अ) कला (ब) शिल्प
(स) विज्ञान (द) उपर्युक्त सभी। उत्तर-(द)

5. अनुवादक के लिए क्या अनिवार्यता नहीं है-
(अ) कॉलेज की डिग्री (ब) व्यापक अध्ययन
(स) विस्तृत शब्द भण्डार (द) व्याकरण ज्ञान। उत्तर-(अ)

6. अनुवादक की अभिव्यक्ति क्षमता किस पर निर्भर करती है-
(अ) दिव्य दृष्टि (ब) मानसिक विकास
(स) शारीरिक सुदृढ़ता (द) वाक्चातुर्य। उत्तर-(ब)

7. अनुवादक को किसका पूरा ज्ञान होना आवश्यक है-
(अ) अनुवादेय तथ्यों की भाषा (ब) अनुवादित भाषा
(स) उपर्युक्त दोनों भाषाएँ (द) अन्य भाषाएँ। उत्तर-(स)

8. भाषा के व्याकरण सम्बन्धी ज्ञान से अनुवाद को क्या सहयोग प्राप्त होता है ?
(अ) वाक्य विन्यास दोष रहित होते हैं (ब) भाषा लचीली होती है
(स) भाषा साहित्यिक पुट लिए होती है (द) भाषा चटपटी होती है। उत्तर-(अ)

9. शैली की अनभिज्ञता अनुवाद को-
(अ) सुरुचिपूर्ण बनाती है (ब) सौन्दर्य प्रतिरूप बनाती है
(स) कुरूप बनाती है (द) सुन्दर बनाती है। उत्तर-(स)

10. किसी तथ्य का अन्य भाषा में अनुवाद करते समय स्तर का मापन-
(अ) अनिवार्य है (ब) अर्थहीन है
(स) प्रभावहीन है (द) गौण है। उत्तर-(अ)

11. अनुवाद करते समय मूल रचना में-
(अ) कटौती की जा सकती है (ब) बढ़ोत्तरी की जा सकती है
(स) कटौती व बढ़ोत्तरी की जा सकती है
(द) कटौती व बढ़ोत्तरी नहीं की जा सकती है। उत्तर-(द)

13. अनुवाद एक-
(अ) शास्त्र है (ब) कला है
(स) विज्ञान है (द) इनमें से कोई नहीं। उत्तर-(ब)

14. अनुवाद में वर्जित है-
(अ) अप्रचलित शब्द (ब) अव्यावहारिक शब्द
(स) उपरोक्त दोनों (द) उपरोक्त में से कोई नहीं।
उत्तर-(स)

15. मुहावरों व लोकोक्तियों का अनुवाद होना चाहिए-
(अ) शब्दानुसार (ब) भावार्थ के अनुसार
(स) दोनों के अनुसार (द) इनमें से कोई नहीं। उत्तर-(ब)

16. भोलानाथ तिवारी के अनुसार अनुवाद प्रक्रिया के कितने चरण हैं-
(अ) दो (ब) तीन
(स) चार (द) पाँच। उत्तर-(द)

17. अनुवादक को स्त्रोत और लक्ष्य भाषा में यदि आर्थिक और शाब्दिक दोनों ही दृष्टियों से समान मुहावरे न मिले तो क्या करना चाहिए-
(अ) केवल शाब्दिक समानता पर ध्यान देना चाहिए
(ब) केवल आर्थिक समानता पर ध्यान देना चाहिए
(स) शाब्दिक समानता को छोड़कर आर्थिक समानता पर ध्यान देना चाहिए
(द) अर्थ की दृष्टि से सामान तथा शब्द की दृष्टि से लगभग समान मुहावरों की खोज करनी चाहिए। उत्तर-(द)

18. लक्ष्य भाषा का अंग्रेजी शब्द क्या है-
(अ) Target Language (ब) Source Language
(स) Content (द) Translation। उत्तर-(अ)

19. कम्प्यूटर के आधार पर अनुवाद करने वाला यंत्र बनाने का कार्य किसने प्रारम्भ किया-
(अ) डॉ. ए. डी. बूथ (ब) बार-हिलेल
(स) ओसवाल्ड (द) फ्लेचर। उत्तर-(अ)

20. 'स्वयंचालित यंत्र द्वारा अच्छे अनुवाद का किया जाना असम्भव है।'- यह किसने कहा-
(अ) डॉ. ए.डी. बूथ (ब) बार-हिलेल
(स) ओसवाल्ड (द) फ्लेचर। उत्तर-(ब)

21. कार्यालय अनुवाद के लिए प्रयुक्त हिन्दी शब्द क्या है-
(अ) आपका (ब) विश्वास के साथ
(स) भवदीय (द) आपका ही। उत्तर-(स)

22. कार्यालय अनुवाद करते समय ध्यान दे वाली बात कौन-सी है-
(अ) कार्यालयी भाषा पूरी तरह एकार्थी होनी चाहिए
(ब) कार्यालयी भाषा एकाधिकार्थी होनी चाहिए
(स) शब्द-प्रति-शब्द अनुवाद करना चाहिए
(द) कोष के जरिए अनुवाद करनी चाहिए। उत्तर-(अ)

23. किस विधा के अनुवाद करते समय मूल और अनुवाद में काफी अन्तर पड़ जाता है-
(अ) नाटक का अनुवाद (ब) सूचना साहित्य का अनुवाद
(स) वैज्ञानिक साहित्य का अनुवाद (द) कार्यानुवाद। उत्तर-(द)

24. भोलानाथ तिवारी के अनुसार नाटक का अनुवाद कितने प्रकार के होते हैं-
(अ) 2 (ब) 3 उत्तर (अ)
(स) 4 (द) 5।

25. नाटक के अनुवाद के लिए अनुवादक को सबसे आवश्यक शर्त क्या है-
(अ) अनुवादक को रंगमंच का ज्ञान होना चाहिए
(ब) अनुवादक अपने अनुवाद को मात्र पठनीय बनाना चाहिए
(स) अनुवाद गद्य में करना चाहिए
(द) संवाद मुहावरे या लोकोक्तियों से युक्त नहीं होनी चाहिए। उत्तर-(अ)

26. भोलानाथ तिवारी ने किस अनुवाद को पूर्ण अनुवाद कहा है-
(अ) काव्यानुवाद (ब) कार्यालयी अनुवाद
(स) वैज्ञानिक साहित्यिक का अनुवाद (द) कथानुवाद। उत्तर-(स)

27. संकेत के प्रतीक के स्थान पर भाषा के प्रतीकों का प्रयोग करना किस प्रकार का अनुवाद है-
(अ) भाषान्तर (ब) शब्दांतर
(स) माध्यमांतर (द) भाषानुवाद। उत्तर-(स)

28. समाज में सामान्य व्यवहार विषय के बातों की अभिव्यक्ति के लिए सामान्य रूप से प्रयुक्त शब्द को क्या कहते हैं-
(अ) सामान्य शब्द (ब) पारिभाषिक शब्द
(स) वैज्ञानिक शब्द (द) कार्यालयी शब्द। उत्तर-(अ)

29. ऐसे शब्दों का नाम बताइए जो सामान्य व्यवहार की भाषा के शब्द न होकर ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों के होते हैं-
(अ) सामान्य शब्द (ब) पारिभाषिक शब्द
(स) कार्यालय शब्द (द) साहित्यिक शब्द। उत्तर-(ब)

30. पारिभाषिक शब्दों को किसके आधार पर संकल्पना बोधक पारिभाषिक शब्द और वस्तुबोधक पारिभाषिक शब्द ऐसे दो वर्ग बनाए गए हैं-
(अ) इतिहास के आधार पर (ब) प्रयोग के आधार पर
(स) सूक्ष्मता-स्थूलता के आधार पर (द) स्त्रोत के आधार पर। उत्तर-(स)

31. पारिभाषिक तथा सामान्य दोनों अर्थों में प्रयुक्त शब्दों को क्या कहते हैं-
(अ) पारिभाषिक शब्द (ब) पूर्ण पारिभाषिक शब्द
(स) अर्धपारिभाषिक शब्द (ब) सामान्य शब्द। उत्तर-(स)

32. पारिभाषिक शब्द की एक विशेषता यों हैं, ...-
(अ) पारिभाषिक शब्द का अर्थ सुनिर्धारित होता है
(ब) पारिभाषिक शब्द का अर्थ सुनिर्धारित नहीं होता है
(स) सामान्य व्यवहार विषयक अभिव्यक्ति के लिए होता है
(द) सामान्य व्यवहार विषयक अभिव्यक्ति के लिए नहीं होता है। उत्तर-(अ)

33. Assembly का पारिभाषिक अर्थ क्या है-
(अ) सभा (ब) विधान सभा
(स) विधान परिषद् (द) लोक सभा। उत्तर-(अ)

34. Association का पारिभाषिक अर्थ है-
(अ) संघ (ब) सभा
(स) संगठन (द) संस्था। उत्तर-(द)

35. Agent का पारिभाषिक अर्थ क्या है-
(अ) प्रतिनिधि (ब) अभिकर्ता
(स) अधिकृत (द) अभिव्यक्ति। उत्तर-(ब)

36. Bye-law का पारिभाषिक शब्द क्या है-
(अ) विधिसम्मत (ब) विधिसंगत
(स) विधि द्वारा (द) उप-विधि। उत्तर-(द)

37. Duty Stamp का पारिभाषिक शब्द क्या है-
(अ) कर्तव्य पालन (ब) कर्तव्य कार्य
(स) मुद्रांक शुल्क (द) मुद्रांक मोहर। उत्तर-(स)

38. Extradition क्या है-
(अ) अतिरिक्त देय (ब) अतिरिक्त कार्य
(स) प्रत्यर्पण (द) अतिरिक्त प्रत्यर्पण। उत्तर-(स)

39. For the time being का पारिभाषिक शब्द क्या है-
(अ) समयानुकूल (ब) फिलहाल
(स) समय के अनुसार (द) समय के लिए। उत्तर-(ब)

40. Honorarium का पारिभाषिक शब्द क्या है-
(अ) मानदेय (ब) प्रतिष्ठित
(स) सम्मानजनक (द) सम्मानसूचक। उत्तर-(अ)

41. Invalidity Pension क्या है-
(अ) अवैधानिक पेंशन (ब) अवैधानिक वेतन
(स) असमर्थता निवृत्ति पेंशन (द) गैर-कानूनी वेतन। उत्तर-(स)

42. Additional Judge का पारिभाषिक शब्द क्या है-
(अ) अतिरिक्त न्यायाधीश (ब) अतिरिक्त न्यायाधिकारी
(स) अपर न्यायाधिकारी (द) अमर न्यायाधीश। उत्तर-(द)

43. Levy का कौन-सा पारिभाषिक अर्थ नहीं है-
(अ) उगाहना (ब) आरोपण
(स) प्रत्यारोपण (द) उद्ग्रहण। उत्तर-(स)

44. Minor का कौन-सा पारिभाषिक अर्थ सही नहीं है-
(अ) अवयस्क (ब) नाबालिग
(स) मामूली (द) अल्पायु। उत्तर-(स) ❑

नोट : पुस्तक के लेखन कार्य में पूर्णतः सावधानी बरती गई है, फिर भी किसी त्रुटि के लिए लेखक एवं प्रकाशक जिम्मेदार नहीं होंगे। न्यायिक क्षेत्र इन्दौर रहेगा।